राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

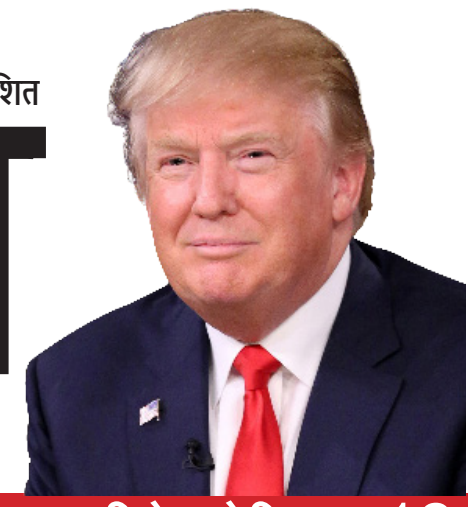

11 बुमराह के 200 टेस्ट विकेट पूरे ...

ट्रंप बोले- 'एच-1बी' वीजा पर है विश्वास, विरोध को किया ... 12

वर्ष : 15 | अंक : 254 | नई दिल्ली, सोमवार, 30 दिसंबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 21°C

न्यूनतम तापमान 30.0°C

हां 30%
नहीं 50%
कह नहीं सकते 10%

बाजार

सोना 79,005

चांदी 92,500

सेंसेक्स 81,786

निफ्टी 24,668

अभियान 'एक पेड़ माँ के नाम' वन एवं जलवायु मंत्रालय की ओर से बड़ी सौगात रहा 2024 में

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तत्वावधान में 'एक पेड़ माँ के नाम' के उद्घोष के साथ देश भर में चलाया गया वृक्षारोपण अभियान मंत्रालय की ओर से देश को वर्ष 2024 की एक बड़ी सौगात रही। पर्यावरण संरक्षण और कार्बन अवशोषण में वृक्षों की महती उपयोगिता के मद्देनजर इस अभियान को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पूरा प्रोत्साहन मिला। मंत्रालय के अनुसार इस अभियान के तहत देश में अभी तक 102 करोड पेड़ लगाने की उपलब्धि हासिल हुई है और मार्च 2025 तक इसका लक्ष्य 140 करोड़ रखा गया है। श्री मोदी ने गत 05 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर इस अभियान का उद्घाटन किया और लोगों को अपनी माँ के प्रति प्रेम, आदर और सम्मान के प्रतीक के रूप में एक पेड़ लगाने का आह्वान किया। इस अभियान के अंतर्गत पेड़ों और धरती माँ की रक्षा करने का संकल्प भी लिया जाता है। मंत्रालय ने समाप्त हो रहे इस वर्ष के दौरान 26 सितंबर को 'लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट' (लाइफ) के अनुरूप, इको-मार्क नियमावली अधिसूचित की है। यह 1991 की इको-मार्क योजना के स्थान पर है। यह योजना 'लाइफ' के सिद्धांतों के अनुरूप पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों की मांग को प्रोत्साहित करेगी, ऊर्जा की कम खपत, संसाधन दक्षता और सर्कुलर अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देगी। इस योजना का उद्देश्य सटीक लेबलिंग सुनिश्चित करना और उत्पादों के बारे में भ्रामक जानकारी को रोकना है। देश की जलवायु के अनुकूल कार्रवाई उसके अद्यतन राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी)

और 2070 तक नेट जीरो तक पहुंचने की दीर्घकालिक रणनीति द्वारा निर्देशित है और यह अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में फैली हुई है। वैश्विक जीएचजी उत्सर्जन में मामूली योगदान के बावजूद भारत ने जलवायु परिवर्तन के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में सबसे आगे रहने की अपनी इच्छा दिखाई है। भारत में वैश्विक आबादी का लगभग 17 प्रतिशत हिस्सा रहता है लेकिन इसका ऐतिहासिक तौर पर कुल योगदान चार प्रतिशत से भी कम है।

वर्ष 2005 से 2019 के बीच हमारे सकल घरेलू उत्पाद की उत्सर्जन तीव्रता में 33 प्रतिशत की कमी आई है। इसलिए उत्सर्जन तीव्रता में कमी का लक्ष्य तय समय से पहले ही हासिल कर लिया गया है। इस वर्ष 31 अक्टूबर तक गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से कुल विद्युत शक्ति स्थापित क्षमता कुल संचयी विद्युत शक्ति स्थापित क्षमता का 46.52 प्रतिशत है। देश ने 2030 तक उत्सर्जन तीव्रता में 45 प्रतिशत की कमी और गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से संचयी विद्युत शक्ति स्थापित क्षमता का 50 प्रतिशत तक अपने एनडीसी लक्ष्यों को अद्यतन किया है। कार्बन कैप्चर यूटिलाइजेशन एंड स्टोरेज (सीसीयूएस) की औद्योगिक और बिजली क्षेत्र को कार्बन मुक्त करने में महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका रही है। मंत्रालय का भारत शीतलन कार्य योजना (आईसीएपी) में सामाजिक-आर्थिक लाभों को अधिकतम करने के लिए चल रहे सरकारी कार्यक्रमों और योजनाओं के साथ तालमेल बिठाने पर बल है। केन्द्र सरकार ने आईसीएपी में दी गई सिफारिशों को लागू करने के लिए कई कदम उठाए हैं।

मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल कटौती कार्यक्रम के अनुसार 2020-24 के दौरान हाइड्रो क्लोरोफ्लोरोकार्बन (एचसीएफसी) के 35 प्रतिशत चरणबद्ध कटौती लक्ष्य के मुकाबले, भारत ने उपभोग क्षेत्र में हाइड्रो क्लोरोफ्लोरोकार्बन में 50 प्रतिशत की कमी हासिल की है।

एसी और फ्रिज जैसे नए उपकरणों के निर्माण में एचसीएफसी का उपयोग इस साल के आखिरी दिन तक चरणबद्ध तरीके से समाप्त कर दिया जाएगा। मैंग्रोव को एक अद्वितीय, प्राकृतिक इकोसिस्टम के रूप में बहाल करने और बढ़ावा देने तथा तटीय आवासों की स्थिरता को संरक्षित करने और बढ़ाने के लिए इस वर्ष 05 जून को 'तटीय आवास और मूर्त आय मैंग्रोव पहल (मिष्टी)' शुरू की गई है। इस योजना के लिए प्रारंभिक परियोजना परिव्यय के रूप में प्रतिपूरक वनीकरण निधि प्रबंधन और योजना प्राधिकरण (सीएएमपीए) के माध्यम से 100 करोड़ रुपये की धनराशि आवंटित की गई है। देश के 13 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में लगभग 22,561 हेक्टेयर खराब मैंग्रोव क्षेत्र को पुनर्स्थापन के तहत लाया गया है और छह राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में 3,836 हेक्टेयर पुनर्स्थापन के लिए कुल 17.96 करोड़ रुपये जारी किए गए हैं।

संक्षिप्त खबरें

मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट पर तेजी से चल रहा कार्य : केंद्र

नई दिल्ली। मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट पर काम तेजी से चल रहा है, जिसके तहत 13 नदियों और कई राजमार्गों पर पुल बनाए जा रहे हैं। इसमें कई रेलवे लाइनों को सात स्टील और प्रीस्ट्रेस्ड कंक्रीट पुलों के माध्यम से पार किया जाएगा। यह जानकारी भारतीय रेलवे द्वारा वार्षिक समीक्षा में दी गई।रेलवे द्वारा दी गई जानकारी के मुताबिक, प्रोजेक्ट के अंतर्गत 243 किलोमीटर से अधिक पुल निर्माण का कार्य पूरा हो चुका है, साथ ही 352 किलोमीटर पियर कार्य और 362 किलोमीटर पियर नींव का कार्य भी पूरा हो चुका है।गुजरात में ट्रैक निर्माण का काम तेजी से चल रहा है, आनंद, वडोदरा, सूरत और नवसारी जिलों में आरसी ट्रैक बेड का निर्माण कार्य हो रहा है। लगभग 71 किलोमीटर आरसी ट्रैक बेड का निर्माण पूरा हो चुका है और वायडक्ट पर रेल की वेल्डिंग शुरू हो गई है। महाराष्ट्र में मुंबई बुलेट ट्रेन स्टेशन के लिए पहला कंक्रीट बेस स्लैब 32 मीटर की गहराई पर सफलतापूर्वक डाला जा चुका है, जो 10 मंजिला इमारत के बराबर है।

महत्वपूर्ण खबर

बस पलटने से 3 की मौत, सीएम ने 2 लाख रुपए मुआवजे का किया ऐलान

कोरापुट (ओडिशा)। ओडिशा के कोरापुट जिले के बैपारीगुडा पुलिस क्षेत्र के सुकनाला घाट पर रविवार सुबह एक बस के पलट जाने से 3 लोगों की मौत हो गई और 30 अन्य घायल हो गए। सीएम मोहन चरण माझी ने हादसे पर दुख जताते हुए मुआवजा राशि का ऐलान किया।कटक से गुप्तेश्वर मंदिर जा रहे तीर्थयात्रियों को ले जा रही बस ने नियंत्रण खो दिया और सड़क से पलट गई। हादसे में 12 वर्ष के बच्चे समेत तीन की मौत हो गई। दुर्घटना के बाद दमकल विभाग, बीएसएफ और स्थानीय पुलिस ने तत्काल प्रभाव से बचाव अभियान शुरू किया।घायलों का प्राथमिक इलाज बैपारीगुडा अस्पताल में किया गया। जबकि, गंभीर रूप से घायल लोगों को जिला मुख्यालय अस्पताल में स्थानांतरित किया गया। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने शोक व्यक्त करते हुए मृतकों के परिवारों को 2 लाख रुपये मुआवजा देने की घोषणा की और घायलों को शीघ्र चिकित्सा सहायता प्रदान करने का निर्देश दिया।

पूर्व आईपीएस आचार्य किशोर कुणाल के निधन पर सीएम योगी ने जताया दुख

लखनऊ। बिहार राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड (बीएसबीआरटी) के पूर्व प्रमुख और भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) के सेवानिवृत्त अधिकारी आचार्य किशोर कुणाल के निधन पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दुख जताया है। उन्होंने आचार्य किशोर कुणाल के निधन को धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र की अपूरणीय क्षति बताया।सीएम योगी ने रविवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के संस्थापक सदस्य, महावीर मंदिर न्यास के सचिव आचार्य किशोर कुणाल जी का निधन अत्यंत दुःखद और सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र की अपूरणीय क्षति है।

'मन की बात' बन गया है देश की सामूहिक शक्ति का जीवंत दस्तावेज : मोदी

मोदी ने रविवार को मन की बात की 117वीं कड़ी के प्रसारण ने कहा कि हमारा भारत, विविधता में एकता के साथ कैसे आगे बढ़ रहा है। चाहे वो खेल का मैदान हो या विज्ञान का क्षेत्र, स्वास्थ हो या शिक्षा हर क्षेत्र में भारत नई ऊंचाइयों को छू रहा है। हमने एक परिवार की तरह मिलकर हर चुनौती का सामना किया और नई सफलताएं हासिल की है।

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि आकाशवाणी से प्रसारित उनके मासिक कार्यक्रम मन की बात की 116 कड़ी प्रसारित हो चुकी है और यह खुशी की बात है कि इससे लोगों में नई ऊर्जा का संचार हो रहा है तथा यह सामूहिक शक्ति का जीवंत दस्तावेज बना रहा है। श्री मोदी ने रविवार को मन की बात की 117वीं कड़ी के प्रसारण ने कहा कि हमारा भारत, विविधता में एकता के साथ कैसे आगे बढ़ रहा है। चाहे वो खेल का मैदान हो या विज्ञान का क्षेत्र, स्वास्थ हो या शिक्षा हर क्षेत्र में भारत नई ऊंचाइयों को छू रहा है। हमने एक परिवार की तरह मिलकर हर चुनौती का सामना किया और नई सफलताएं हासिल की है। उन्होंने कहा,वर्ष 2014 से शुरू हुए मन की बात के 116 कड़ियों में मैंने देखा है कि मन की बात देश की सामूहिक शक्ति का एक जीवंत दस्तावेज बन गया है। आप सभी ने इस कार्यक्रम को अपनाया, अपना बनाया। हर महीने आपने अपने विचारों और प्रयासों को साझा किया। कभी किसी युवा इनोवेटर के आईडिया ने प्रभावित किया, तो कभी किसी बेटी की उपलब्धि ने गौरवान्वित किया। ये आप सभी की भागीदारी है जो देश के कोने-कोने से सकारात्मक ऊर्जा को एक साथ लाती है। मन की बात इसी सकारात्मक ऊर्जा के अम्प्लीफिकेशन का मंच बन गया है और अब 2025 दस्तक दे रहा है। आने वाले साल में मन की बात के माध्यम से हम और भी प्रेरक प्रयासों को साझा करेंगे। प्रधानमंत्री ने कहा,मुझे विश्वास है कि देशवासियों की सकारात्मक सोच और इनोवेशन की भावना से भारत नई ऊंचाइयों को छूएगा। आप अपने आस-पास के यूनिक प्रयासों को मन की बात के साथ शेयर करते रहिए। मैं जानता हूँ कि अगले साल की हर मन की बात में हमारे पास एक दूसरे से साझा करने के लिए बहुत कुछ होगा। आप सभी को 2025 की ढ़ेर सारी शुभकामनाएं। स्वस्थ रहें, खुश रहें, फिट इंडिया मूवमेंट में आप भी जुड़ जाइए, खुद को भी फिट रखिए। जीवन में प्रगति करते रहें।

मोदी ने महाकुंभ की भव्यता पर डाला प्रकाश, 'मन की बात' में एकता के संदेश पर दिया जोर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के 117वें एपिसोड के दौरान महाकुंभ की तैयारियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने भव्य महाकुंभ के एकजुटता की भावना के संदेश पर जोर दिया। पीएम मोदी ने कहा कि 13 जनवरी से प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन होने जा रहा है। इस समय संगम तट पर भव्य तैयारियां चल रही हैं। जब हम कुंभ में भाग लें, तो समाज में विभाजन और नफरत की भावना को खत्म करने का संकल्प लें। कुंभ आयोजन में पहली बार एआई चैटबॉट का इस्तेमाल किया जाएगा। उन्होंने कहा कि एआई चैटबॉट के जरिए कुंभ से जुड़ी सभी तरह की जानकारी 11 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध होगी। कहीं कोई भेदभाव नहीं है, कोई बड़ा नहीं है, कोई छोटा नहीं है। इसलिए हमारा कुंभ एकता का महाकुंभ भी है। श्रद्धालुओं को उनके मोबाइल फोन पर सरकार द्वारा स्वीकृत दूर पैकेज, आवास और होमस्टे की जानकारी दी जाएगी। पीएम मोदी ने आगे कहा कि महाकुंभ की विशेषता केवल इसकी विशालता में ही नहीं है, कुंभ की विशेषता इसकी विविधता में भी है। इस आयोजन में करोड़ों लोग एक साथ एकत्रित होते हैं। लाखों संत, हजारों परम्पराएं, सैकड़ों संप्रदाय, अनेकों अखाड़े, हर कोई इस आयोजन का हिस्सा बनता है। कहीं कोई भेदभाव नहीं दिखता है, कोई बड़ा नहीं होता है, कोई छोटा नहीं होता है। अनेकता में एकता का ऐसा दृश्य विश्व में कहीं और देखने को नहीं मिलेगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, डिजिटल नेविगेशन की मदद से आप महाकुंभ 2025 में विभिन्न घाटों, मंदिरों और साधुओं के अखाड़ों तक पहुंच सकेंगे।

अनेकता में एकता के संदेश के साथ डिजिटल होगा प्रयागराज महाकुंभ : मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि इस बार प्रयागराज महाकुंभ न केवल विशाल और भव्य होगा बल्कि अनेकता में एकता का संदेश देते हुए पूरे कुंभ क्षेत्र में पहली बार डिजिटल व्यवस्था का प्रदर्शन होगा। श्री मोदी ने आकाशवाणी से प्रसारित अपने मासिक कार्यक्रम 'मन की बात' की 117वीं कड़ी में रविवार को देश को संबोधित करते हुए कहा कि अगले माह प्रयागराज में महाकुंभ हो रहा है जो देश की विविधता और भव्यता को प्रदर्शित कर 'महाकुंभ का संदेश एक हो पूरा देश और गंगा की अविरल धारा न बँटे समाज हमारा' का पूरा देश को संदेश देगा। उन्होंने कहा 'अगले महीने 13 तारीख से प्रयागराज में महाकुंभ होने जा रहा है। इस समय वहां संगम तट पर जबरदस्त तैयारियाँ चल रही हैं। मुझे याद है अभी कुछ दिन पहले जब मैं प्रयागराज गया था तो हेलिकॉप्टर से पूरा कुंभ क्षेत्र देखकर दिल प्रसन्न हो गया था। इतना विशाल, इतना सुंदर, इतनी भव्यता। महाकुंभ की विशेषता केवल इसकी विशालता में ही नहीं है, कुंभ की विशेषता इसकी विविधता में भी है। इस आयोजन में करोड़ों लोग एक साथ एकत्रित होते हैं। लाखों संत, हजारों परम्पराएँ, सैकड़ों संप्रदाय, अनेकों अखाड़े, हर कोई इस आयोजन का हिस्सा बनता है। कहीं भेदभाव नहीं दिखता, कोई बड़ा नहीं होता, कोई छोटा नहीं होता। अनेकता में एकता का ऐसा दृश्य विश्व में कहीं और देखने को नहीं मिलेगा।

मलेरिया, कैंसर से लड़ाई में भारत को मिली बड़ी सफलता : मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि भारत ने जानलेवा बीमारी कैंसर और मलेरिया पीड़ितों की मदद करने में बड़ी सफलता हासिल की है। श्री मोदी ने अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 117वीं कड़ी के संबोधन में कहा, 'भारत की दो बड़ी उपलब्धियां आज विश्व का ध्यान आकर्षित कर रही हैं इन्हें सुनकर आपको भी गर्व महसूस होगा, ये दोनों सफलताएं स्वास्थ्य के क्षेत्र में मिली हैं, पहली उपलब्धि मिली है मलेरिया से लड़ाई में। मलेरिया की बीमारी चार हजार वर्षों से मानवता के लिए एक बड़ी चुनौती रही है।' उन्होंने कहा कि आजादी के समय भी यह हमारी सबसे बड़ी स्वास्थ्य चुनौतियों में से एक थी। एक महीने से लेकर पांच साल तक के बच्चों की जान लेने वाली सभी संक्रामक बीमारियों में मलेरिया का तीसरा स्थान है। प्रधानमंत्री ने कहा, 'आज मैं संतोष से कह सकता हूँ कि देशवासियों ने मिलकर इस चुनौती का दृढ़ता से मुकाबला किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट कहती है भारत में 2015 से 2023 के बीच मलेरिया के मामलों और इससे होने वाली मौतों में 80 प्रतिशत की कमी आई है।' उन्होंने कहा कि यह कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। सबसे सुखद बात यह है कि यह सफलता जन-जन की भागीदारी से मिली है। उन्होंने कहा कि भारत के कोने-कोने, हर जिले से हर कोई इस अभियान का हिस्सा बना है। उन्होंने कहा, 'असम में जोरहाट के चाय बागानों में मलेरिया चार साल पहले तक लोगों की चिंता की एक बड़ी वजह बना हुआ था लेकिन जब इसके उन्मूलन के लिए चाय बागान में रहने वाले एकजुट हुए तो इसमें काफी हद तक सफलता मिलने लगी।' श्री मोदी ने कहा कि अपने इस प्रयास में उन्होंने प्रौद्योगिकी के साथ-साथ सोशल मीडिया का भी भरपूर इस्तेमाल किया है। उन्होंने कहा कि इसी तरह हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिले ने मलेरिया पर नियंत्रण के लिए बड़ा अच्छा मॉडल पेश किया।

मन की बात अनेकता में एकता के भाव को सशक्त करने वाला : मुख्यमंत्री योगी

यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, प्रधानमंत्री मोदी द्वारा आज मन की बात कार्यक्रम में नागरिकों से संविधान की विरासत से जुड़ने का आह्वान अनेकता में एकता के भाव को और अधिक सशक्त करने वाला है। संवैधानिक मूल्यों व आदर्शों से जन-जन को जोड़ने वाले इस अभियान हेतु प्रधानमंत्री मोदी का आभार।

प्रात : किरण/ एजेंसी

लखनऊ/पंचकूला। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ और उत्तराखंड के सीएम धामी ने प्रधानमंत्री मोदी के मन की बात क्रार्यक्रम को देशवासियों के लिए प्रेरक बताया। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, प्रधानमंत्री मोदी द्वारा आज मन की बात कार्यक्रम में नागरिकों से संविधान की विरासत से जुड़ने का आह्वान अनेकता में एकता के भाव को और अधिक सशक्त करने वाला है। संवैधानिक मूल्यों व आदर्शों से जन-जन को जोड़ने वाले इस अभियान हेतु प्रधानमंत्री मोदी का आभार। वहीं, हरियाणा के सीएम नायब सिंह सैनी ने कहा, पंचकुला में बूथ संख्या 96 पर हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात एपिसोड सुनने के लिए वरिष्ठ पार्टी कार्यकर्ता रमेश राणा के आवास पर एकत्र हुए। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री ने कई प्रेरक बातों का उल्लेख किया, जिसमें मलेरिया और इसकी रोकथाम के बारे में जागरूकता बढ़ाने में हरियाणा का प्रयास भी शामिल था। देश भर में जो लोग अच्छे काम करते हैं, पीएम मोदी मन के बात के जरिए उनके कामों को देशवासियों के सामने रखते हैं। जिससे देशवासियों को प्रेरणा मिलती है। मुख्यमंत्री सैनी ने कहा कि प्रयागराज में महाकुंभ जो शुरू हो रहा है, उसका भी प्रधानमंत्री मोदी ने जिक्र किया है। यह हमारी संस्कृति से जुड़ा हुआ विषय है। पीएम मोदी के मन की बात क्रार्यक्रम से बहुत कुछ सिखने को मिलता है। हमें यह प्रेरणा मिलती है कि दूसरों के कामों को देखकर हम कैसे आगे बढ़ सकते हैं। सैनी ने महाकुंभ के लिए बस शुरू करने के सवाल पर कहा कि काफी संख्या में लोग जाते हैं। स्पेशल ट्रेन चल रही है और भी व्यवस्था की जरूरत पड़ेगी तो लोगों के लिए सभी व्यवस्थाएं की जाएगी। उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी ने एक्स पोस्ट पर लिखा, देहरादून में प्रधानमंत्री मोदी के मन की बात कार्यक्रम का 117वां संस्करण सुना। आज के कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के संविधान, प्रयागराज में होने वाले महाकुंभ एवं डिजिटल माध्यमों से श्रद्धालुओं के लिए बनाई गई व्यवस्थाओं, एनिमेशन, फिल्म और मनोरंजन जगत से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की। प्रधानमंत्री मोदी ने अन्य विषयों पर अपने विचार साझा करते हुए बताया कि आज किस प्रकार हमारा देश आर्ट से आयुर्वेद तक और लैंग्वेज से लेकर म्यूजिक तक वैश्विक स्तर पर छा रहा है।

लोकसभा चुनाव 2024 में प्रवासी भारतीय मतदाताओं की चुनावी भागीदारी कम: निर्वाचन आयोग

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। प्रवासी भारतीयों ने मतदाता के रूप में पंजीकरण कराने में काफी उत्साह दिखाया और करीब 1.2 लाख लोगों ने मतदाता सूची में नाम दर्ज कराया, लेकिन इस साल लोकसभा चुनाव में बहुत कम लोग अपने मताधिकार का इस्तेमाल करने आए। निर्वाचन आयोग द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, 2024 में 1,19,374 प्रवासी भारतीय मतदाताओं ने पंजीकरण कराया, जिनमें केरल में सबसे अधिक 89,839 प्रवासी भारतीयों ने पंजीकरण कराया था। निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि दुनिया की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने के लिए केवल 2,958 प्रवासी मतदाता ही भारत आए। इनमें से 2,670 मतदाता अकेले केरल से थे। कर्नाटक, उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु जैसे कई बड़े राज्यों में प्रवासी मतदाताओं का मतदान में कोई योगदान नहीं देखा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के गृह राज्य गुजरात में लोकसभा चुनाव में 885 प्रवासी मतदाताओं में से केवल दो ने ही मतदान किया। महाराष्ट्र में भी लगभग यही स्थिति रही, जहां 5,097 अनिवासी भारतीय (एनआरआई) मतदाताओं में से केवल 17 ने ही मतदान किया। मौजूदा चुनावी कानून के अनुसार पंजीकृत एनआरआई मतदाताओं को मत डालने के लिए अपने संबंधित लोकसभा और विधानसभा क्षेत्रों में आना पड़ता है।

महाकुंभ 2025 महाकुम्भ मेला 2025 के दौरान देश-विदेश के लाखों श्रद्धालुओं के साथ ही बड़ी संख्या में वीआईपी और वीवीआईपी मूवमेंट की संभावना है ...

सुरक्षा व्यवस्था को लेकर महराजगंज-नेपाल सीमा पर पुलिस एसएसबी सतर्क

प्रात : किरण/ एजेंसी

महराजगंज। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में होने जा रहे भव्य महाकुंभ को लेकर सुरक्षा व्यवस्था चाक चौबंद कर दी गई है। भारत-नेपाल सीमा पर भी सघन चेकिंग अभियान जारी है। हाल ही में डीजीपी प्रशांत कुमार ने नेपाल सीमा पर पुलिस को एसएसबी के साथ समन्वय करके सघन चेकिंग सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए थे। इसके बाद महराजगंज जिले के भारत-नेपाल सीमा पर एसएसबी और पुलिस के जवान पूरी तरह से अलर्ट हो गए हैं।

महाकुंभ में किसी भी आतंकी खतरे को देखते हुए भारत-नेपाल के 84 किलोमीटर लंबे सीमा क्षेत्र में एसएसबी के जवान पेट्रोलिंग करते हुए नजर आ रहे हैं। इसके अलावा, सोनौली बॉर्डर पर नेपाल से भारत आने-जाने वाले सभी व्यक्तियों की सघन तलाशी के बाद ही उन्हें प्रवेश दिया जा रहा है। डॉग स्क्वॉड द्वारा उनके सामानों की जांच की जा रही है और सीसीटीवी से भी निगरानी रखी जा रही है ताकि कोई भी देश विरोधी तत्व भारत में प्रवेश न कर सके।

पुलिस अधीक्षक सोमेंद्र मीणा ने बताया कि महाकुंभ को लेकर सीमावर्ती पुलिसकर्मियों को निर्देश दिया गया है कि वे एसएसबी के साथ मिलकर पेट्रोलिंग करें और पगडंडियों पर भी निगरानी रखें। इसके साथ ही, जो सीसीटीवी कैमरे पहले से लगाए गए हैं, उन पर ध्यान रखा जा रहा है ताकि वे सही तरीके से काम करें। पुलिस अधीक्षक सोमेंद्र मीणा ने मीडियाकर्मियों से बताया, महाकुंभ को ध्यान में रखते हुए सभी सीमावर्ती थाना प्रभारी को निर्देश दिया गया कि वे लगातार एसएसबी के साथ समन्वय बनाए रखें और संयुक्त रूप से पेट्रोलिंग करें। इसके अलावा, यह बताया जा रहा है कि यदि कोई संदिग्ध व्यक्ति या बाहरी व्यक्ति गांव में रुका हो, तो उसकी तत्काल सूचना पुलिस को दें और पुलिस सक्रिय रूप से कार्रवाई करेगी। हम लगातार एलआईयू और अन्य संबंधित सुरक्षा एजेंसियों से संपर्क में हैं और जो भी सूचनाएं प्राप्त होती हैं, उस पर त्वरित कार्रवाई की जा रही है। सभी अधिकारी सतर्क रहते हुए अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं।

जिन पगडंडियों पर सीसीटीवी लगाए गए हैं, उनकी क्रियाशीलता की जांच करें ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे सही ढंग से काम कर रहे हैं। कुछ अन्य पगडंडियों को भी चिन्हित किया गया है, जहां बिजली आपूर्ति नहीं है, और वहां सोलर पावर के माध्यम से सीसीटीवी कैमरे स्थापित किए जा रहे हैं। उन्होंने आगे कहा, ह्लसीमावर्ती गांवों में ग्राम सुरक्षा समिति की बैठकें आयोजित की जा रही हैं और ग्रामीणों को

महाकुंभ में दिखेगा कैदियों के हुनर का कमाल, श्रद्धालु खरीदेंगे ताले 'खास'

अलीगढ़। देश और दुनिया में अपने ताले और तालीम के लिए प्रसिद्ध अलीगढ़ अब एक नई पहचान बना रही है। अलीगढ़ जिला कारागार में बंद कैदी ताला बनाने के काम में जुट गए हैं। अलीगढ़ जेल में बने ताले देश-विदेश में प्रसिद्ध प्रयागराज महाकुंभ में उपयोग के लिए भेजे जाएंगे।जिला कारागार में रोजाना लगभग 1200 ताले बनाए जा रहे हैं, जिन्हें महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं को सस्ते दामों पर उपलब्ध कराया जाएगा। इस पहल से कैदियों को अपनी कला और कौशल को निखारने का मौका भी मिलेगा। जेल अधीक्षक ने आगे कहा कि इस बार महाकुंभ के आयोजन में जेल विभाग का एक स्टॉल भी लगाया जाएगा, जहां कैदियों द्वारा निर्मित ताले और लकड़ी से बने विभिन्न सामान की प्रदर्शनी आयोजित की जाएगी। महाकुंभ में आए लोग इन सामानों को खरीद सकते हैं। यह एक बड़ी पहल है, जिससे महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालु ताले और अन्य सामान सस्ते दामों पर प्राप्त कर सकेंगे। अलीगढ़ जेल के अधीक्षक विजेंद्र सिंह यादव ने बताया कि जेल में कैदियों द्वारा विभिन्न प्रकार के सामान बनाए जा रहे हैं। इनमें शिवलिंग, ओम, संघ और अन्य धार्मिक प्रतीक शामिल हैं। अधीक्षक के मुताबिक जेल में तालों को असेंबल किया जा रहा है और इन तालों का इस्तेमाल न केवल अलीगढ़, बल्कि बाहर भी किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जेल में एक छोटी इकाई स्थापित की गई है, जहां कैदी रोजाना विभिन्न सामान तैयार कर रहे हैं, जिन्हें देशभर में भेजा जाता है।

संक्षिप्त समाचार

दुकान से लौट रही बुजुर्ग महिला और पोते पर हमला किया

हरिद्वार, एजेंसी। सिडकुल थाना क्षेत्र में दुकान से सामान लेकर लौट रही बुजुर्ग महिला और उसके नाबालिग पोते पर हमला करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने तहरीर के आधार पर आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मामले की जांच शुरू कर दी गई है। पुलिस के अनुसार, जैनब पत्नी बदरूल हसन निवासी ग्राम हजाराग्रंट थाना सिडकुल ने शिकायत दी। बताया कि 24 दिसंबर को वह सब्जी लेकर दुकान से आ रही थी। तभी इकरार उसकी पत्नी दिलरुबा, नाजिया गाली-गलौज करने लगे। इसका विरोध किया तो सभी ने उन्हें व उनके साथ मौजूद तीन वर्षीय पोते के पत्थर से हमला कर दिया। पत्थर सिर में लगने से वह अचेत होकर नीचे गिर गई। आरोप है कि सभी ने बुजुर्ग को डंडों से पीटा। बाल पकड़कर सड़क पर घसीटने लगे। चीख पुकार सुनकर आसपास के लोगों ने आकर उसे बचाया। तब सभी ने जान से मार देने की धमकी दी। थानाध्यक्ष मनोहर सिंह भंडारी ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

दीपगंगा एसोसिएशन के कर्मचारी पर धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज

हरिद्वार, एजेंसी। सिडकुल थाना क्षेत्र में दीपगंगा वेलफेयर एसोसिएशन के कर्मचारी ने एनओसी से मिले करीब 1.10 लाख रुपये की धोखाधड़ी कर रकम हड़प ली। संस्था के नोटिस देने के बाद भी कोई जवाब नहीं दिया। पुलिस ने तहरीर के आधार पर धोखाधड़ी सहित संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। पुलिस के अनुसार, दीपगंगा वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष अरविंद सिंघल ने शिकायत देकर बताया कि दीपगंगा वेलफेयर एसोसिएशन प्लॉट में सौरभ कुमार निवासी ग्राम रावली महदूद एस्टेट मैनेजर था। फ्लैट बिक्री-खरीद में दीपगंगा वेलफेयर एसोसिएशन से एनओसी प्राप्त करने की जिम्मेदारी देख रहा था। जुलाई 2023 से बीते अगस्त तक सौरभ कार्यरत रहा। कुल 20 एनओसी जारी की गई। प्रत्येक फ्लैट के लिए एनओसी राशि 11 हजार रुपये थी। आरोप है कि सौरभ ने 20 एनओसी में से 10 का भुगतान सोसायटी के खाते में किए, जबकि 10 भुगतान अपने खाते में नकद और ऑनलाइन ले लिए। कई लोगों से तिमाही रखरखाव शुल्क 6300 रुपये भी लिया। थानाध्यक्ष मनोहर सिंह भंडारी ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। मामले की जांच की जा रही है।

ट्रक ने बाइक को मारी टक्कर नौ वर्षीय बच्चे ने दम तोड़ा

हरिद्वार, एजेंसी। बहादराबाद थाना क्षेत्र में ट्रक ने मोटरसाइकिल पर पीछे से टक्कर मार दी, जिससे नौ साल के बच्चे की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने ट्रक को कब्जे में लिया। पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया है। ट्रक चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार, घटना बृहस्पतिवार की रात करीब आठ बजे की है। आदित्य (9) पुत्र वीरेश निवासी गांव गाजीपुर थाना बरला तहसील अतरौली, जिला अलीगढ़ यूपी हाल पीठ बाजार बहादराबाद रिश्ते के भाई शिवा बाबू के साथ बाइक पर घर बहादराबाद की जा रहा था। लोहे के पुल के पास पीछे से ट्रक ने बाइक पर टक्कर मार दी, जिससे आदित्य की मौके पर ही मौत हो गई। शिवा बाबू गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे में बाइक भी क्षतिग्रस्त हो गई। घटना के बाद चालक ट्रक को छोड़कर भाग निकला। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घायल को अस्पताल भिजवाया। बच्चे के शव को कब्जे में लेकर जिला अस्पताल की मोर्चरी में भिजवाया। थानाध्यक्ष नरेश राठौड़ ने बताया कि आदित्य की माता नीतू की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर लिया है।

एक सप्ताह से नलों में आ रहा गंदा व दुर्गंध वाला पानी

रूड़की, एजेंसी। रामनगर में गली नंबर-3 समेत कुछ और गलियों के लोग एक सप्ताह से गंदा पानी आने की शिकायत कर रहे हैं। लोगों का कहना है कि पानी कभी मटमैला आता है तो कभी उसमें दुर्गंध आ रही है। इसके कारण वह पानी का इस्तेमाल खाने-पीने में नहीं कर पा रहे हैं। इससे परेशानी हो रही है। जल संस्थान से इस संबंध में शिकायत की गई है लेकिन अभी निस्तारण नहीं हो पाया है।

सीजन की तीसरी बर्फबारी से चमकी चकराता की चोटियां

चकराता, एजेंसी। चकराता की ऊंची चोटियों पर सीजन का तीसरा हिमपात हुआ। लोखंडी, देववन, कोटी कनासर, खडंबा, मुंडाली आदि की पहाड़ियां पूरी तरह से बर्फ से ढक गई। त्यूणी-चकराता-मसूरी राष्ट्रीय राजमार्ग पर फिर से बर्फ की मोटी चादर बिछ गई। दो दिन से मौसम का मिजाज बदला होने के कारण बड़ी संख्या में पर्यटक पहले ही यहां आ गए थे।

बर्फबारी देने आए पर्यटकों की मुराद शनिवार को पूरी हो गई। वीकेंड पर पर्यटकों की संख्या में काफी इजाफा हुआ है। शुक्रवार से झमाझम बारिश का सिलसिला शुरू हुआ था। इससे सर्दी में जबरदस्त इजाफा हुआ। ऊंचाई वाले इलाकों में जहां जबरदस्त बर्फबारी हुई, वहीं निचले इलाकों में झमाझम बारिश होती रही। शुक्रवार रात सीजन की तीसरी बर्फबारी होने से व्यापारी काफी खुश हैं।

पर्यटकों के उमड़ने से सभी होटल, होम स्टे, रिसार्ट फुल हो गए हैं। बर्फ गिरती देख पर्यटकों के खुशी का ठिकाना नहीं रहा। बर्फबारी से पर्यटन व्यवसाय को भी अच्छा खासा लाभ मिल रहा है। वहीं नव वर्ष का जश्न मनाने चकराता आने की योजना बनाने वाले पर्यटकों को यह बर्फबारी किसी सौगात से काम नहीं है।

साल के आखिरी दिन 31 दिसंबर तक बर्फ रहने की उम्मीद है। शनिवार को पर्यटक काफी मस्ती करते नजर आए। सीजन में तीसरी बार बर्फबारी होने से पर्यटक और स्थानीय व्यापारियों के साथ- साथ यहां के

कृषक बागवान भी काफी खुश नजर आए। क्योंकि सेब, प्लम, आड़ू, खुमानी, अखरोट, चेरी नाशपाती की अच्छी फसल होने की उम्मीद है।

हालांकि बर्फबारी के बीच पशुओं को बाड़े में ही चारापत्ती देनी पड़ रही है। जंगल से चारा पत्ती लाना चुनौतीपूर्ण है। पशुपालकों को बड़ी मशक्कत से गाय बैल और भेड़ बकरियों के लिए चारा जुटाना पड़ रहा है। दैनिक श्रमिकों को भी बर्फबारी के कारण काम मिलना मुश्किल हो गया है। पर्वतीय क्षेत्र में रात में पाला जमने के कारण हो रहे सड़क हादसों को देखते हुए बाहरी राज्यों से आने वाले पर्यटकों के लिए कुछ पाबंदियां लगाई हैं। पर्यटकों को रात के समय चकराता जाने पर रोक लगा दी गई है। यह पाबंदी रात दस से सुबह चार बजे तक लागू रहेगी। इसके लिए पुलिस ने चकराता रूट पर बैरिकेट्स लगाए हैं। यह पाबंदी शनिवार से दो जनवरी तक लागू रहेगी।

रात दस बजे से सुबह चार बजे तक पुलिस पर्यटकों को चकराता नहीं जाने देगी। वहीं पर्यटकों के बड़ी संख्या में उमड़ने के कारण शनिवार को साहिया बाजार में दिनभर जाम की स्थिति बनी रही।नववर्ष का जश्न का मनाने के लिए भारी संख्या में पर्यटक चकराता में उमड़ रहे हैं। चकराता क्षेत्र में रोड पर पाला जमने के कारण रात में हादसे का खतरा सबसे अधिक रहता है। पुलिस ने विकासनगर, कालसी थाना क्षेत्रों में पिकेट लगाई है।

कालसी जौनसार बावर का प्रवेश द्वार माना जाता है। कोतवाल राजेश साह व कालसी थानाध्यक्ष भुवन चंद्र पुजारी के अनुसार रात में पर्वतीय क्षेत्रों में रहने व खाने की व्यवस्था नहीं रहती। साथ ही पाला जमने के कारण वाहनों के स्लिप होने का खतरा भी बढ़ जाता है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक देहरादून अजय सिंह के निर्देश पर पर्यटकों की सुरक्षित व सुगम यात्रा सुनिश्चित करने के लिए पुलिस अधीक्षक देहात रेनू लोहानी भी शुक्रवार रात में स्वयं कालसी बार्डर का निरीक्षण कर चुकी हैं।

शुक्रवार को लोखंडी के पास हुए हादसे में गई थी एक पर्यटक की जान लोखंडी के पास शुक्रवार सुबह हुआ कार हादसा भी सड़क पर जमे पाले से वाहन फिसलने के कारण ही माना जा रहा है। इसमें एक पर्यटक की मौत हुई थी। जबकि चार लोग घायल हो गए थे। इसको देखते हुए पुलिस रात में सिर्फ उन्हीं पर्यटकों को जाने देगी, जिनकी बुकिंग होगी।

बर्फबारी के दृष्टिगत रात में चकराता जाने वाले पर्यटकों की सुरक्षा को देखते हुए कालसी बार्डर पर पुलिस पिकेट लगाई गई है। इसके अलावा विकासनगर कोतवाली क्षेत्र में भी पुलिस टीमें पर्यटकों को चेक करेंगी। पिछले दो दिन से हो रही बारिश और मौसम के तीसरे हिमपात के चलते जौनसार बावर व पछवादून शीत लहर की चपेट में आ गया। चकराता के लोखंडी क्षेत्र में हुई बर्फबारी से पड़ी कड़ाके की ठंड के चलते लोग ठिठुर रहे हैं। बाहर से आए कई पर्यटक बर्फबारी का नजारा देखने लोखंडी पहुंच रहे है।

चकराता की ऊंची चोटियों में शुमार लोखंडी, कनासर, देववन, खडबां, मुंडाली व कथियान समेत आसपास के इलाकों में बर्फबारी शनिवार को भी होती रही। बारिश और बर्फबारी से सामान्य जनजीवन प्रभावित है। लोखंडी से कोटी-कनासर के बीच बर्फबारी होने से चकराता-त्यूणी-मसूरी राष्ट्रीय राजमार्ग पर वाहनों की आवाजाही बाधित रही।

उत्तराखंड में फिर हुआ दर्दनाक हादसा, खाई में गिरी बोलेरो, दो की मौत

कोटद्वार, एजेंसी। बीती देर रात सतपुली- दुधारखाल- रिखणीखाल मोटर मार्ग पर एक बोलेरो वाहन खाई में गिर गया। दुर्घटना में दो व्यक्तियों की मौत हो गई। वाहन चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। दुर्घटनाग्रस्त वाहन रिखणीखाल उपतहसील के तहसीलदार का है।

बीती रात रिखणीखाल तहसील में तैनात चालक कोटद्वार नगर निगम के अंतर्गत खूनीबढ़ निवासी सतपाल उर्फ कोमल पुत्र दलवीर सिंह वाहन को लेकर दुधारखाल से कोटद्वार की तरफ आने के लिए निकला। वाहन में पीआरडी जवान मनवर सिंह पुत्र दिलबर सिंह निवासी डोबरिया तहसील रिखणीखाल और जसबीर सिंह पुत्र भगत सिंह निवासी बगर तहसील रिखणीखाल उम्र 36 वर्ष भी सवार थे।

जसवीर की रिखणीखाल में दुकान है। रिखणीखाल से करीब डेढ़ किलोमीटर आगे ग्राम सिरवाना के समीप के समीप अचानक वहां गहरी खाई में जा गिरा।

देहरादून में पड़ रही कड़ाके की ठंड, चाय की चुस्कियों संग मौसम का मजा ले रहे लोग, राजनीति का भी गर्माया मुद्दा

देहरादून, एजेंसी। पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी और निचले इलाकों में बरसात के कारण तापमान में गिरावट आई है। ठंड के कारण लोगों का घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया है।

चौक चौराहे और दुकानों पर लोग ठंड से बचने के लिए अलाव का सहारा लिए बैठे रहे। वहीं कई लोग चाय की चुस्की लेकर ठंड को भगाने का प्रयास करते दिखे। चाय की दुकानों पर निकाय चुनाव से लेकर राजनीति पर चर्चा होती नजर आई तो वहीं युवतियां अपने भविष्य को लेकर चिंतित दिखीं।

मारिशन मेमोरियल चर्च के पास चाय की गुमटी पर लोगों की भीड़ दिखाई दी। यहां लोग चाय की चुस्की ले रहे थे तो कुछ लोग चाय बनने का इंतजार कर रहे थे। यहां एक युवक अपने साथी से यूपी कैडर के आईपीएस आफिसर प्रभाकर चौधरी के बारे में बता रहा था कि चौधरी की कार्यशैली के कारण उनका कई बार तबादला हो चुका है।

यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने कांवड़ियों पर लाठी चार्ज के मामले में चौधरी

का ट्रांसफर किया था। वहीं दुकान पर कड़े चार युवक ठंड के बारे में बात कर रहे थे। उनमें से एक ने बताया कि तीन गद्दे नए लेकर आए हैं। सात लोग कमरे में रह रहे हैं। वहीं नजदीक स्थित दुकान में एक व्यक्ति अपने साथियों को बता रहा था कि आज खरोड़े का सूप बनाया है। राजपुर रोड पर हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, यूपी, दिल्ली और पंजाब के नंबर की गाड़ियां सबसे अधिक दिखी। नया साल का जश्न मनाने के लिए पर्यटक भी अच्छी संख्या में दून पहुंचे हैं।

सर्वे चौक में सर्वेयर नैन सिंह रावत की मूर्ति के पास कोचिंग से छूटी लड़कियां घर जाने के लिए सवारी का इंतजार करती दिखीं। यहां पर अलाव से हल्का धुंआ निकल रहा था। कुछ देर बाद एक व्यक्ति ने आग जलाई तो आस-पास खड़े लोग भी आग सेंकने पहुंच गए।

नैनीताल से घूमकर लौट रहे मुंबई के पर्यटकों से भरा टेंपो ट्रैवलर बीच सड़क पर पलटा, पांच घायल

नैनीताल, एजेंसी। नैनीताल से घूमकर लौट रहे मुंबई के पर्यटकों से भरा टेंपो ट्रैवलर प्रिया बैंड के पास अनियंत्रित होकर बीच सड़क पर पलट गया। घायलों को राहगीरों और पुलिस ने कालाढूंगी अस्पताल पहुंचाया। पांच पर्यटकों को प्रारंभिक इलाज के बाद छुट्टी दे दी गई।

नैनीताल से घूमकर लौट रहे मुंबई के पर्यटकों से भरा टेंपो ट्रैवलर प्रिया बैंड के पास अनियंत्रित होकर बीच सड़क पर पलट गया। घायलों को राहगीरों और पुलिस ने कालाढूंगी अस्पताल पहुंचाया। पांच पर्यटकों को प्रारंभिक इलाज के बाद छुट्टी दे दी गई। ट्रैवलर में परिवार के 15 लोग और एक चालक था। शुक्रवार को नगर से पांच किलोमीटर दूर कालाढूंगी-नैनीताल मोटर मार्ग पर प्रिया बैंड के पास तीव्र मोड़ पर टेंपो ट्रैवलर अनियंत्रित होकर सड़क पर पलट गया। टेंपो ट्रैवलर पलटते ही उसमें सवार 16 यात्रियों में चीखपुकार मच गई।

राहगीरों ने पुलिस को घटना की जानकारी दी। पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से पांच घायलों को निजी वाहनों से अस्पताल पहुंचाया। थानाध्यक्ष पंकज जोशी ने बताया कि हादसे में राजेश्री घोड़के, प्रमोद घोड़के, साहीली घोड़के, हदया घोड़के, सरिता घोड़के घायल हो गए। घायलों को प्राथमिक इलाज के बाद छुट्टी दे दी गई। चालक ने बताया की गाड़ी के ब्रेक फेल हो गये थे। टेंपो ट्रैवलर में सवार सभी 15 सदस्य ठाणे निवासी घोड़के परिवार के सदस्य थे।

चालक प्रताप राणा ने बताया कि प्रिया बैंड मोड़ से आधा किलोमीटर पहले गाडी को ठंडी करने के लिए रोका था। इसके बाद से वह गाड़ी को धीरे-धीरे ला रहा था। तभी ब्रेक ने काम करना बंद कर दिया। इसके बाद चालक ने एक मोड़ काटने के बाद समझदारी दिखाते हुए वाहन को तीव्र मोड पर पलटा दिया। वाहन अगर खाई की ओर गिरता तो बड़ा नुकसान हो सकता था।

पिरान कलियर में शौचालयों की स्थिति बदहाल

रूड़की, एजेंसी। दरगाह क्षेत्र के शौचालयों में गंदगी फैली है। शुक्रवार सुबह रिमझिम बारिश से और गंदगी फैल गई । पर ताला लटका नजर आया। इससे जायरीनों को परेशानी का सामना करना पड़ा। दरगाह क्षेत्र में जायरीन की सुविधा के लिए कई सार्वजनिक शौचालय बनाए गए हैं। इन शौचालयों का संचालन आमतौर पर दरगाह प्रबंधन की ओर से ठेकेदार को सौंपा जाता है। ठेकेदार साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखता है लेकिन इस बार अब तक शौचालयों का ठेका नहीं हुआ है। एक शौचालय बंद पड़ा है और कुछ को दरगाह कर्मचारियों की ओर से चलाया जा रहा है। सफाई कर्मचारियों की लापरवाही के चलते शौचालयों की स्थिति बेहद खराब है। इससे जायरीनों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वहीं, जनवरी में अजमेर शरीफ में ख्वाजा गरीब नवाज का सालाना उर्स शुरू होने वाला है। अजमेर शरीफ के उर्स में जाने वाले अधिकांश जायरीन पहले पिरान कलियर दरगाह साबिर पाक में जियारत करने के लिए आते हैं। ऐसे में इन दिनों पिरान कलियर में भी जायरीन की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है। वहीं दरगाह प्रबंधक रजिया का कहना है कि शौचालयों के ठेकों की नीलामी के लिए टेंडर निकाला था। उनपर रेट कम आए थे। इस कारण उनका ठेका नहीं छोड़ा गया था। आचार संहिता के बाद दोबारा नीलामी की जाएगी। फिलहाल दरगाह कर्मचारियों की और से शौचालयों की देखरेख की जा रही है।

नरेंद्र नेगी को भाजपा ने घोषित किया अध्यक्ष पद का प्रत्याशी

ऋषिकेश, एजेंसी। कई बार ग्राम प्रधान रह चुके भाजपा के मंडल अध्यक्ष नरेंद्र सिंह नेगी को भाजपा ने डोईवाला नगर पालिका अध्यक्ष पद पर अपना प्रत्याशी घोषित कर दिया है। नरेंद्र नेगी को सभी के साथ सामजंस्य बिठाकर काम करने का इनाम मिला है। कन्हरवाला के ग्राम प्रधान रह चुके और वर्तमान में डोईवाला भाजपा मंडल अध्यक्ष नरेंद्र सिंह नेगी भाजपा के उम्मीदवार घोषित कर दिए गए हैं। नरेंद्र सिंह नेगी सभी गुटों में अपनी सक्रियता से टिकट हासिल करने में कामयाब हुए हैं।

पीलीभीत एनकाउंटर : अतीत में खालिस्तान आतंक की काली यादों का दर्द समेटे ऊधमसिंह नगर, आतंकी वारदातों से दहलता था

रुद्रपुर, एजेंसी। खालिस्तान आतंकवाद जिले से अविभाजित यूपी के समय खत्म हो गया, मगर खालिस्तान को लेकर हमदर्दी रखने वाले कभी-कभार सोशल मीडिया पर सक्रिय रहते आए हैं।

पीलीभीत में मुठभेड़ में तीन आतंकियों के मारे जाने के बाद ऊधमसिंह नगर में यूं ही सतर्कता नहीं बरती जा रही है। इसके पीछे अतीत में 90 के दशक में हुई आतंकी घटनाओं की काली यादें जुड़ी हैं। अविभाजित यूपी के जमाने में चार साल तक जिला खालिस्तानी आतंकी घटनाओं से दहलता रहा था। यहां पंजाब से भागे खूंखार आतंकी सहित कई आतंकियों का खात्मा हुआ। वहीं कई पुलिसकर्मियों को जान गंवानी पड़ी थी।

आतंकियों के सफाए के बाद फिर से आतंकी सिर नहीं उठा सके, लेकिन खालिस्तान के हमदर्द की सक्रियता सोशल मीडिया में सामने आती रही है। पीलीभीत की घटना के बाद पुलिस के साथ ही खुफिया एजेंसियां सक्रिय हैं।

दरअसल, अविभाजित यूपी के हिस्से और नैनीताल जिले में शामिल ऊधमसिंह नगर में वर्ष 1989 में खालिस्तानी आतंकियों की गतिविधियां शुरू हुई थी। पंजाब से बड़ी संख्या में आतंकियों ने जिले के जंगलों में शरण ली थी और आतंक फैलाना शुरू किया था। सबसे बड़ी घटना 17 अक्तूबर 1991 को रुद्रपुर में घटी थी। यहां पर खालिस्तान नेशनल आर्मी ने दो जगहों पर बम विस्फोट किए थे। इनमें 41 लोगों की मौत हुई थी जबकि 140 लोग घायल हुए थे।

खालिस्तानी आतंक को करीब से देखने वाले रिटायर्ड डीएसपी जेसी पाठक बताते हैं कि पीलीभीत जिले से लगा होने की वजह से खटीमा बेहद संवेदनशील था। वर्ष 1990 में मझोला चौकी में वह इंचार्ज थे। चौकी में बीएसएफ, सीआरपीएफ और एसटीएफ की एक-एक कंपनी रहती थी। वर्ष 1991 में श्रीपुर विचुआ गांव में पंजाब से फरार 50 लाख के

आतंकी यादवेंद्र उर्फ याद मारा गया था। वहां से भागा उसका साथी चलविंदर उर्फ बिंदा जसपुर में मारा गया था। सितारगंज में शक्तिफार्म चौकी प्रभारी केजी शर्मा सहित छह, गदरपुर में एसओ जगमोहन उपाध्याय सहित पांच, रुद्रपुर में दो पुलिसकर्मियों की हत्याएं हुई थीं। इसके अलावा कई जगहों पर स्थानीय लोगों की हत्याएं भी आतंकियों ने की थी।

बताते है कि अतीत की घटनाओं के बाद जिले में खालिस्तानी आतंकी सक्रिय नहीं हुए थे, लेकिन उनके हमदर्द किसी न किसी रूप में सक्रिय रहते हैं। इसी वजह से जिले को संवेदनशील माना जाता रहा है। युवाओं को समझना चाहिए कि ऐसी गतिविधियों में शामिल रहने या ऐसे लोगों के संपर्क में रहकर सिर्फ भविष्य ही खराब होता है।

जिले में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, 16 लाख 48 हजार आबादी है। इनमें सिखों की आबादी करीब दस फीसदी है। सबसे अधिक बाजपुर, किच्छा, नानकमत्ता, सितारगंज, रुद्रपुर व गदरपुर में सिख आबादी है। इनका प्रमुख व्यवसाय खेतीबाड़ी है।

पीलीभीत की घटना के बाद पुलिस के साथ ही खुफिया एजेंसियां सक्रिय हैं। संदिग्ध गतिविधियों वाले लोगों पर नजर रखी जा रही है। इसके साथ ही पुलिस टीम सोशल मीडिया पर भी नजर रखे हुए है। खासतौर पर पीलीभीत से सटे खटीमा, नानमकत्ता, सितारगंज, बालपुर, रुद्रपुर, मदरपुर में खुफिया विभाग सक्रिय है।

खालिस्तान आतंकवाद जिले से अविभाजित यूपी के समय खत्म हो गया, मगर खालिस्तान को लेकर हमदर्दी रखने वाले कभी-कभार सोशल मीडिया पर सक्रिय रहते आए हैं। वर्ष 2018 से 2021 तक खटीमा, रुद्रपुर, दिनेशपुर, नानकमत्ता, काशीपुर में प्रतिबंधित खालिस्तानी संगठनों को लेकर पोस्ट करने के मामले सामने आए थे। इनमें गिरफ्तारियों के साथ ही चालानी व काउंसलिंग की कार्रवाई भी की गई थी। हालांकि वर्ष 2021 के बाद से ऐसे कोई मामले नहीं हैं।

‘आप’ महिला विंग ने महिला वोटरों में खुलेआम पैसे बांट रहे भाजपा नेता प्रवेश वर्मा के घर पर दूसरे दिन भी बोला हल्ला

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी की महिला विंग ने खुलेआम महिला वोटरों में पैसे बांट रहे भाजपा नेता के घर पर रविवार को भी हल्ला बोला। प्रवेश वर्मा के घर के बाहर बड़ी तादात में महिलाएं एकत्र हुई और सिर्फ नई दिल्ली विधानसभा की महिलाओं में पैसे बांटने के खिलाफ जमकर विरोध प्रदर्शन किया। इस विरोध प्रदर्शन में दिल्ली के अलग - अलग इलाकों से महिलाएं आई थी। महिलाओं ने प्रवेश वर्मा द्वारा केवल नई दिल्ली विधानसभा क्षेत्र की महिलाओं को पैसे बांटने को गलत बताया और कहा कि अगर एनजीओ के जरिए यह पैसे बांटे जा रहे हैं तो इस पर सबका हक है। फिर दिल्ली की सारी महिलाओं को पैसे मिलने चाहिए। बता दें कि महिला विंग ने शनिवार को भी प्रवेश वर्मा के घर के बाहर प्रदर्शन कर नई दिल्ली विधानसभा की महिलाओं में पैसे बांटने का विरोध किया था। एक महिला कार्यकर्ता ने कहा कि मैं करावल नगर से आई हूं। मुझे पता चला कि प्रवेश वर्मा 1100 रुपए दे रहे हैं। इसलिए हम दिल्ली के कोने-कोने से 1100 रुपए लेने के लिए आए हुए हैं। प्रवेश वर्मा सिर्फ नई दिल्ली में पैसे क्यों बांट रहे हैं ? उन्हें पूरी दिल्ली में महिलाओं को पैसे देने चाहिए। एक दूसरी महिला कार्यकर्ता ने कहा कि मैं भी 1100 रुपए लेने के लिए आई

हूं। हम भी दिल्ली की निवासी हैं। हमें भी हक है। हमें भी 1100 रुपए चाहिए। एक अन्य महिला कार्यकर्ता ने कहा कि मैं एक सीनियर सिटीजन हूं और मैं लक्ष्मी नगर से आई हूं। मैं चाहती हूं कि मुझे भी 1100 रुपए मिले और उसके बाद जो वह 2500 रुपए का वादा कर रहे हैं, वह भी मिलें। सिर्फ नई दिल्ली की महिलाओं को क्यों पैसे दिए जा रहे हैं। जबकि पूरी दिल्ली की महिलाओं को पैसे की जरूरत है। इसलिए हम चाहते हैं कि हमें भी 1100 रुपए मिलें। मरियम सिद्दीकी नाम की कार्यकर्ता ने कहा कि मैं यहां अपने भैया प्रवेश वर्मा से पैसे लेने आई हूं। मैं एक वायरल वीडियो देखा कि प्रवेश वर्मा महिलाओं को 1100 रुपए बांट रहे हैं। मुझे मेरे बच्चे की फीस भरनी है। मैं जरूरतमंद हूं। इसलिए मैं प्रवेश भैया से पैसे लेने आई हूं। आज रविवार का दिन है और इस दिन बहनें अपने भाई के घर जाती हैं। इसलिए हम अपने भाई के घर आए हैं। नंदा मोहन नाम की महिला ने कहा कि हमने टीवी में देखा कि प्रवेश वर्मा पैसे बांट रहे हैं। इसे देखकर ही हम यहां आए हैं ताकि हमें भी पैसे मिल सकें। क्योंकि उन्होंने यह कहा है कि यह किसी पार्टी से संबंधित नहीं है। एनजीओ से पैसे बांटे जा रहे हैं। तो एनजीओ पर सबका हक होता है। इसलिए हमें भी पैसे चाहिए। एक अन्य महिला कार्यकर्ता ने कहा कि मैं भी यहां 1100 रुपए लेने के लिए आई हूं। मैं अपना पहचान पत्र भी लेकर आई हूं। मेरा दिल्ली का पहचान पत्र है। अगर वह 1100 रुपए दे रहे हैं तो उन्हें सभी को रुपए देने चाहिए। वरना किसी को भी नहीं दो।

15 दिनों में ही मेरी विधानसभा से 5 हजार से ज्यादा वोट कटवाने के एप्लीकेशन दिए गए : केजरीवाल

दिल्ली में भाजपा अपनी हार मान चुकी है। इसलिए अलग-अलग हथकंडे अपना कर किसी भी हालत में चुनाव जीतना चाहती है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मेरी विधानसभा नई दिल्ली इलाके में बीते 15 दिनों में ही अभी तक 5 हजार से ज्यादा वोट कटवाने के एप्लीकेशन दिए गए हैं और 10 हजार से ज्यादा नए वोट जोड़ने के एप्लीकेशन भी दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि 1 लाख 6 हजार वोट कुल नई दिल्ली विधानसभा में मौजूद हैं।

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भाजपा पर बड़ा आरोप लगाया है। उन्होंने कहा है कि भाजपा हर हाल में चुनाव जीतना चाहती है। इसलिए लगातार वोट कटवाने के एप्लीकेशन डाले जा रहे हैं। इसके साथ-साथ नए वोट जोड़ने के भी एप्लीकेशन दिए जा रहे हैं। जिनका कोई अता-पता नहीं है।

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि भाजपा के पास ना कोई सीएम का चेहरा है और ना ही कोई उम्मीदवार। दिल्ली में भाजपा अपनी हार मान चुकी है। इसलिए अलग-अलग हथकंडे अपना कर किसी भी हालत में चुनाव जीतना चाहती है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मेरी विधानसभा नई दिल्ली इलाके में बीते 15 दिनों में ही अभी तक 5 हजार से ज्यादा वोट कटवाने के एप्लीकेशन दिए गए हैं और 10 हजार से ज्यादा नए वोट जोड़ने के एप्लीकेशन भी दिए गए हैं। उन्होंने

बताया कि 1 लाख 6 हजार वोट कुल नई दिल्ली विधानसभा में मौजूद हैं। 29 अक्टूबर से 14 दिसम्बर तक सिर्फ 900 वोट डिलीट के लिए एप्लीकेशन आए थे और 15 दिसंबर से अभी तक 5 हजार वोट डिलीट करने के लिए भाजपा ने एप्लिकेशन डाली है। जबकि 29 अक्टूबर को चुनाव आयोग ने समरी रिवीजन के बाद वोटर लिस्ट जारी की थी। 2 महीना चुनाव आयोग घर-घर जाकर रिवीजन का काम करता है तो उसके बाद यह एप्लीकेशन क्यों आ रही है। उन्होंने कहा कि वोट तो नागरिकता का प्रमाण है। ऐसे में वोट डिलीट करने की एप्लीकेशन से उनको मिलने वाले लाभ से लोगों को वंचित किया जा रहा है। अरविंद केजरीवाल ने बताया कि जब भी किसी विधानसभा इलाके में 2 प्रतिशत से ज्यादा वोट डिलीट करने की एप्लीकेशन आती है तो वह फाइल बीएलओ के पास से सीधे रिटर्निंग ऑफिसर को चली जाती है और रिटर्निंग ऑफिसर उनका मुआयना कर फैसला लेता है। ऐसे ही अगर वोट जोड़ने की भी 4 प्रतिशत से ज्यादा एप्लीकेशन आती है तो उसका भी सर्वे होता है। अरविंद केजरीवाल ने आरोप लगाया कि भाजपा हरियाणा के फर्जी वोटरों के वोट जुड़वाकर उन्हें वोट देने के लिए तैयार कर रही है और एक-एक घर से 15-15, 22-22 वोटों को जोड़ने की एप्लीकेशन आ रही है।

अरविंद केजरीवाल ने आरोप लगाया है कि भाजपा तीन हथकंडे अपना रही है। जिसमें पहला वोट कटवाने का, दूसरा फर्जी वोट जुड़वाने का और तीसरा पैसे बांटकर वोट खरीदने का। इन हथकंडों के जरिए भाजपा लगातार हारे हुए चुनाव को जीतने का प्रयास कर रही है।

संक्षिप्त खबरें

सात बांग्लादेशियों को पकड़कर भेजा गया वापस

नई दिल्ली। दक्षिणी जिला पुलिस ने अवैध रूप से दिल्ली में रह रहे बांग्लादेशियों पर नकेल कसने की कड़ी में सात को पकड़कर वापस बांग्लादेश भेजा है। पकड़े गए इन बांग्लादेशियों में पांच महिलाएं शामिल है। पुलिस उपायुक्त अंकित चौहान ने बताया कि दिल्ली के उपराज्यपाल के निदेर्शों के तहत जिले में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशियों को पकड़कर वापस भेजने के लिए लगातार अभियान चलाया जा रहा है। इसके लिए अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त अचिन गर्ग के देखरेख में टीम बनाई गई है। इसी कड़ी में 28 दिसंबर को गुप्त सूचना के बाद सातों अवैध बांग्लादेशी नागरिकों को अर्जनगढ़ मेट्रो स्टेशन के पास गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में उन्होंने बताया कि वे अवैध तरीके से बांग्लादेश से भारत आए थे। उनके मोबाइल की जांच की गई तो बांग्लादेशी नागरिकता के पहचान पत्र और मोबाइल नंबर भी मिले। इसके बाद टीम ने उनकी पहचान मोहम्मद उमर फारुक और रियाज मियां उर्फ रेमन खान व पांच महिलाओं के रूप में की और सभी औपचारिकताएं पूरी करते हुए वापस बांग्लादेश भेजा गया। इसके अलावा अन्य की पहचान के लिए पुलिस स्थानीय सूत्रों व अन्य की मदद ले रही है। पकड़े गये बांग्लादेशियों के नागरिकता के पहचान दस्तावेजों की पुष्टि के बाद उन्हें दिल्ली के आरके पुरम स्थित एफआरआरओ के समक्ष पेश करने के बाद इन्हें इंद्रलोक स्थित डिटेंशन सेंटर भेजा गया। उसके बाद वहां से उन्हें बांग्लादेश भेजा दिया गया।

हत्या मामले में सजायाफ्ता तीन साल बाद गिरफ्तार

नई दिल्ली। क्राइम ब्रांच ने अपहरण-हत्या के मामले में दोषी पैरोल जंपर अजय कुमार त्रिपाठी को तीन साल बाद मुंबई से गिरफ्तार किया है। वह नाम बदलकर ऑनलाइन फूड डिलीवरी कंपनी में नौकरी कर रहा था। डीसीपी संजय कुमार सैन ने बताया कि वर्ष 2000 में भजनपुरा इलाके में नीरज नाम के बच्चे की फिरौती न देने पर अपहरण के बाद हत्या कर दी गई थी। इस मामले में गिरफ्तार आरोपी अजय कुमार को कड़कड़डूमा कोर्ट ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी। इस बीच वर्ष 2010 में पैरोल मिलने पर अजय बाहर आया, लेकिन अवधि खत्म होने पर भी वापस नहीं लौटा था। इसके बाद आगरा पुलिस ने 2015 में अजय को गिरफ्तार कर लिया था। जुलाई 2021 में दिल्ली हाईकोर्ट द्वारा पैरोल मिलने पर वह बाहर आया, लेकिन वापस नहीं लौटा था। इसके बाद से वह फरार था।

तेज रफ्तार बस की चपेट में आने से एएसआई घायल

नई दिल्ली। कश्मीरी गेट इलाके में शुक्रवार सुबह तेज रफ्तार बस ने बैरिकेड में टक्कर मार दी। इस दौरान बैरिकेड पर खड़े एएसआई इसकी चपेट में आ गए। उन्हें ट्रॉमा सेंटर में भर्ती किया गया है। वहीं, पुलिस ने बस जब्त कर आरोपी चालक को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के अनुसार, शुक्रवार सुबह करीब पांच बजे मेट्रो गेट संख्या छह के पास बैरिकेड लगाकर पुलिसकर्मी जांच कर रहे थे। इसी दौरान शास्त्री पार्क की तरफ से तेज रफ्तार बस आ रही थी। पुलिसकर्मियों द्वारा रुकने का इशारा करने के बाद भी चालक ने बैरिकेड में टक्कर मार दी। हादसे में एएसआई भरतवीर घायल हो गए।

दिल्ली में बच्चे की हत्या का आरोपी मुंबई से गिरफ्तार

नई दिल्ली। भजनपुरा थाने में दर्ज फिरौती के लिए अपहरण और हत्या के दोषी पैरोल जंपर को मुंबई में एक घनी आबादी वाले इलाके से क्राइम ब्रांच की टीम ने गिरफ्तार किया है। आरोपित ने 2010 में भी पैरोल जंप किया था और उसके बाद पांच साल तक फरार रहा। उसकी पहचान आगरा के गांधी नगर निवासी अजय कुमार त्रिपाठी के रूप में हुई है, जो अपना नाम और पहचान बदलकर जोमैटो में डिलीवरी बॉय के तौर पर काम कर रहा था। क्राइम ब्रांच के उपायुक्त के मुताबिक, आरोपित अजय ने भजनपुरा से एक बच्चे नीरज का फिरौती के लिए अपहरण किया था।

स्वाति मालीवाल ने खोला स्वास्थ्य विभाग के खिलाफ मोर्चा, अव्यवस्था पर उठाए सवाल

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी की पूर्व नेता और दिल्ली महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष स्वाति मालीवाल ने आम आदमी पार्टी के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। वह अपने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए दिल्ली की अव्यवस्थाओं पर सवाल उठाती दिखाई दे रही हैं। बारिश के बाद कभी वह जल भराव पर निशाना साधती हैं तो कभी अस्पतालों की हालत पर।

इसी कड़ी में स्वाति मालीवाल ने एक बार फिर अस्पताल का दौरा कर वहां की अव्यवस्थाओं पर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने अपने सोशल मीडिया पोस्ट में एक वीडियो के साथ लिखा, दिल्ली के इहबास अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। लोग घंटों घंटों दवा लेने के लिए अस्पताल के बाहर सड़क पर ठंड में सोते हैं।

सुबह काउंटर खुलता है, भीड़ अंदर किसी तरह पहुंचती है तो दवा नहीं मिलती। इस अस्पताल के बाहर मुझे 70-80 साल के बुजुर्ग और महिलाएं ठंड में ठिठुरते हुए मिले। ये है बुजुर्गों और महिलाओं का सम्मान ? ना टॉयलेट साफ है, ना पीने को पानी मिलता है। सोशल मीडिया, रील और प्रेस कॉन्फ्रेंस में सब कुछ अच्छा दिखता है। हकीकत देखने की ना नियत है ना हिम्मत। स्वाति मालीवाल ने इससे पहले भी दिल्ली में हुई बरसात के बाद जलभराव पर आम आदमी पार्टी पर निशाना साधा था।

उन्होंने द्वारका और विकासपुरी इलाके में जलभराव के वीडियो को साझा किया था और लिखा था कि एक दिन की बारिश से इन इलाकों के हालात बद से बदतर हो गए हैं। गौरतलब है कि स्वाति मालीवाल आम आदमी पार्टी की तरफ से राज्यसभा सांसद भी हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री आवास में विभव कुमार के साथ हुई तथाकथित मारपीट के बाद से ही आम आदमी पार्टी से अपना अलगाव कर लिया था और उसके बाद वह लगातार आम आदमी पार्टी के खिलाफ मोर्चा खोलकर खड़ी दिखाई दे रही हैं।

बारिश के बाद दिल्ली की हवा हुई फिर से बहुत खराब, एक्यूआई 200 पार

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में पिछले दो-तीन दिनों में भारी बारिश के बाद हवा की गुणवत्ता में थोड़ा सुधार देखने को मिला था। लेकिन, अब दिल्ली की हवा फिर से ह्यबहुत खराबह्ण श्रेणी में पहुंच गई है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार, रविवार सुबह 7 बजे दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 223 दर्ज किया गया। सुबह के समय शहर में हल्की धुंध रही और न्यूनतम तापमान 12 डिग्री सेल्सियस तक गिर गया।

सीपीसीबी के आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में एक्यूआई कुछ इस प्रकार थाः ओखला फेज 2 में 245, अलीपुर में 202, रोहिणी में 271, आईटीओ में 243, अशोक विहार में 251, शादीपुर में 222, मुंडका में 270,

जहांगीरपुरी में 288, नरेला में 191, डीटीयू में 140, आर.के. पुरम में 252, आनंद विहार में 287, पूसा में 238 और पंजाबी बाग में 214। शनिवार को हुई बारिश के कारण कुछ समय के लिए हवा की गुणवत्ता में सुधार हुआ था। लेकिन, अब फिर से यह स्वास्थ्य के लिए खतरे वाली श्रेणी में आ गई। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के अनुसार, पिछले 24 घंटों में दिल्ली में 41.2 मिमी बारिश हुई, जो 101 सालों में दिसंबर महीने की एक दिन की सबसे अधिक बारिश है। केंद्र सरकार के वायु गुणवत्ता निगरानी पैनल ने शुक्रवार को लगातार बारिश और अच्छे मौसम की स्थिति को देखते हुए वायु गुणवत्ता प्रबंधन योजना (ग्रैप) के चरण ककक के उपायों को हटाने का निर्णय लिया। ये प्रतिबंध 16 दिसंबर को लगाए गए थे। बारिश के बाद थोड़ी राहत मिली, लेकिन फिर से बहुत खराब एक्यूआई का बढ़ना सर्दियों के दौरान वायु गुणवत्ता से जुड़ी समस्याओं को दर्शाता है। सीपीसीबी का एक्यूआई पैमाना अच्छा (0–50) से लेकर गंभीर प्लस (450 से ऊपर) तक होता है। अधिकारियों ने आम लोगों से बाहरी गतिविधियों को कम करने और सर्दी बढ़ने के साथ सतर्क रहने की सलाह दी है। साथ ही वायु गुणवत्ता की निरंतर निगरानी और निवारक उपायों की आवश्यकता पर जोर दिया है।

दिल्ली में महिला सम्मान और संजीवनी योजना की आड़ में ठगी, पुलिस में शिकायत दर्ज

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। महिला सम्मान और संजीवनी योजना के नाम पर महिलाओं और अन्य लोगों से निजी जानकारी और ओटीपी लेकर ऑनलाइन ठगी के मामले में रोहिणी जोन के पूर्व चेयरमैन मनीष चौधरी ने रोहिणी जिला पुलिस उपायुक्त अमित गोयल व विजय विहार एसएचओ अजय कुमार यादव को लिखित में शिकायत देकर कार्रवाई की मांग की है।

मनीष चौधरी का आरोप है कि रिठाला विधानसभा में कई जगहों पर ऑनलाइन फार्म भरने के नाम पर ओटीपी लिए जा रहे हैं। लोगों से शिकायत मिल रही है कि कुछ लोग इस योजना की आड़ में लोगों से ऑनलाइन ठगी कर रहे हैं। कई महिलाओं से निजी जानकारियों के साथ-साथ ओटीपी के माध्यम से फोन का भी एक्सेस लिया जा रहा है। चौधरी ने कहा कि लोगों की शिकायत मिल रही है कि कुछ लोग जब से ऑनलाइन फार्म भरे हैं, उसे भी ऑनलाइन ठगी का डर बना हुआ है। वहीं, कई ऐसे लोग भी इन फॉर्मो को भर रहे हैं, जिनका समाज में काफी खराब छवि है। इन्होंने एसएचओ विजय विहार व डीसीपी रोहिणी से मांग की है कि जब तक सरकार की ओर से अधिकृत योजना ना आए, तब तक इस तरह की गतिविधियों पर रोक लगाएं। वहीं, लोगों के साथ जालसाजी न हो, इसको लेकर कार्रवाई की जाए।

दिल्ली परिवहन विभाग ने केजरीवाल के आरोपों को बताया भ्रामक

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली के परिवहन विभाग के अपर मुख्य सचिव (एसीएस) प्रशांत गोयल ने मुख्यमंत्री आतिशी को एक आधिकारिक पत्र लिखकर पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के दावों को खारिज कर दिया है। पत्र में कहा गया है कि केजरीवाल द्वारा किए गए दावे, जिसमें उन्होंने यह आरोप लगाया था कि महिला मुफ्त बस यात्रा योजना के मामले में मुख्यमंत्री आतिशी के खिलाफ जांच चल रही है, उनकी गिरफ्तारी हो सकती है, पूरी तरह से भ्रामक और गलत हैं।

प्रशांत गोयल ने अपने पत्र में स्पष्ट किया कि परिवहन विभाग ने ऐसा कोई भी जांच आदेश जारी नहीं किया है और न ही इस संबंध में सतर्कता विभाग (विजिलेंस डिपार्टमेंट) से कोई सूचना प्राप्त हुई है। उन्होंने कहा कि यह दावा तथ्यात्मक रूप से गलत और गुमराह करने वाला है। उन्होंने पत्र में लिखा, ह्यपरिवहन

विभाग द्वारा ऐसी कोई जांच न तो शुरू की गई है और न ही विचाराधीन है। इसके अलावा, सतर्कता विभाग से भी इस मामले में कोई संवाद नहीं हुआ है। अतः इस प्रकार के दावे पूरी तरह से निराधार और भ्रामक हैं।ह्ण यह पत्र 26 दिसंबर 2024 को जारी किया गया, जिसमें प्रशांत गोयल ने मुख्यमंत्री आतिशी को संबोधित करते हुए स्थिति स्पष्ट की। पत्र की एक प्रति मुख्य सचिव और सतर्कता विभाग को भी भेजी गई है। बता दें कि पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने हाल ही में सोशल मीडिया और टेलीविजन पर बयान दिया था, जिसमें उन्होंने आरोप लगाया था कि महिला मुफ्त बस यात्रा योजना के तहत मुख्यमंत्री आतिशी के खिलाफ जांच चल रही है। इस बयान को राजनीतिक स्टंट और ड्रामा बताते हुए प्रशांत गोयल ने इसे सिरे से खारिज कर दिया। विशेषज्ञों का मानना है कि यह घटनाक्रम दिल्ली की राजनीति में नए विवाद को जन्म दे सकता है। यह भी स्पष्ट हो रहा है कि केजरीवाल का बयान तथ्यों पर आधारित नहीं था, जिसे अब आधिकारिक तौर पर खारिज कर दिया गया है। मुख्यमंत्री आतिशी और उनकी सरकार ने अभी तक इस पत्र पर कोई सार्वजनिक प्रतिक्रिया नहीं दी है, लेकिन प्रशांत गोयल द्वारा लिखे गए इस पत्र ने केजरीवाल के आरोपों की सच्चाई पर सवाल खड़े कर दिए हैं। दिल्ली की राजनीति में इस मामले ने हलचल मचा दी है, और यह देखना दिलचस्प होगा कि आने वाले दिनों में इस पर और क्या प्रतिक्रियाएं सामने आती हैं।

जनता को दस साल के भ्रष्टाचार का जवाब दें केजरीवालः वीरेन्द्र सचदेवा

नई दिल्ली। दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने रविवार को कहा है कि दिल्ली की जनता अरविंद केजरीवाल एवं उनकी पार्टी की दिल्ली से राजनीतिक विदाई करने का मन बना चुकी है। उनके लिए बेहतर होगा कि वह अब भाजपा के विजन एवं मुख्यमंत्री चेहरे की चिंता छोड़कर दिल्ली की जनता के सवालों का जवाब दें। सचदेवा ने कहा कि केजरीवाल अपने दस साल के भ्रष्टाचार का जवाब जनता को दें। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा कि दिल्ली की जनता ने दस साल में केजरीवाल के विजन के अनेक नमूने देखे हैं। दिल्ली को दस साल में एक नया स्कूल, कालेज, अस्पताल ना देकर, कोई बड़ा विकास प्रोजेक्ट ना देकर, प्रदूषण बदतर करके एवं सार्वजनिक परिवहन ठप करके केजरीवाल ने दर्शा दिया है कि उनके पास कोई विकास विजन नही है। उन्होंने कहा कि लोगों के लिए काम करने की जगह केजरीवाल ने शराब घोटाले के साथ ही शीशमहल का अवैध निर्माण किया।

बैठक — अरविंद केजरीवाल के मार्गदर्शन में सरकारी स्कूलों में गुणवत्तायुक्त शिक्षा और अस्पतालों में अच्छा इलाज दिल्लीवासियों के लिए निरंतर जारी रहेगा- इमरान हुसैन

क्या मेरी धर्मपत्नी रोहिंग्या घुसपैठिया है, जो उनका वोट काटने का आवेदन दिया, संजय सिंह का भाजपा पर हमला

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली, 29 दिसंबर (वेब वार्ता)। आम आदमी पार्टी ने भाजपा पर वोटर लिस्ट में छेड़छाड़ करने का आरोप लगाया है। आम आदमी पार्टी का दावा है कि भाजपा ने आम आदमी पार्टी सांसद संजय सिंह की पत्नी अनीता सिंह का वोट काटने का आवेदन दिया है। बता दें कि संजय सिंह का परिवार नई दिल्ली विधानसभा में रहता है।

आप सांसद संजय सिंह ने कहा कि संसद में मैंने भाजपा द्वारा यूपी, बिहार और झारखंड के पूर्वांचल समाज के लोगों के वोट कटवाने की बात कही और इसे जेपी नड्डा ने माना भी। अब भाजपा ने मेरी धर्मपत्नी अनीता सिंह का जोकि नई दिल्ली विधानसभा की वोटर हैं, उनका वोट कटवाने की एप्लीकेशन दे दी। संजय सिंह ने कहा कि मेरी धर्मपत्नी अनीता सिंह पूर्वांचल की रहने वाली हैं और भाजपा वालों ने इनका वोट कटवाने की एप्लीकेशन दो बार दी है। भाजपा हरियाणा और महाराष्ट्र की तरह चुनावी घोटाला करके दिल्ली में भी चुनाव जीतना चाहते हैं। भाजपा सांसद मनोज तिवारी से मैं पूछना चाहता हूं कि पूर्वांचल की रहने वाली मेरी धर्मपत्नी क्या रोहिंग्या घुसपैठिया हैं, जो उनका वोट काटने की एप्लीकेशन दी गई है ?

वहीं, अरविंद केजरीवाल ने कहा कि भाजपा दिल्ली चुनाव में अपनी हार मानकर, बेईमानी पर उतर आई है। दिल्ली में भाजपा के पास ना ही उम्मीदवार हैं और ना ही मुख्यमंत्री का चेहरा है। अब भाजपा बेईमानी करके चुनाव जीतने की कोशिश कर रही है, वो वोट कटवाने की साजिश रच रही है। दिल्ली के पूर्वी सीएम ने कहा कि नई दिल्ली विधानसभा में भाजपा की वोट कटवाने की

गंदी साजिश हुई पकड़ी गई है। 15 दिनों में भाजपा ने हजारों वोट कटवाने की एप्लीकेशन दी है। मतदाताओं के वोट कटवाकर भाजपा लोगों से उनके देश के नागरिक होने का अधिकार छीन रही है। जब चुनाव आयोग ने दो महीने तक घर-घर जाकर वोट बनाये तो अब 15 दिनों में हजारों लोग कहां से आ गए, जिनके वोट बनवाये जा रहे हैं। भाजपा बाहर से लोगों को ला रही है, जिनके फर्जी वोट बनवाये जा रहे हैं। केजरीवाल ने कहा कि भाजपा दिल्ली में इन तीन हथकंडों म आदमी पार्टी के वोट कटवाकर, वोट बनवाकर , पैसों से वोट खरीदकर चुनाव जीतना चाहती है।

आम आदमी पार्टी का दावा है कि भाजपा ने आम आदमी पार्टी सांसद संजय सिंह की पत्नी अनीता सिंह का वोट काटने का आवेदन दिया है। बता दें कि संजय सिंह का परिवार नई दिल्ली विधानसभा में रहता है। आप सांसद संजय सिंह ने कहा कि संसद में मैंने भाजपा द्वारा यूपी, बिहार और झारखंड के पूर्वांचल समाज के लोगों के वोट कटवाने की बात कही और इसे जेपी नड्डा ने माना भी। अब भाजपा ने मेरी धर्मपत्नी अनीता सिंह का जोकि नई दिल्ली विधानसभा की वोटर हैं, उनका वोट कटवाने की एप्लीकेशन दे दी। संजय सिंह ने कहा कि मेरी धर्मपत्नी अनीता सिंह पूर्वांचल की रहने वाली हैं और भाजपा वालों ने इनका वोट कटवाने की एप्लीकेशन दो बार दी है।

संक्षिप्त खबरें

दिल्ली पुलिस ने 78 किलोग्राम गांजा जब्त किया, दो लोग गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने दो मादक पदार्थ तस्करों को गिरफ्तार करके उनके कब्जे से लगभग 39.25 लाख रुपये मूल्य का 78 किलोग्राम गांजा बरामद किया है। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार, जब्त किया गया गांजा नए साल के जश्न के लिए राष्ट्रीय राजधानी के विभिन्न हिस्सों में पहुंचाया जाना था।एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा, पुलिस को गोपनीय सूचना मिली थी कि दो लोग भारी मात्रा में गांजा लेकर द्वारका सेक्टर-23 में आएंगे। एक योजना बनाई गई जिसके बाद मोहम्मद अकमल (30) और रोहित कुमार (32) को गिरफ्तार कर लिया गया। तलाशी लेने पर उनकी कार से 78 किलोग्राम गांजा मिला। अधिकारी ने बताया कि गिरफ्तार दोनों लोग एक बड़े नेटवर्क का हिस्सा थे जो आंध्र प्रदेश से मादक पदार्थ लाकर उसे दिल्ली-एनसीआर में नये साल का जश्न मनाने वाले लोगों को देने वाले थे। उन्होंने बताया कि मूल रूप से उत्तर प्रदेश के धामपुर का रहने वाला अकमल वर्षों से मादक पदार्थों की तस्करी में संलिप्त है।

दिल्ली में न्यूनतम तापमान 13 डिग्री, आसमान साफ रहेगा

नई दिल्ली। दिल्ली में रविवार को न्यूनतम तापमान सामान्य से छह डिग्री अधिक 13 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने यह जानकारी दी। अधिकतम तापमान 16 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। मौसम विभाग ने दिन में आसमान साफ रहने का अनुमान जताया है।दिल्ली में रविवार सुबह वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) खराब श्रेणी में दर्ज किया गया। मौसम विभाग के मुताबिक, सुबह नौ बजे एक्यूआई 230 पर पहुंच गया। शनिवार को 24 घंटे का एक्यूआई शाम चार बजे 135 दर्ज किया गया, जो ह्यमध्यमह्न श्रेणी में था। एक्यूआई को शून्य से 50 के बीच अच्छा, 51 से 100 के बीच संतोषजनक, 101 से 200 के बीच मध्यम, 201 से 300 के बीच ह्यखराब, 301 से 400 के बीच ह्यबहुत खराबह्न और 401 से 500 के बीच गंभीर माना जाता है। रविवार सुबह साढ़े आठ बजे आर्द्रता 95 प्रतिशत थी।

पुलिस ने मुठभेड़ के बाद दो आरोपितों को दबोचा

नई दिल्ली। पश्चिम जिला पुलिस ने पंजाबी बाग इलाके में रविवार तड़के मुठभेड़ के बाद दो आरोपितों को गिरफ्तार किया है। दोनों आरोपितों के पैर में गोली लगी है। घायल आरोपितों का अस्पताल में इलाज चल रहा है। इनकी पहचान रोहित कपूर और रिंकू के रूप में हुई है। जांच में पता चला है कि आरोपितों पर दिल्ली और मध्य प्रदेश में 80 आपराधिक मामले दर्ज हैं। जिसमें दिल्ली और मध्य प्रदेश के सात लूट के मामले में दोनों वांछित थे। पश्चिम जिले के डीसीपी विचित्र वीर ने बताया कि 29 दिसंबर की सुबह जिले की ऑपरेशन सेल की टीम को आरोपितों के बारे में जानकारी मिली थी। कई टीम दोनों की तलाश कर रही थी। तड़के करीब 4:30 बजे पंजाबी बाग के मादीपुर के सीमेंट साइडिंग क्षेत्र के पास पुलिस टीम ने दो संदिग्धों को देखा और उन्हें रुकने के लिए कहा। जिस पर आरोपितों ने पुलिस टीम पर गोलीबारी शुरू कर दी। आरोपितों की गोली एक पुलिसकर्मी के बुलेट प्रूफ जैकेट पर लगी। पुलिस टीम ने आत्मरक्षा में गोली चलाई, जिसमें दोनों बदमाशों के पैर में गोली लगी। पुलिस ने दोनों को दबोचकर तुरंत अस्पताल पहुंचाया। पुलिस अधिकारी ने बताया कि रोहित कपूर द्वारका जिले का जबकि रिंकू ख्याला थाने का घोषित बदमाश है।

साइबर अपराध के 12 केसों में 32 आरोपी गिरफ्तार

फरीदाबाद। फरीदाबाद साइबर पुलिस ने साइबर अपराधों पर नकेल कसते हुए 21 से 27 दिसंबर तक साइबर अपराध के 12 मुकदमों में 32 आरोपी गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 20 लाख 54 हजार 210 रुपए बरामद किए है। पुलिस प्रवक्ता ने रविवार को बताया कि 12 मुकदमों को सुलझाते हुए 32 आरोपीयों को गिरफ्तार किया है। जिसमें साइबर थाना एनआईटी के चार, साइबर थाना सेंट्रल के चार और साइबर थाना बल्लबगढ़ के 04 मामले शामिल है। गिरफ्तार आरोपी में दीपांशु, रिंकू, मोहम्मद राशिद, सागर, अक्षय, आकाश, मनोज कुमार, लव कुश, विजय सिंह, सुरेश, नाथ रामनन्द, आरिफ, अहमद, अंजनी गोरिल्ला, राकेश, अरुण, पन्ना, मयंक, बंटी, रवि कुमार, मुन्ना, सरोज कुमार, अनुज कुमार, दीपक कुमार, ऋषि, शोभित कुमार, गौरव, दिव्यांशु, अमूल्य जैन, सुरेश कुमार और सुनील कुमार के नाम शामिल है। आरोपियों से 20 लाख 54 हजार 210 बरामद किए गए हैं साथ ही 233 शिकायतों का निस्तारण करके 49 हजार 424 रुपए रिफंड कराए हैं।

दिल्ली के मंडावली पुलिस स्टेशन के बाहर आप और भाजपा कार्यकर्ताओं के बीच हाथापाई

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली के मंडावली इलाके में महिला सम्मान योजना और संजीवनी योजना के लिए फॉर्म भरवा रहे आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता और भाजपा कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हो गई।भाजपा नेताओं ने आरोप लगाया है कि आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने मंडावली वार्ड अध्यक्ष आशीष गुप्ता के साथ मारपीट की है। इस घटना के विरोध में आम आदमी पार्टी और भाजपा कार्यकर्ताओं ने मंडावली थाने के बाहर जमकर प्रदर्शन किया।दोनों की तरफ से थाने में शिकायत दर्ज कराई गई है और एक दूसरे पर मारपीट का आरोप लगाया गया है।इसके बाद भाजपा के प्रदेश मंत्री विनोद बछेती, स्थानीय निगम पार्षद रविंद्र सिंह नेगी सहित कई भाजपा नेता मौके पर पहुंच गए और आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं के खिलाफ कार्रवाई की मांग की।वहीं,

आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं के समर्थन में पूर्व निगम पार्षद गीता रावत सहित कई स्थानीय नेता भी पहुंच गए और उन्होंने भी भाजपा कार्यकर्ताओं के खिलाफ कार्रवाई की मांग की।आम आदमी पार्टी के नेताओं का कहना है कि उनके कार्यकर्ता इलाके में महिला सम्मान योजना और संजीवनी योजना का फॉर्म भरवा रहे थे।इसी दौरान भाजपा नेता आशीष गुप्ता ने फॉर्म को फाड़ दिया।विरोध करने पर मारपीट की।इस घटना को भाजपा हिंदू मुस्लिम का रंग देने की कोशिश कर रही है।वहीं, दूसरी तरफ भाजपा नेताओं का कहना है कि आदमी पार्टी के कार्यकर्ता जबरदस्ती लोगों के घरों में जाकर ऐसी योजना का फॉर्म भरने का दबाव बना रहे हैं।जो योजना लागू भी नहीं हुई है।भाजपा के मंडावली मंडल अध्यक्ष आशीष गुप्ता ने जब इसका विरोध किया तो आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने उनके साथ मारपीट की।

जंगपुरा विधानसभा के लिए मनीष सिसोदिया का 'शिक्षा घोषणा पत्र' जारी

अब जंगपुरा से विधायक बनने के बाद क्षेत्र के स्कूलों में क्रांतिकारी बदलाव लाने पर काम करूंगा। यहां सराय काले खां और हजरत निजामुद्दीन इलाके में सभी सुविधाओं से सुसज्जित दो नए स्कूल बनाए जाएंगे। सरकारी स्कूलों की तरह ही क्षेत्र के सभी सहायता प्राप्त स्कूलों में शैक्षिक सुविधाएं दी जाएंगी और निजी स्कूलों को मनमाना फीस नहीं बढ़ाने दिया जाएगा। साथ ही, हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी और उर्दू के साथ उन भारतीय भाषाओं के टीचर्स भी रखे जाएंगे जो वहां पढ़ने वाले बच्चों की मातृ भाषा है। मनीष सिसोदिया ने जारी शिक्षा घोषणा पत्र में कहा है कि बच्चों की अच्छी शिक्षा ही किसी परिवार की तरक्की का एकमात्र जरिया है।

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली, । दिल्ली विधानसभा चुनाव में अपनी विधानसभा के लिए अलग से शिक्षा घोषणा पत्र जारी करने वाले मनीष सिसोदिया पहले नेता बन गए हैं। उन्होंने अपने जंगपुरा विधानसभा क्षेत्र के लिए शिक्षा घोषणा पत्र जारी की है। दिल्ली में शिक्षा क्रांति के जनक कहे जाने वाले पूर्व उपमुख्यमंत्री ने जंगपुरा के बच्चों का भविष्य संवारने की बात कही है।

मनीष सिसोदिया ने शिक्षा घोषणा पत्र में शिक्षा को महत्व देते हुए सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों का कायाकल्प करने का वादा किया है। उन्होंने कहा, मैंने शिक्षा मंत्री के रूप में काम करते हुए दिल्ली के हर बच्चे को अच्छी शिक्षा देने के लिए एक ठोस नींव तैयार की है। अब जंगपुरा से विधायक बनने के बाद क्षेत्र के स्कूलों में क्रांतिकारी बदलाव लाने पर काम करूंगा। यहां सराय काले खां और हजरत निजामुद्दीन इलाके में सभी सुविधाओं से सुसज्जित दो नए स्कूल बनाए जाएंगे। सरकारी स्कूलों की तरह ही क्षेत्र के सभी सहायता प्राप्त स्कूलों में शैक्षिक सुविधाएं दी जाएंगी और निजी स्कूलों को मनमाना फीस नहीं बढ़ाने दिया जाएगा। साथ ही, हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी और उर्दू के साथ उन भारतीय भाषाओं के टीचर्स भी रखे जाएंगे जो वहां पढ़ने वाले बच्चों की मातृ भाषा है।मनीष सिसोदिया ने जारी शिक्षा घोषणा पत्र में कहा है कि बच्चों की अच्छी शिक्षा ही किसी परिवार की तरक्की का एकमात्र जरिया है। हम सब चाहते हैं कि हमारा बच्चा बड़ा होकर एक सफल और प्रतिष्ठित व्यक्ति बने। लेकिन उसके लिए बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलनी बहुत जरूरी है। मैंने शिक्षा मंत्री के रूप में काम करते हुए दिल्ली के हर बच्चे को अच्छी शिक्षा देने के लिए एक ठोस नींव तैयार की है। अब मैं आपकी जंगपुरा विधानसभा से आपके विधायक के रूप में भी काम करने आ रहा हूं। अपने घोषणा पत्र में उन्होंने बताया है कि नया स्कूल और वर्तमान स्कूलों में नई बिल्डिंग समेत अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। सराय काले खां और हजरत निजामुद्दीन इलाके में सभी सुविधाओं से सुसज्जित दो नए स्कूल बनाए जाएंगे। फिरोज शाह कोटला और हरि नगर आश्रम के स्कूल में शानदार नई बिल्डिंग बनाई जाएगी और यहां बच्चे 12वीं तक की पढ़ाई कर सकेंगे। सभी स्कूलों में टीचर्स की संख्या पूरी रहेगी। स्कूलों में सिक्योरिटी गार्ड और सफाई कर्मचारी होंगे ताकि सुरक्षा और सफाई की व्यवस्था बेहतरीन रहे। ट्रैफिक पुलिस के साथ तालमेल रहेगा ताकि स्कूल लगने-छूटने के समय बच्चों को असुविधा न हो। दिल्ली सरकार के स्कूलों को 17 नगर निगम के स्कूलों और क्षेत्र की सभी 62 आंगनबाड़ी केंद्रों के साथ जोड़ा जाएगा ताकि तीन साल से लेकर 18 साल की उम्र तक हर बच्चे को शिक्षा का अच्छा अवसर मिले। घोषणा पत्र के मुताबिक, क्षेत्र के सभी 11 सहायता प्राप्त स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को भी वही शैक्षिक सुविधा दी जाएगी जो दिल्ली सरकार के स्कूलों के बच्चों को मिलती है। उन बच्चों की भी शैक्षिक प्रगति को लगातार ट्रैक किया जाएगा। सुनिश्चित किया जाएगा कि शिक्षा निदेशालय सभी सहायता प्राप्त स्कूलों के अनुदान समय से वितरित करे।मनीष सिसोदिया ने भरोसा दिलाया है कि किसी भी प्राइवेट स्कूल को मनमाने तरीके से फीस बढ़ाने की इजाजत नहीं होगी। टीचर्स और प्रिंसिपल्स के लिए सम्मान, सुविधाएं और ट्रेनिंग के अवसर दिए जाएंगे। डीआईईटी दरियागंज को आधुनिक ट्रेनिंग और रिसर्च सेंटर के रूप में विकसित किया जाएगा ताकि टीचर्स को पढ़ने-पढ़ाने के नए तरीके विकसित करने के लिए प्रेरणा और सपोर्ट मिल सके। सभी टीचर्स और प्रिंसिपल्स को देश-विदेश में ट्रेनिंग के नए अवसर मिलेंगे। मेरे साथ हर महीने शिक्षा पर चर्चा कार्यक्रम में सभी टीचर्स और प्रिंसिपल्स भाग ले सकेंगे।उन्होंने घोषणा पत्र में कहा है कि जिन स्कूलों में तमिल एवं अन्य दक्षिण भारतीय समाज के परिवारों के बच्चे पढ़ते हैं, उनमें उन भाषाओं के शिक्षक नियुक्त किए जाएंगे। हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी और उर्दू के साथ साथ उन भारतीय भाषाओं के टीचर्स भी रखे जाएंगे जो यहां पढ़ने वाले बच्चों की मातृ भाषा है। बच्चों की अंग्रेजी में बातचीत करने की दक्षता विकसित करने के लिए स्पोकेन इंग्लिश के कोर्स भी शुरू किए जाएंगे। साथ ही जर्मन, फ्रेंच और जापानी भाषा के भी कोर्स शुरू किए जाएंगे। वोकेशनल विषय को आने वाले कल की जरूरत के हिसाब से तैयार किया जाएगा ताकि स्कूली शिक्षा पूरी करने की बाद अगर कोई बच्चा काम करना चाहे, या काम के साथ आगे की पढ़ाई करे तो उसे सही रोजगार मिल सके। स्कूल की छुट्टी के बाद स्कूलों में डांस, ड्रामा, आर्ट्स, स्पोर्ट्स जैसे प्रशिक्षण आयोजित किए जाएंगे ताकि बच्चों का बहुमुखी विकास हो सके। दिल्ली पूर्व शिक्षा मंत्री ने कहा कि आईटीआई हजरत निजामुद्दीन में वर्ल्ड क्लास टेक्नोलॉजी के साथ नए कोर्स शुरू किए जाएंगे जो कि रोजगार के नए अवसर पैदा करेंगे। छात्राओं में खुद की सुरक्षा के लिए उच्च स्तर के ह्यसेल्फ डिफेंसह्न कोर्स भी शुरू किए जाएंगे। स्कूलों से पास होकर निकलने वाले सभी बच्चों को अगले चार साल तक ट्रैक किया जाएगा ताकि उच्च शिक्षा और रोजगार में उनकी मदद की जा सके। इन बच्चों को एलुमनी ग्रुप के जरिए इस बात के लिए भी प्रोत्साहित किया जाएगा कि वो अपने स्कूल से जुड़े रहें और जूनियर्स को गाइड करें।

अरविंद केजरीवाल ने रोहिंग्या घुसपैठियों को बनाया वोटर : मनजिंदर सिंह सिरसा

प्रात : किरण/एजेंसी

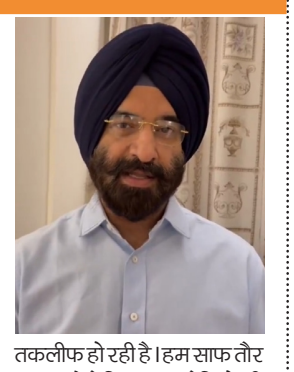

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी नेता मनजिंदर सिंह सिरसा ने आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल पर रोहिंग्या और बंगलादेशी घुसपैठियों को शय देने का आरोप लगाया। उन्होंने दावा किया कि ये सब कुछ केजरीवाल सियासी फायदे के लिए कर रहे हैं।

सिरसा ने वीडियो संदेश जारी कर दिल्ली के पूर्व सीएम पर कई आरोप लगाए। कहा, अरविंद केजरीवाल आज प्रेस कॉन्फ्रेंस कर यह सवाल उठा रहे हैं कि क्यों बंगलादेशी और रोहिंग्या घुसपैठियों की वोट काटे जा रहे हैं। हम डंके की चोट पर कहते हैं कि आपने दिल्ली में रोहिंग्या और बंगलादेशी घुसपैठियों से अपना वोट बनाया है। हर विधानसभा में इनके पास आठ-दस हजार वोट हैं, और एक हिंदू परिवार के घर में दो या पांच लोग रहते हैं, लेकिन उनके नाम पर पचास-पचास वोट बन रखे हैं।

उन्होने आगे कहा, हम यह साफ कर देना चाहते हैं कि हम किसी भी घुसपैठिए का वोट दिल्ली में नहीं डालने देंगे। आपकी जीत का कारण यही था कि आपने इन घुसपैठियों को दिल्ली में बसाया, उन्हें पैसे, राशन और मुफ्त पानी दिया। दिल्ली के लोग इसकी सजा भुगत रहे हैं और अब जब इसे लेकर सवाल उठ रहा है, तो आपको तकलीफ हो रही है। हम साफ तौर पर कहते हैं कि इन घुसपैठियों की वोट बिल्कुल कटवाएंगे और दिल्ली में इनका कोई वोट नहीं रहने देंगे।ह्न रविवार को अरविंद केजरीवाल की प्रेस वार्ता के बाद सिरसा ने अपनी बात रखी।बता दें कि अरविंद केजरीवाल ने प्रेस कांफ्रेंस में भाजपा पर आरोप लगाया कि पार्टी ने नई दिल्ली विधानसभा में पिछले 15 दिनों में लगभग 5 हजार वोटों को काटने की एप्लीकेशन दी है। इसके अलावा साढ़े सात हजार वोट जोड़ने की भी एप्लीकेशन दी गई है। इन्होंने हमारी विधानसभा जिसमें कुल 1 लाख 6 हजार वोट हैं- से 5 फीसदी वोट डिलीट करवाने का आवेदन दिया है। साथ ही 7.5 फीसदी वोट ये लोग ऐड भी करवा रहे हैं। इसके बाद फिर चुनाव कराने की जरूरत बची ही क्या है ? अगर 12 फीसदी से ज्यादा वोट इधर के उधर कर दिए जाएंगे तो फिर चुनाव बचा ही कहां ? इस देश में चुनाव के नाम पर खेल हो रहा है।

भाजपा पर केजरीवाल के आरोप सिर्फ उनकी बौखलाहट का नतीजा: विजेंद्र गुप्ता

विजेंद्र गुप्ता ने इसे केजरीवाल का बौखलाहट में दिया गया बयान बताया है। उन्होंने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव में अपनी हार सामने देख केजरीवाल हताश हो गए हैं और इसी हताशा के चलते ऊलजलूल आरोप भाजपा पार्टी पर लगा रहे हैं।

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने रविवार को दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के वोट काटने वाले आरोप को जनता को गुमराह करने वाला बताया है। विजेंद्र गुप्ता ने इसे केजरीवाल का बौखलाहट में दिया गया बयान बताया है। उन्होंने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव में अपनी हार सामने देख केजरीवाल हताश हो गए हैं और इसी हताशा के चलते ऊलजलूल आरोप भाजपा पार्टी पर लगा रहे हैं। आगे विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि सब जानते हैं कि केजरीवाल और उनकी आम आदमी पार्टी के नेताओं ने लाखों रोहिंग्याओं और बांग्लादेशियों के नाम फर्जी कागजात के आधार पर इन वोटर लिस्ट में डलवा दिए हैं। भाजपा को जब इसकी जानकारी मिली तो उसने चुनाव अधिकारियों से इसकी शिकायत की तो अधिकारियों ने एक्शन लेते हुए वो फर्जी नाम वोटर लिस्ट से हटाने की कार्रवाई शुरू कर दी। और ये सभी रोहिंग्या और बांग्लादेशी आम आदमी पार्टी का वोट बैंक है जिसे हाथ से खिसकता देख आप के नेताओं के बीच बौहलाहट वाली स्थिति हो गई है और इसके चलते उनकी मानसिक स्थिति बिगड़ गई है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा आम आदमी पार्टी की ओर से दिल्ली की लाखों महिलाओं को एक हजार रुपये प्रतिमाह देने की झूठी घोषणा की जांच कराने के उपराज्यपाल के आदेश से भी आम आदमी पार्टी के नेताओं में खलबली मची हुई है। जिसके चलते उन्हें यह अहसास हो गया है कि उनके भ्रष्टाचार और झूठ की पोल अब जनता के सामने खुल गई है और आगामी विधानसभा चुनाव में उनकी हार अब टाली नहीं जा सकती। विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि अरविंद केजरीवाल ने पिछले दस साल में अपने शासनकाल में दिल्ली की जनता को केवल गुमराह करने और योजनाओं के नाम पर करोड़ों का भ्रष्टाचार करने के अलावा कुछ नहीं किया। अंत में उन्होंने ने कहा कि केजरीवाल क इन आरोपों में कोई दम नहीं है। दिल्ली के 2 करोड़ लोग अब आम आदमी पार्टी को सत्ता से बाहर करने का फैसला कर चुके हैं और फरवरी में उनके इस फैसले पर मोहर लगनी बाकी है।

चुनाव में पैसे बांटे तो बढ़ेगी मुश्किलें, आसान नहीं है मतदाताओं को लालच देना

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी का आरोप है कि भाजपा नेता प्रवेश वर्मा ने नई दिल्ली इलाके में महिलाओं को जो पैसे बांटे हैं, उस पर राजनीति गर्म है। आम आदमी पार्टी ने आरोप लगाया है कि वोट के बदले लोगों को पैसे बांट रहे हैं। हालांकि प्रवेश वर्मा ने कहा कि उनकी संस्था जरूरतमंदों को मदद करती है और उन्होंने अपने अकाउंट और संस्थान की ओर से महिलाओं को मदद की है। प्रवेश वर्मा नई दिल्ली सीट से अरविंद केजरीवाल के खिलाफ दावेदारी का दावा पेश कर रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक नई दिल्ली इलाके की महिलाओं ने कहा कि प्रवेश वर्मा के घर से उन्हें लाडली योजना के तहत रजिस्ट्रेशन कार्ड और 1100 रुपये दिए गए हैं। इस मामले में गलत मंशा से वोटरों को प्रभावित करने का आरोप लगाते हुए एक शख्स ने पुलिस को शिकायत भी की है।

सुप्रीम कोर्ट के सीनियर एडवोकेट विकास सिंह कहते हैं कि अगर कहीं भी चुनाव होने वाला है और वहां किसी पार्टी का कैंडिडेट चुनाव से पहले वोटरों को लुभाने के लिए पैसा या कोई और मुफ्त सौगात बांटता है तो यह अनुचित तरीके से प्रभावित करने का मामला बनता है। अगर कोई शख्स देश के किसी हिस्से में अपने कमाए गए पैसे बांटता है और वहां चुनाव नहीं होने जा रहा है तो यह कोई अपराध नहीं है और कोई भी किसी की मदद कर सकता है। लेकिन कोई शख्स वहां पैसे बांटता है जहां चुनाव होने वाला है और उसी इलाके में वह कैंडिडेट भी होने जा रहा है तो यह करप्ट प्रैक्टिस के दायरे में आएगा। आचार संहिता लागू होने के पहले भी चुनाव से पहले ऐसा करना सही नहीं हो सकता है। लोकसभा के पूर्व सेक्रेटरी जनरल पीडीटी आचारी कहते हैं कि अगर कोई चुनावी कैंडिडेट चुनाव से ठीक पहले अपने इलाके में पैसा बांटता है और वह पैसा अकाउंटेड मनी भी है तो यह अनुचित तरीके से प्रभावित करने का मामला बनता है। पैसा अगर अकाउंटेड नहीं है तो यह मामला इनकम टैक्स को देखना है कि पैसा कहां से आया है।

फरीदाबाद पुलिस ने साइबर अपराध पर जागरूकता को जारी की एडवाइजरी

प्रात : किरण/एजेंसी

फरीदाबाद। फरीदाबाद में संयुक्त पुलिस आयुक्त राजेश दुग्गल ने साइबर फ्रॉड को लेकर रविवार को एडवाइजरी जारी करते हुए कहा कि व्यक्तिगत जानकारी किसी को साझा न करें। इसके अलावा अनजान लिंक पर बिना जांच करें क्लिक न करें। पुलिस आयुक्त ने रविवार को जारी बयान में बताया कि आजकल शेयर मार्केट में निवेश करने का फ्रॉड बहुत ज्यादा बढ़ रहा है, लोगों को अच्छे मुनाफे का लालच देकर पैसे इन्वेस्ट कराए जाते हैं और बाद में उनके पैसों का गबन कर लिया जाता है। उन्होंने कहा कि अभी तीन दिन पहले ही फरीदाबाद साइबर पुलिस टीम द्वारा नोएडा से शेयर मार्केट में इन्वेस्टमेंट के नाम पर फ्रॉड के मामले में 15 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। जिसे देखते हुए साइबर फ्रॉड से बचाव के लिए एडवाइजरी जारी की है। पुलिस आयुक्त ने कहा कि अपनी व्यक्तिगत जानकारी, जैसे कि आपका नाम, पता, फोन नंबर, और बैंक खाता विवरण, किसी भी अनजान व्यक्ति या वेबसाइट के साथ साझा न करें। उन्होंने कहा कि यदि आपको कोई संदिग्ध ईमेल या मैसेज मिलता है, जिसमें आपको अपनी व्यक्तिगत जानकारी साझा करने या किसी लिंक पर क्लिक करने के लिए कहा जाता है, तो उसका जवाब न दें और उसे तुरंत डिलीट करें। किसी भी अनजान लिंक को क्लिक न करें।

फरीदाबाद में भीम आर्मी ने फूंका गृहमंत्री का पुतला

फरीदाबाद। फरीदाबाद में रविवार को डॉ. भीमराव अंबेडकर को लेकर गृहमंत्री के बयान के खिलाफ भीम आर्मी ने प्रदर्शन किया। शहर में भीम आर्मी ने शाह का पुतला फूंका और नारेबाजी करते हुए उनसे इस्तीफा देने की मांग की। इस मौके पर भीम आर्मी के प्रदेश अध्यक्ष धर्मवीर प्रवाल ने कहा कि अमित शाह ने भारत रत्न बाबा साहब भीमराव अंबेडकर का संसद भवन में अपमान किया है। यह सब बीजेपी के इशारे पर किया गया है। उन्होंने कहा कि जो लोग बाबा साहब और संविधान को मानते हैं वह अमित शाह द्वारा दिए गए उनके बयानों की कड़ी निंदा करते हैं। अमित शाह को खुद इस बयान को लेकर माफी मांगनी चाहिए। अमित शाह ने कई बार बाबा साहब का नाम लेकर कहा था कि यदि वो लोग भगवान का नाम लेते तो उन्हें स्वर्ग मिलता, लेकिन वह नहीं जानते कि जो बाबा साहब द्वारा दिए गए संविधान को मानते और जानते हैं और संविधान द्वारा बताए गए रास्ते पर चलते हैं उन्हें इसी जन्म में जीते जी स्वर्ग मिलता है।

तैयारी केजरीवाल और सिसोदिया के सामने मजबूत उम्मीदवार उतारे

दिल्ली में विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की तैयारी देख केजरीवाल के छूटे पसीने

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली में अपनी खोई हुई राजनीतिक जमीन को वापस पाने के लिए कांग्रेस पूरी ताकत लगा रही है। इस बार के विधानसभा चुनाव के लिए मजबूत प्रत्याशियों को चुनावी रण में उतारने के साथ ही कांग्रेस नेता आम आदमी पार्टी की घेराबंदी करने में जुट चुके हैं। आप नेतृत्व को लेकर तीखी बयानबाजी कर रहे हैं। कांग्रेस पार्टी के रणनीतिकार किसी तरह से चुनावी मुकाबले को त्रिकोणीय बनाने में लगे हैं। कांग्रेस के इस बदले हुए आक्रामक रुख ने आम आदमी पार्टी की बेचैनी बढ़ रही है। आप को त्रिकोणीय मुकाबला होने पर भाजपा विरोधी मतों के विभाजन का डर सता रहा है। इसकारण आप नेता कांग्रेस पर भाजपा को मदद पहुंचाने का आरोप लगा रहे हैं।

वर्ष 2012 में आम आदमी पार्टी के उदय से पहले तक दिल्ली में कांग्रेस व भाजपा के बीच सीधी लड़ाई होती थी। इस दौरान 1993 को छोड़ दें, तब किसी भी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को 40 प्रतिशत से कम मत नहीं मिले थे। झुग्गी बस्तियों और मुस्लिम व अनुसूचित जाति बहुल क्षेत्रों में कांग्रेस का मजबूत जनाधार था। इस जनाधार के बल पर कांग्रेस 15 वर्षों तक दिल्ली की सत्ता में रही। वर्ष 2012 के बाद से यह राजनीतिक समीकरण बदल गए हैं। कांग्रेस का मजबूत वोट बैंक आप की ओर चला गया है। इसी कारण चुनावों में इसका प्रदर्शन लगातार खराब हो रहा है। वर्ष 2013 में पार्टी का मत प्रतिशत गिरकर 24.55 प्रतिशत हो गया था। पिछले चुनाव में यह पांच प्रतिशत से भी कम रह गया।

इस कारण पिछले दो विधानसभा चुनावों में पार्टी को एक भी सीट नहीं मिली है। इस कारण इस चुनाव में पार्टी के सामने प्रदर्शन

सुधारने की बड़ी चुनौती है। इसके लिए पार्टी रणनीति बना रही है। इसी कड़ी में प्रदेश अध्यक्ष देवेंद्र यादव पूरी दिल्ली में न्याय यात्रा निकाल चुके हैं। प्रत्याशियों के चयन से भी पार्टी यह संदेश देने का प्रयास कर रही है कि वहां दिल्ली की राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाने को तैयार है। 47 प्रत्याशियों की घोषणा कर दी गई है। जिसमें से कुछ नाम ने आप के अंदर बैचेनी बढ़ दी है। आप संयोजक व पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के पुत्र संदीप दीक्षित को मैदान में उतारा गया है। आप के दूसरे बड़े नेता मनीष सिसोदिया के सामने जंगपुरा से अनुभवी कांग्रेसी पूर्व महापौर फरहाद सूरी को मैदान में उतारा है। मुख्यमंत्री आतिशी के सामने कालकाजी से भी मजबूत प्रत्याशी उतारने की तैयारी है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष यादव बादली से चुनाव मैदान में हैं। आप से कांग्रेस में आने वाले पूर्व मंत्री आसिम अहमद खान, पूर्व विधायक अब्दुल रहमान, देवेंद्र सहरावत को भी टिकट मिला है। इससे आप प्रत्याशियों को अच्छी चुनौती मिलने की संभावना है।

प्रत्याशियों के चयन में सावधानी दिखाने के साथ ही कांग्रेस नेता आप सरकार को कठघरे में खड़ा कर रही हैं। श्वेत पत्र लाकर आप सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए गए हैं। इस दिल्लीवासियों की समस्याएं हल करने में विफल बताया गया है।

कांग्रेस के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अजय माकन ने वर्ष 2013 में केजरीवाल को समर्थन देकर मुख्यमंत्री बनाने और इस बार लोकसभा में आप के साथ गठबंधन को बड़ी भूल बताया हैं। इतना ही नहीं कांग्रेस नेता माकन केजरीवाल को राष्ट्रद्रोही और मौकापरस्त कह चुके हैं। वहीं संदीप दीक्षित उपराज्यपाल से मिलकर केजरीवाल व आतिशी के विरुद्ध फर्जी योजना के नाम पर लोगों से उनके व्यक्तिगत जानकारी लेने और चुनाव के लिए पंजाब पुलिस के दुरुपयोग की शिकायत कर चुके है। चुनाव के ऐलान से पहले कांग्रेस के आक्रामक तेवर को देखकर आप नेता भी सतर्क हो गए हैं। वह माकन के बयान की आलोचना करते हुए कांग्रेस को इंडिया गठबंधन से बाहर कराने की चेतावनी दे रहे हैं।

आरोप लगा रहे हैं कि चुनाव में कांग्रेस को भाजपा समर्थन कर रही है। इस तरह से पलटवार कर और इंडिया के अन्य नेताओं को अपने समर्थन में लाकर वह दिल्ली के चुनाव को त्रिकोणीय बनाने से रोकने का प्रयास कर रही है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव का समर्थन प्राप्त करने में आप सफल भी रही है। लेकिन सपा का कितना असर दिल्ली में और आप का कितना असर यूपी में दिखाता हैं ये आने वाला वक्त ही बताएगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं पर जोर

प्रात: किरण संवाददाता

जींद। ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ाने के लिए आयुष्मान भारत योजना के तहत प्रदेश में 198 हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर बनेंगे। प्रत्येक हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर के भवन निर्माण पर 40 लाख रुपये की राशि खर्च की जाएगी। इसमें सबसे ज्यादा रेवाड़ी जिले में 45, पानीपत में 24 व जींद जिले में 21 हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर के भवन बनाए जाएंगे।

डायरेक्टर जनरल हेल्थ सर्विस की तरफ से इन हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर बनाने के लिए लोक निर्माण विभाग को बजट जारी कर दिया हैं। इसमें अधिकतर उप स्वास्थ्य केंद्रों को हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर में तब्दील किया गया है। हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर में गर्भवती महिलाओं की जांच, नवजात एवं शिशु स्वास्थ्य देखभाल, बाल एवं किशोरावस्था स्वास्थ्य देखभाल समेत 12 तरह की चिकित्सका सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

इन बीमारियों का निशुल्क जांच

वेलनेस सेंटर में नियुक्त स्टाफ उनके क्षेत्र के हर गांव में घर-घर जाकर परिवार के हर सदस्य की स्वास्थ्य जांच करेंगे और इनका डिजिटल और फिजिकल रिकॉर्ड रखेंगी। डिजिटल रिकॉर्ड तैयार करने के लिए हर केंद्र पर दो टैबलेट दिए जाएंगे।

वेलनेस सेंटर के आसपास के क्षेत्र में रहने वाले तीस साल से अधिक उम्र के लोगों के बीपी, डायबिटीज व कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों की निशुल्क जांच की जाएगी और जरूरत के अनुसार उनको दवा और परामर्श दिया जाएगा। इससे नागरिक अस्पतालों में मरीजों की भीड़ कम होगी।

वहीं ग्रामीणों को अपने नजदीक ही प्राथमिक उपचार की सुविधा मिल सकेगी। हालांकि, शहरी क्षेत्र में फिलहाल बनाए गए हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर किराये के भवनों में चल रहा है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर के खुद के भवन होंगे।

इन हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर को ग्रामीण क्षेत्रों में चल रहे उप स्वास्थ्य केंद्रों में ही स्थापित किया जाएगा। आयुष्मान भारत योजना के तहत केंद्र सरकार की तरफ से यह बजट जारी किया गया हैं। इसके तहत जींद जिले में आठ करोड़ 40 लाख रुपये खर्च किए जाएंगे। वहीं पूरे प्रदेश में 79.20 करोड़ की राशि खर्च की जाएगी।

बुजुर्गों, बच्चों और महिलाओं की दिक्कतें हो जाएंगी कम

गांवों में हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर स्थापित होने के बाद ग्रामीणों को को अपने नजदीक की प्राथमिक उपचार मिल सकेगा। मरीजों को बार-बार नागरिक अस्पताल के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। साथ ही नागरिक अस्पताल की ओपीडी में लगने वाली मरीजों की भीड़ में भी शामिल नहीं होना पड़ेगा।

विशेषकर गर्भवती महिलाओं को प्रति माह नागरिक अस्पताल में जाने की जरूरत नहीं रहेगी वे अपने नजदीक की वेलनेस सेंटर पर जांच व दवाइयां ले सकेगी। इसके अलावा खांसी, जुकाम, बुखार, बीपी, शुगर आदि के मरीज अपने नजदीक की स्वास्थ्य जांच करवा सकेंगे। वृद्धावस्था संबंधित स्वास्थ्य जांच भी सेंटर पर करवा सकेंगे।

इन गांवों में बनेंगे हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर के भवन

डायरेक्टर जनरल हेल्थ की तरफ से जारी पत्र के अनुसार जींद जिले के गांव बराह कलां, पड़ाना, पिंडारा, कालवा-1, खरकगागर, ढाठरथ, नगूरां, सिल्लाखेड़ी, अंटा, बडनपुर, उझाना, पीपलथा, बराह कलां, अलेवा, जुलाना, खरकरामजी, कालवा, जुलाना, उचाना, दनौदा, कंडेला में हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर के नए भवन बनाए जाएंगे।

स्टाफ की कमी बन सकती है बाधा

वेलनेस सेंटरों को संचालन के लिए कर्मचारियों की कमी का भी सामना करना पड़ सकता है। क्योंकि, स्वास्थ्य विभाग के पास अभी तक नागरिक अस्पताल में ही ओपीडी चलाने के लिए पर्याप्त डॉक्टर नहीं हैं। जिले में चिकित्सकों के 222 पद हैं, लेकिन 88 डॉक्टर तैनात हैं।

इसी तरह जिला मुख्यालय पर बने नागरिक अस्पताल में डॉक्टरों के 55 पद हैं, लेकिन यहां पर 18 डॉक्टर ही तैनात हैं। ऐसे में सेंटरों के लिए पर्याप्त स्टाफ की कमी आड़े आएगी। जिले में 25 पीएचसी सेंटर है। जहां मरीजों को प्राथमिक उपचार दिया जा रहा है।

लेकिन अब 21 नए वेलनेस सेंटरों पर भी पीएचसी की तरह की चिकित्सकीय सुविधाएं मिलेंगी। प्रत्येक सेंटर पर एक-एक चिकित्सक के अलावा एएनएम, स्टाफ नर्स, फार्मासिस्ट आदि चिकित्सकीय स्टाफ तैनात करना होगा।

लेकिन अभी विभाग के पास पर्याप्त स्टाफ उपलब्ध नहीं है। इसके कारण सेंटर का सफलता पूर्वक संचालन करने में स्टाफ की कमी बाधा बन सकती है।

वेलनेस सेंटर में ये सुविधाएं

इन केंद्रों में मातृत्व स्वास्थ्य, शिशु स्वास्थ्य, टीकाकरण, किशोर स्वास्थ्य, डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, कैंसर, अंधत्व, श्रवण बाधित रोग, संचारी रोग प्रबंधन एवं उपचार, गैर संचारी रोग प्रबंधन एवं उपचार, ओरल हेल्थ, मेंटल हेल्थ, योगा और एक्सरसाइज, काउंसिलिंग, स्कूल हेल्थ एजुकेशन, आपात कालीन चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

स्क्रीनिंग पर होगा फोकस

हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर पर क्षेत्र के लोगों को लाकर आवश्यक जांचें की जाएंगी। इस दौरान उनकी डायबिटीज व ब्लड प्रेशर की जांच मशीन की ओर से की जाएगी। लोगों से उनकी स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतों के बारे में जाना जाएगा।

ओरल कैंसर, ब्रेस्ट कैंसर व अन्य गंभीर बीमारियों वाले मरीजों को हायर सेंटर रेफर कराकर उचित इलाज मुहैया कराया जाएगा। हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर पर तैनात स्टाफ सर्वे के दौरान लोगों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के बारे में जागरूक करेंगे जिससे लक्षण प्रतीत होने पर लोग स्वास्थ्य केंद्र पहुंचकर उपचार प्रारंभ करा सकें।

डीएम ने बैठक में अनुपस्थित प्रोजेक्ट मैनेजरों को भिजवाया कारण बताओं नोटिस

प्रात: किरण संवाददाता

गाजियाबा। विकास भवन गाजियाबाद के दुर्गावती देवी सभागार में डीएम इन्द्र विक्रम सिंह की अध्यक्षता में सीएमआईएस पोर्टल पर प्रदर्शित एक करोड़ रुपए से अधिक लागत की परियोजनाओं की समीक्षा बैठक हुई। बैठक के दौरान उप्र प्रोजेक्ट्स कारपोरेशन लि0, उप्र राजकीय निमार्ण निगम लि0, उप्र आवास विकास परिषद निर्माण ईकाई, ग्रामीण अभियंत्रण सेवा, एचएससीसी, उप्र राज्य निर्माण सहकारी संघ लि0, उप्र जल निगम, सीएण्डडीएस, उप्र राज्य सेतु निगम लि, सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, यूपी स्टेट कन्ट्र एण्ड इन्फ्रा डवलपमेंट कारपोरेशन लि, निर्माण खण्ड भवन लोनिवि मेरठ सहित अन्य विभागों के कार्यो की समीक्षा की गयी। जिलाधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह ने बैठक के दौरान निर्माण कार्यों में कम प्रगति एवं समयानुरूप कार्य सम्पन्न ना होने पर नाराजगी जताई। इस दौरान डीएम ने सभी प्रोजेक्ट मैनेजर से कार्य पूर्ण होने का समय शपथ पत्र पर लिखकर देने के लिए कहा। डीएम इंद्र विक्रम सिंह ने कहा कि अगर शपथ पत्र के अनुसार कार्य समय पर पूर्ण नहीं होता है तो उस प्रोजेक्ट मैनेजर के खिलाफ प्रशासनिक या दण्डात्मक कार्यवाही या दोनों की जाएगी। उन्होंने बैठक में अनुपस्थित रहने वाले अधिकारियों,प्रोजेक्ट मैनेजर को कारण बताओ नोटिस देने के लिए निर्देशित किया। डीएम ने कहा कि बैठक में प्रोजेक्ट से सम्बंधित प्रोजेक्ट मैनेजर ही उपस्थित हो या किसी कारण वश वह नहीं आ सकता तो उसके लिए डीएम से अनुमति प्राप्त करें और जिसे अधिकृत करें उसे सम्बंधित प्रोजेक्टों के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए। जिलाधिकारी ने कहा कि जिन प्रोजेक्ट मैनेजर का कार्य लम्बित है या समयानुसार पूर्ण नहीं है, वह कार्य को समय से पूर्ण करने का प्लान चार्ट प्रस्तुत शीघ्र प्रस्तुत करें। इस दौरान बैठक में सीडीओ अभिनव गोपाल, एडीएम एल/ए विवेक मिश्र, सिटी मजिस्ट्रेट डॉ. सन्तोष कुमार उपाध्याय, डीएसटीओ राजीव श्रीवास्तव, जिला सूचना अधिकारी योगेन्द्र प्रताप सिंह सहित अन्य अधिकारीगण और प्रोजेक्ट मैनेजर, प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

जीरो पॉइंट पर होने वाली महापंचायत में भाग लेंगे पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सैकड़ों किसान

प्रात: किरण संवाददाता

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा के जीरो पॉइंट पर किसानों ने एक बार फिर पंचायत का ऐलान किया है। और इस महापंचायत में भारतीय किसान यूनियन के राकेश टिकैत किसानों को संबोधित भी करेंगे। बताया जा रहा है इस महापंचायत में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सैकड़ों किसान अपने ट्रैक्टर ट्राली के साथ पंचायत स्थल पर जमा होंगे।

जानकारी के मुताबिक 30 दिसंबर को ग्रेटर नोएडा के जीरो पॉइंट पर संयुक्त मोर्चे की होने वाली महापंचायत तैयारी को लेकर शनिवार को ही ग्रेटर नोएडा के ऑफिस पर सभी संगठनों से विचार विमर्श कर ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचकर महापंचायत को सफल बनाने का निर्णय लिया गया है। जिसमें युवा साथियों को वालंटियर बनाया जाएगा। जो गाड़ी एवं ट्रैक्टरों को खड़ी करने की व्यवस्था में सहयोग करेंगे और महापंचायत में आए किसानों की मदद करेंगे।

भारतीय किसान यूनियन के पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष पवन खटाना ने बताया कि 30 दिसंबर को जीरो पॉइंट पर किसान मजदूर महापंचायत आयोजित होगी। इस महापंचायत को चौधरी राकेश टिकैत सम्बोधित करेंगे। 15 दिसंबर को भारतीय किसान यूनियन के अध्यक्ष नरेश टिकैत की अध्यक्षता में सिसौली किसान भवन में पहुंचे सैकड़ों किसानों की बैठक हुई थी। जिसमें यह फैसला लिया गया था कि 30 दिसम्बर को मेरठ मंडल के समस्त कार्यकर्ता और पदाधिकारियों के साथ-साथ यमुना प्राधिकरण से सम्बन्धित जिले आगरा, मथुरा, हाथरस, अलीगढ़, बुलन्दशहर को लेकर महापंचायत आयोजित की जा रहीं है।

उस बैठक में ही अपील की गई थी कि सभी किसान गांव-गांव जाकर मीटिंग करें और महापंचायत को सफल बनाने के लिए किसान मजदूर साथियों से जनसंपर्क करें। 30 दिसंबर को भारी संख्या में पहुंचकर महापंचायत को सफल बनाएं। इस महापंचायत के आह्वान को देखते हुए पुलिस प्रशासन भी अलर्ट मोड पर है। अतिरिक्त पुलिस बल को बुलाया गया है ताकि मौके पर व्यवस्था बनाई जा सके और किसी तरीके की कोई दिक्कत ना हो।

संक्षिप्त खबरें

राजपाल त्यागी समिति के अध्यक्ष बने

मुरादनगर। दिल्ली-मेरठ मार्ग स्थित त्यागी भवन परिसर में रविवार को त्यागी समाज समिति की बैठक का आयोजन किया गया। इसमें सर्वसम्मति से राजपाल त्यागी को फिर से अध्यक्ष मनोनित किया गया। राजपाल त्यागी के अध्यक्ष बनने पर उनका स्वागत किया गया। उन्होंने निष्ठा से कर्तव्य करने की बात कही। मौके पर आरएस त्यागी, सुधीर, पूर्व ब्लांक प्रमुख रमेश चंद्र त्यागी, महेश और सुभाष सहित अन्य लोग मौजूद थे।

बच्ची से छेड़छाड़ के विरोध पर परिजनों को पीटा

मुरादनगर। नगर की एक कॉलोनी में दुकान पर सामान लेने गई छह साल की बच्ची से अश्लील हरकत का मामला सामने आया है। शिकायत करने पर आरोपी ने बच्ची के माता-पिता को मारपीट कर घायल कर दिया। पीड़ित ने इस संबंध में मुरादनगर थाने में तहरीर दी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। नगर की एक कॉलोनी में एक व्यक्ति परिवार सहित रहते हैं। उनकी छह साल की पुत्री कक्षा एक की छात्रा है। रविवार दोपहर एक बजे के आसपास छात्रा कॉलोनी में ही एक दुकान पर सामान लेने के लिए गई थी। आरोप है कि बच्ची को अकेला देखकर दुकानदार ने उसे अंदर बुला लिया और अश्लील हरकत करनी शुरू कर दी। घर आकर बच्ची ने यह बात अपने परिजनों को बताई। जब परिजन दुकानदार के पास इसकी शिकायत करने पहुंचे तो कहासुनी हो गई। आरोप है कि आरोपी के परिजनों ने बच्ची के माता-पिता को मारपीट कर घायल कर दिया। किसी तरह वह अपनी जान बचाकर मुरादनगर थाने पहुंचे और तहरीर दी। पुलिस का कहना है कि तहरीर के आधार पर मामले में केस दर्ज कर लिया गया है। जांच के बाद अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

सपा में 30 युवा शामिल हुए

मुरादनगर । सपा नेता राकेश यादव ने रविवार को 30 युवकों को पार्टी की सदस्यता दिलाई। उन्होंने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव में अखिलेख यादव के नेतृत्व में सपा सरकार बनाएगी। आरोप लगाया कि प्रदेश का माहौल बिगाड़ने का काम किया जा रहा। इस दौरान राकेश त्यागी ने शुभम त्यागी के नेतृत्व में युवाओं को सदस्यता दिलाई। मौके पर जिलाध्यक्ष फजल हुसैन, वीरेंद्र यादव, परवेज चौधरी, मनीषा त्यागी, आकाश, शोएब सहित अन्य लोग मौजूद थे।

ट्रेन की चपेट में आकर बुजुर्ग की मौत

मोदीनगर। गांव रोरी स्थित स्थित रेलवे फाटक के पास शनिवार रात को मालगाड़ी की चपेट में आकर बुजुर्ग की मौत हो गई। एसीपी ज्ञानप्रकाश राय ने बताया कि शनिवार रात को सूचना मिली कि गांव रोरी स्थित रेलवे फाटक से 200 मीटर मेरठ की ओर एक बुजुर्ग मालागाड़ी की चपेट में आ गया और उसकी मौके पर ही मौत हो गई है। उन्होंने बताया कि मृतक की उम्र लगभग 64 साल के आसपास है और अब तक शिनाख्त नहीं हो सकी है।

दो युवक ई-रिक्शा लेकर फरार

मोदीनगर। किदवई नगर कॉलोनी निवासी जमील उर्फ छोटा खां न्ने बताया कि वह ई-रिक्शा चलाते हैं। रविवार को राज चौपले से दो युवकों ने मोदी मंदिर तक चलने की बात कही। वह दोनों को लेकर मंदिर पर पहुंच गए। वहां पर एक युवक फास्ट फूड खाने चला गया और दूसरे ने जमील को पानी की बोतल लेने के लिए भेज दिया। जब वह वापस आए तो ई-रिक्शा गायब था। युवक ई-रिक्शा लेकर फरार हो चुके थे। पीड़ित ने थाने में तहरीर दी है।

बोगस फर्मों के जरिये चल रहा टैक्स चोरी का खेल

प्रात: किरण संवाददाता

गाजियाबाद। कारोबारी बोगस फर्मों के जरिये टैक्स चोरी कर रहे हैं। ऐसे में राज्य कर विभाग ऐसी ही बोगस फर्मों को चिह्नित करने में जुटी है, जिसमें अभी तक 235 बोगस फर्में चिह्नित हुई है। इन फर्मों के माध्यम से करोड़ों रुपये की टैक्स चोरी सामने आई है। राज्य कर विभाग टैक्स चोरी करने वाली फर्मों पर नजर बनाए हुए हैं। इसके लिए विभाग की विशेष अनुसंधान शाखा ने कई धांधली पकड़ी है, जिसमें बोगस फर्मों के जरिये टैक्स चोरी सामने आई है। अधिकारी बताते हैं कि टैक्स चोरी करने के लिए सर्विस सेक्टर, ईंट भट्ठा कारोबारी, प्राइवेट सेक्टर व अन्य क्षेत्रों की कई फर्में बोगस कंपनियों से खरीद दिखाकर आईटीसी क्लेम कर लेती है, जबकि जिन कंपनियों से खरीद दिखाई गई होती है। वह कंपनियां मौके पर नहीं होती, सिर्फ दस्तावेजों में ही खरीद बिक्री दिखाई जाती है। राज्य कर विभाग के अपर आयुक्त ग्रेड 1 दिनेश कुमार मिश्र ने बताया कि फर्मों की ओर से दाखिल किए जा रहे जीएसटी रिटर्न और डाउनलोड किए जा रहे ईवे बिल की बिजनेस इंटेलिजेंस एंड फ्रॉड एनालिसिस के माध्यम से जांच कराने पर पता चल रहा है कि कंपनी आईटीसी ऐसी फर्मों से क्लेम किया है जो अस्तित्व में नहीं है। ऐसी फर्मों को चिह्नित किया जा रहा है। ताकि इनसे हुई अन्य खरीद बिक्री के बारे में भी जानकारी की जा सके।

गाजियाबाद में ईडब्ल्यूएस भवनों का रखरखाव कराएगा जीडीए

गाजियाबाद। साहिबाबाद में जीडीए की टीम ने राजेंद्रनगर में 560 ईडब्ल्यूएस भवनों का निरीक्षण वहां पर चयनित आरडब्ल्यूए प्रतिनिधियों के साथ किया। जर्जर हो रहे भवनों की शिकायत स्थानीय आरडब्ल्यूए ने जीडीए वीसी से की थी। वीसी के आदेश पर अधिशासी अभियंता टीम के साथ भवन का निरीक्षण करने पहुंचे थे। अधिशासी अभियंता ने बताया कि निरीक्षण में आरडब्ल्यूए की ओर से जो भी कमियां बताई गईं, उनका निस्तारण जल्द ही करया जाएगा। इसके बाद भवनों के रखरखाव की जिम्मेदारी वहां पर तैनात आरडब्ल्यूए के पदाधिकारियों को हस्तांतरित कर दी जाएगी। इस दौरान अधिशासी अभियंता-विद्युत, सहायक अभियंता, अवर अभियंता सहित टीम के अन्य सदस्य मौजूद रहे।

नोएडा : चार बदमाश मुठभेड़ में गिरफ्तार, व्यापारी के घर में घुसकर की थी लूट

नोएडा । नोएडा के थाना सेक्टर-20 पुलिस और सीआरटी टीम गौतमबुद्धनगर की लुटेरे बदमाशों के साथ मुठभेड़ में चार बदमाश घायल हुए हैं। उनके कब्जे से लूट की घटनाओं में इस्तेमाल ई- रिक्शा, स्कूटी और चोरी की मोटर साइकिल बिना नम्बर प्लेट की, 4 अवैध तमंचे .315 बोर, 5 जिन्दा कारतूस .315 बोर, 6 खोखा कारतूस समेत लूट के 2 लाख 5 हजार रुपये नकद व अन्य सामान बरामद हुआ है। इन बदमाशों ने कुछ दिन पहले ही देर रात सेक्टर 30 में एक व्यापारी के घर में घुसकर लूटपाट की थी और उसके बच्चों समेत उसे किडनैप किया था।

पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया है कि 29 दिसंबर को थाना सेक्टर-20 नोएडा पुलिस एवं सीआरटी टीम गौतमबुद्धनगर को सूचना प्राप्त हुई कि बी 11 सेक्टर 30 में वारदात को अंजाम देने वाले बदमाश मोटर साइकिल और स्कूटी पर सवार होकर डीएनडी की तरफ से सेक्टर-18 नोएडा की ओर आने वाले हैं। इस सूचना पर पुलिस ने तुरंत कार्यवाही करते हुए डीएलएफ तिराहे पर पहुंच कर चैकिंग शुरू कर दी। तभी सामने से आते हुए मोटर साइकिल व स्कूटी सवार बदमाश पुलिस को चेकिंग करते हुए देख डीएलएफ नाले की तरफ अंधेरे की ओर भागने लगे।

पुलिस टीम ने उनका पीछा किया तो अपने आपको घिरता देख बदमाशों ने पुलिस टीम पर फायर कर दिया। जिसमें जवाबी करवाई करते हुए पुलिस की गोली से चारों बदमाश घायल हो गए हैं। घायल बदमाशों की पहचान अनस, शाहनवाज, समीर और एजाज आलम के रूप में हुई है। उनके कब्जे से थाना सेक्टर-20 इलाके से लूटा हुआ माल बरामद हुआ है। जिसमें कैश 2 लाख 5 हजार रुपये नकद, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, पासपोर्ट, राशन कार्ड आदि बरामद हुआ और घटना में इस्तेमाल एक चोरी की मोटरसाइकिल, स्कूटी, 4 अवैध तमंचे, 6 खोखा कारतूस, 5 जिंदा कारतूस और निशानदेही पर ई रिक्शा बरामद हुआ है।

फरीदाबाद में भीम आर्मी ने फूंका गृहमंत्री का पुतला

फरीदाबाद । फरीदाबाद में रविवार को डॉ.भीमराव अंबेडकर को लेकर गृहमंत्री के बयान के खिलाफ भीम आर्मी ने प्रदर्शन किया। शहर में भीम आर्मी ने शाह का पुतला फूंका और नारेबाजी करते हुए उनसे इस्तीफा देने की मांग की। इस मौके पर भीम आर्मी के प्रदेश अध्यक्ष धर्मवीर प्रवाल ने कहा कि अमित शाह ने भारत रत्न बाबा साहब भीमराव अंबेडकर का संसद भवन में अपमान किया है। यह सब बीजेपी के इशारे पर किया गया है। उन्होंने कहा कि जो लोग बाबा साहब और संविधान को मानते हैं वह अमित शाह द्वारा दिए गए उनके बयानों की कड़ी निंदा करते हैं। अमित शाह को खुद इस बयान को लेकर माफी मांगनी चाहिए। अमित शाह ने कई बार बाबा साहब का नाम लेकर कहा था कि यदि वो लोग भगवान का नाम लेते तो उन्हें स्वर्ग मिलता, लेकिन वह नहीं जानते कि जो बाबा साहब द्वारा दिए गए संविधान को मानते और जानते हैं और संविधान द्वारा बताए गए रास्ते पर चलते हैं उन्हें इसी जन्म में जीते जी स्वर्ग मिलता है।

नवीन विश्व की थीम पर वार्षिकोत्सव मनाया

ट्रांस हिंडन। इंदिरापुरम के ज्ञानखंड स्थित इंदिरापुरम पब्लिक स्कूल शनिवार शाम नवीन विश्व की थीम पर वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि अभिनेत्री श्रुति पनवर, अभिनेता राहुल खन्ना और शालिनी सिंह रहे। स्कूल के प्रबंधन ने बताया कि कार्यक्रम की शुरूआत कैंब्रिज विंग के विद्यार्थियों द्वारा की गई जिसमें उन्होंने वैश्विक शांति सम्मेलन 2047 और वैश्विक नेतृत्व की योजनाओं को तथा आने वाले भविष्य की एक छवि नाटक के माध्यम से प्रस्तुत की। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यालय और विद्यार्थियों को सेवन वंडर्स और उससे जुड़े देशों के बारे में जागरूकता फैलाना था। स्कूल की प्रधानाचार्य रीटा सिंह ने बताया कि स्कूल में छात्रों ने इटली लोक नृत्य, हिप हॉप, भारतीय लोक नृत्य, कथक, माइम आदि नृत्यों की शानदार प्रस्तुति दी। इस मौके पर रचना पालीवाल, सुषमा झा, अनुपम शर्मा और समाली शाह आदि लोग मौजूद रहे।

कांग्रेसियों ने पूर्व प्रधानमंत्री को श्रद्धांजलि दी

गाजियाबाद । कांग्रेसियों ने रविवार को पूर्व प्रधानमंत्री व अर्थशास्त्री डा मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि दी। इस दौरान जिला कांग्रेस कार्यालय पर पूर्व प्रधानमंत्री के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें नमन किया। पुराना बस अड्डा स्थित जिला कांग्रेस कार्यालय पर रविवार को कांग्रेसी इकट्ठा हुए। इस दौरान उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। प्रदेश महासचिव बिजेंद्र यादव ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने देश को अर्थिक स्तर पर मजबूती दी है। उनकी सादगी ने सभी का मन मोहा है। उन्होंने कांग्रेस समेत सभी को सरल जीवन का मंत्र दिया है। जिलाध्यक्ष विनित त्यागी और पूर्व मंत्री सतीश शर्मा ने कहा कि हम सभी को पूर्व प्रधानमंत्री के जीवन से प्रेरण लेनी चाहिए। इस दौरान कांग्रेसी कार्यकताओं ने उनके चित्र पर फूल व माला अर्पित किए।

जीडीए के प्रवेश द्वार पर स्कैनिंग व मेटल डिटेक्टर मशीन लगेगी

प्रात: किरण संवाददाता

गाजियाबाद। जीडीए कार्यालय की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, जिसको लेकर कार्यालय के प्रवेश द्वार पर स्कैनिंग व मेटल डिटेक्टर मशीन लगाई जाएगी। फिर कार्यालय परिसर में आने वाले व्यक्तियों की पुख्ता चेकिंग करने के बाद भी उन्हें प्रवेश दिया जाएगा। जीडीए में रोजाना 120 से अधिक लोग विभिन्न कार्यों के लिए आते हैं। इनकी पहले स्वागत कक्ष से पर्ची बनाई जाती है, जिसके बाद यह मुख्य द्वार से अंदर जाते हैं। लेकिन परिसर में जाने वाले लोगों की जांच नहीं होती है। लेकिन अब इस व्यवस्था में सुधार किया जाएगा। कार्यालय की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अब प्राधिकरण के मुख्य द्वार पर स्कैनिंग व मेटल डिटेक्टर मशीन लगाने का फैसला लिया गया है। ताकि स्वागत कक्ष से पर्ची बनवाने के बाद व्यक्ति के मुख्य द्वार पर जांच भी की जाए। पूरी चेकिंग करने के बाद ही उसे प्राधिकरण कार्यालय में प्रवेश दिया जाएगा। जीडीए सचिव राजेश कुमार सिंह बताते हैं कि प्राधिकरण की सुरक्षा को लेकर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। कई बार लोग बिना काम के ही कार्यालय में घूमते रहते हैं। इसे रोकने के लिए सुरक्षा व्यवस्था बनाई जा रही है।

हरियाणा की सरकारी भर्तियों में अब नहीं मिलेंगे गरीबी के अतिरिक्त पांच अंक, कैबिनेट बैठक में हुआ फैसला

प्रात: किरण संवाददाता

चंडीगढ़। हरियाणा में अब तृतीय और चतुर्थ श्रेणी पदों की भर्तियों में गरीब युवाओं को अतिरिक्त पांच अंक नहीं मिलेंगे। सामाजिक-आर्थिक आधार पर अतिरिक्त अंकों पर हाई कोर्ट की रोक के बाद प्रदेश सरकार ने नीति में बदलाव किया है। इसी तरह सामान्य पात्रता परीक्षा (सीईटी) के नियमों में संशोधन पर कैबिनेट ने मुहर लगा दी है। नए नियमों के तहत रिक्त पदों की तुलना में चार गुणा की बजाय सीईटी पास 10 गुणा युवाओं को अगले चरण के लिए बुलाया जाएगा। इसके साथ ही सीईटी आयोजित करने का रास्ता साफ हो गया है। वहीं, पांच साल पुराने कच्चे कर्मचारियों की सेवाएं सेवानिवृत्ति आयु तक सुनिश्चित करने के लिए कैलेंडर ईयर में 240 दिन काम करने की शर्त भी सरकार ने हटा दी है।

सीएम सैनी ने विपक्ष पर जमकर बोला हमला शनिवार को कैबिनेट बैठक के बाद मीडिया से बातचीत में मुख्यमंत्री नायब सैनी ने विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए कहा कि भर्ती रोको गैंग नहीं चाहता था कि गरीब परिवारों के युवाओं को नौकरियों में अतिरिक्त अंक मिलें। भर्ती रोको गैंग हाई कोर्ट चला गया, जहां से सामाजिक-आर्थिक आधार के अंकों पर रोक लग गई। इस कारण हमें नीति में बदलाव करना पड़ा है। कुछ तत्व युवाओं के भविष्य को बाधित करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन प्रदेश सरकार युवाओं के हितों के लिए प्रतिबद्ध है और इस प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी बनाएगी। तृतीय और चतुर्थ श्रेणी भर्तियों की परीक्षा के अगले चरण में सीईटी पास चार गुना अभ्यर्थियों की बजाय 10 गुना करने से अधिक युवाओं को मौका मिलेगा और प्रतियोगिता का स्तर बेहतर होगा। इससे योग्य उम्मीदवारों को बेहतर अवसर मिलेंगे। संविदा कर्मचारियों के लिए हुआ ये फैसला मंत्रिमंडल ने संविदा कर्मचारी (सेवा की सुरक्षा) अधिनियम-2024 में संशोधन करने के लिए अध्यादेश को मंजूरी दी है। संशोधन के तहत एक कैलेंडर वर्ष में वाक्यांश को अनुबंधित सेवा की एक वर्ष की अवधि के दौरान से बदल दिया जाएगा। प्रभावित कर्मचारियों ने अनुरोध किया था कि 240 दिवसीय सेवा आवश्यकता की गणना कैलेंडर वर्ष के बजाय एक वर्ष की संविदा सेवा अवधि के दौरान वास्तविक दिनों की संख्या के आधार पर की जाए। इसका लाभ उन संविदा कर्मचारियों को मिलेगा जो 15 अगस्त 2024 से पहले पांच साल की संविदा सेवा पूरी कर लेंगे। आवास और भोजन की व्यवस्था न होने पर सरकार करेगी होटल बिल की प्रतिपूर्ति हरियाणा सिविल सेवा (यात्रा भत्ता) नियम-2016 में संशोधन किया गया है। यदि प्रशिक्षण संस्थान या हरियाणा सरकार द्वारा आवास और भोजन की व्यवस्था की जाती है, लेकिन प्रशिक्षु इसका लाभ नहीं उठाता तो उसे कोई होटल शुल्क नहीं दिया जाएगा। यदि प्रशिक्षण संस्थान या हरियाणा सरकार आवास और भोजन की व्यवस्था नहीं करती तो प्रशिक्षु की पात्रता के अनुसार होटल शुल्क की प्रतिपूर्ति की जाएगी। 25 लाख रुपये तक मिलेगी ग्रेच्युटी सरकारी कर्मचारियों और न्यायिक अधिकारियों के लिए मृत्यु-सह-सेवानिवृत्ति ग्रेच्युटी में 25 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। यह वृद्धि एक जनवरी 2024 से प्रभावी होबी। डेथ-कम-रिटायरमेंट ग्रेच्युटी की अधिकतम सीमा 25 लाख रुपये रहेगी। अभी तक 20 लाख रुपये तक ग्रेच्युटी दी जा रही थी। इंजीनियरिंग विंग के कर्मचारियों के वेतन को फिर से निर्धारित करने की जरूरत नहीं मंत्रिमंडल की बैठक में हरियाणा सिविल सेवा (संशोधित वेतन) नियम-2008 तथा हरियाणा सिविल सेवा (सुनिश्चित करियर प्रगति) नियम-2008 में संशोधन के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई। यह नियम एक सितंबर 2009 से लागू माने जाएंगे।

दो पुलिस मुठभेड़ों में चार अपराधी गिरफ्तार, दो पुलिस की गोली से हुए लंगड़े

प्रात: किरण संवाददाता

गाजियाबाद। पिछले 36घंटों पर नजर मारे तो दिल्ली से सटे गाजियाबाद में पुलिस बदमाशों पर भारी पड़ रही है। इस दौरान अलग-अलग मुठभेड़ों में पांच अपराधियों को पुलिस की गोली लगी है। खासबात यह भी है कि अपराधियों की बारिश के कारण मोटरसाइकिल या स्कूटी फिसली है और उसने पुलिस पार्टी पर फायर किया है। जिसके बाद पुलिस की करवाई में सभी घायल अपराधियों के पैरों में गोली लगी है। तीन अपराधी शुक्रवार की रात व शनिवार को दिन में पकड़े गए थे, जबकि शनिवार की रात में टीन अपराधी पकड़े गए हैं। जिनमें दो विजयनगर और दो शालीमार गार्डन पुलिस ने मुठभेड़ में पकड़ने का दावा किया है। एसीपी रितेश त्रिपाठी ने रविवार की सुबह बताया कि थाना विजयनगर पुलिस को बिजलीघर चौराहे पर चेंकिग के दौरान एक बाइक पर दो व्यक्ति आते दिखायी दिये तो पुलिस ने चेंकिग के लिए रुकने के लिए कहा। इस पर वे डीपीएस स्कूल की तरफ भागने लगे। संदिग्ध मानते हुए पुलिस ने पीछा और दूसरी तरफ सिद्धार्थ बिहार पर चेंकिग कर पुलिस टीम को भी उनको घेरने के लिए कहा गया। दोनो तरफ से घिरता हुए देख बाइक को सर्विस लेन की तरफ भागने लगे। पुलिस टीम द्वारा पीछा किया तो कीचड़ के रास्ते में इनकी बाइक जल्दबाजी में फिसल गई। पुलिस ने एकबार फिर उन्हें रुकने के लिए कहा तो बाइक पर पीछे बैठे व्यक्ति ने पुलिस पर फायर कर दिया। पुलिस की जवाबी फायरिंग में फायर कर रहे व्यक्ति के पैर में गोली लगी एवं दूसरे व्यक्ति को मौके से पकड़ा गया। पूछताछ में बाइक चला रहे व्यक्ति ने अपना नाम अंशु एवं पीछे बैठे व्यक्ति का नाम हर्ष बताया। त्रिपाठी ने बताया कि 28दिसंबर को थाना विजयनगर क्षेत्रान्तर्गत एक व्यक्ति से मोबाइल स्नैंचिग एवं एक महिला से पर्स छीनने की घटना हुई थी जिसे इन्हीं अपराधियों ने अंजाम दिया था। उनके कब्जे से 03 मोबाइल, एक तमंचा, एक जिन्दा कारतूस व एक मोटरसाइकिल बरामद हुई है।

एसीपी सलोनी अग्रवाल ने बताया कि थाना शालीमार गार्डन पुलिस सेक्टर 03 राजेन्द्र नगर जीडीए मार्केट में वजीराबाद रोड की तरफ से आने वाले रास्ते पर चेकिंग की जा रही थी। तभी स्कूटी सवार दो व्यक्ति डीएवी कट वजीराबाद रोड की तरफ से आते दिखाई दिये जिनको चेकिंग हेतु रुकने का इशारा किया गया तो नहीं रुके और अपनी स्कूटी को पीछे मोड़कर तेजी से वजीराबाद रोड की तरफ भागने लगे शक होने पर पुलिस टीम द्वारा पीछा किया गया तो पुलिस टीम को अपने पीछे आते देख भाग रहे बदमाशो के द्वारा स्कूटी को तेजी से भगाने व बारिश होने के कारण स्कूटी वजीराबाद रोड कट से पहले गीली मिट्टी होने के कारण फिसल कर गिर गई। पुलिस को पीछे आते देख भाग रहे बदमाशो द्वारा पुलिस पार्टी पर जान से मारने की नियत से सीधा फायर कर दिया।पुलिस की जवाबी कार्यवाही में पुलिस पार्टी पर फायर कर रहे बदमाशो मे से एक बदमाश घायल हो गया तथा दूसरा बदमाश मौके से भाग गया जिसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम को पीछे भेजा गया। घायल बदमाश का नाम मंसूर खान उर्फ राजु पुत्र मंजूर निवासी जी 380 शहीदनगर थाना साहिबाबाद। है। कुछ देर में ही दूसरे बदमाश वाजिद उर्फ दानिश पुत्र शमी आलम निवासी राजीव कॉलोनी डीएलएफ थाना शालीमार गार्डन गिरफ्तार कर लिया।

षडयंत्रों से बाहर निकलकर करना होगी नूतन वर्ष की अगवानी

देश में राजनैतिक वर्चस्व के लिए तरह-तरह के हथकण्डे अपने की होड लग गई है। कभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रिय भजन पर विवाद पैदा हो रहा है तो कभी पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के अन्तिम संस्कार को लेकर वक्तव्य दिये जा रहे है। कहीं संभल के अतीत को भुनाने की कोशिश की जा रही है तो कहीं बिहार लोक सेवा आयोग को निशाना बनाया जा रहा है। कहीं किसान आन्दोलन की आड में दाव खेले जा रहे हैं तो कहीं कथित अन्याय को न्याय में बदलने का मुद्दा उछाला जा रहा है। ज्यों-ज्यों नये साल के आगमन का समय नजदीक आ रहा है त्यों-त्यों राजनैतिक गलियारों में नीतियों-रीतियों के रंग बदल रहे हैं। सत्ताधारी दलों से लेकर विपक्ष तक के मंसूबों ने चारों ओर सुर्खियां पैदा करने वाला वातावरण निर्मित कर दिया है। भारतीय जनता पार्टी ने पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेई की 100 वीं जन्म जयंती पर देश भर में कार्यक्रम आयोजित किये ताकि पार्टी के रेखांकित किये जाने वाले दिग्गज की पारदर्शी छवि का राजनैतिक लाभ लिया जा सके। इसी दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर रघुपति राघव राजा राम वाले लोकप्रिय भजन को विकृत करने के आरोपों का दौर भी शुरू हो गया। कहा जा रहा है कि गांधी जी ने सुन्दर विग्रह मेधाश्याम, गंगा तुलसी शालिग्राम को हटाकर उसके स्थान पर ईश्वर अल्लाह तेरो नाम, सब को सन्मति दे भगवान जोडकर उसके मूल स्वरूप को नष्ट किया था। आरोप लगाने वाले कुछ लोगों के अनुसार यह भजन 17वीं सदी में प्रसिध्द संत स्वामी रामदास ने लिखा था, तो कुछ लोग इसके रचनाकार के रूप में पंडित लक्ष्मणाचार्य का नाम ले रहे हैं। मूल रचना के कथित संशोधनों पर स्वाधीनता के बाद पहली बार कठोर प्रतिक्रिया सामने आई जिस पर कांग्रेस सहित अनेक विपक्षी दलों ने भारतीय जनता पार्टी को घेरना शुरू कर दिया है। इस दिशा में सोच का आधार, कथित संशोधन का परिणाम और भक्ति साहित्य के स्वरूप को विवेचित किये बिना केवल वोट बैंक के चश्मे से देखा जा रहा है। ऐसी ही घटना पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के अन्तिम संस्कार के दौरान सामने आई। कांग्रेस ने इसे लेकर प्रश्नवाचक चिन्हों की झडी लगा दी। निगम बोध घाट सहित अनेक मुद्दों पर जबाब मांगा गया। तो दूसरी ओर उत्तर प्रदेश के संभल में निरंतर चल रही खुदाई, वहां मिल रहे अवशेष और गौरवशाली अतीत की सजीव होती स्मृतियों को भी राजनैतिक आइने से ही देखा जाने लगा है। आक्रान्ताओं से लेकर प्रकृति तक के प्रतिशोधों के परिणामात्मक इतिहास ने एक बार फिर नये सिरे से समीक्षा की आवश्यकता निर्धारित कर दी है। सम्प्रदायगत वोटों को समेटने के लिए नित नये सगूफे छोडे जा रहे हैं। कहीं भगवां और हरे रंगो पर शब्दों की जुगाली हो रही है तो कहीं अल्पसंख्यक और बहुसंख्यकों का शोर तेज हो रहा है। दया और क्रूरता की विपरीत सांस्कृतिक विरासत पर एक नई जंग होने लगी है। बिहार लोक सेवा आयोग को भीड के दबाव में लेने के षडयंत्र तेज हो गये है जिसमें वामपंथी राजनीति के दिग्गजों सहित कोचिंग व्यवसायी भी कूद पडे हैं। पटना की सडकों से सैकडों कोस दूर दिल्ली में स्टूडेन्ट फेडरेशन आफ इण्डिया ने अपने झंडे ऊंचे कर दिये तो गुरु रहमान और खान सर जैसे अनेक कोचिंग व्यवसायी भी आयोग और सरकार को घेरने में विपक्ष के साथ खडे हो गये हैं। जनसुराज पार्टी के मुखिया प्रशान्त किशोर ने तो पटना से लेकर दिल्ली तक की लडाई में साथ देने का वादा तक कर दिया है। ऐसे ही प्रयास किसान आंदोलन के दौरान भी देखने को मिले थे जब किसानों की जमात में असामाजिक तत्वों ने खुलेआम गुण्डागिरी की थी। पंजाब के वयोवृध्द किसान जगजीत सिंह डल्लेवाल की चिन्ता किये बिना वहां के मांगकर्ता और सरकार अपने-अपने रुख पर अडियल रवैया अपनाये दिखती रही। सत्ता और विपक्ष की वोट राजनीति के मध्य समूचा देश पिसता जा रहा है। साम्प्रदायिकता को हथियार बनाकर लडने वालों ने भी अब अपने वक्तव्यों से राष्ट्रवादिता का प्रदर्शन शुरू कर दिया है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत के वक्तव्य पर अनेक संतों के विरोध दर्ज होने लगे। वास्तविक संतों की भीड में घुसपैठ बना चुके राजनैतिक संत भी मौका पाकर अपने उद्गारों को भगवां में लपेटकर परोस रहे हैं। ऐसे घटनाक्रम के मध्य प्रयागराज में आयोजित होने वाले महाकुम्भ पर असुरक्षा के काले बादल मडराना स्वाभाविक ही है जिन्हें प्रभावहीन करने हेतु सरकारी तंत्र को अग्नि परीक्षा देना ही होगी। खालिस्तान समर्थक आतंकवादियों तथा इस्लामिक कट्टरपंथियों व्दारा खुलकर सनातन के इस अतिविशिष्ट आयोजन में खलल डालने की धमकी दी जा चुकी है।

जीएसटी: पाकिस्तान नहीं अब पॉपकॉर्न में उलझी सरकार

बात-बात पर पाकिस्तान का नाम लेने वाली और वन नेशन वन टैक्स का नारा देने वाली मोदी सरकार अब पॉपकॉर्न पर उलझ गई है। फ्लेवर्स के हिसाब से पॉपकॉर्न पर तीन तरह के टैक्स हैं। स्थिति ये है कि सरकार की तरफ से सफाई तक देनी पड़ी। सोशल मीडिया में पुरानी और उपयोग की गई गाड़ियों के बेचने पर जीएसटी लगाने को लेकर सरकार की फजीहत हो रही है। हाल ही में हुई जीएसटी काउंसिल में पुरानी और उपयोग की हुई गाड़ियों के बेचने पर जीएसटी लगाने को लेकर फैसला लिया गया। इसमें इलेक्ट्रिक व्हीकल्स भी शामिल है। आलोचना और सोशल मीडिया पर किरकिरी के बाद पुरानी गाड़ियों के बेचने पर जीएसटी लगाने को लेकर फैले भ्रम को दूर करने की कोशिश की गई। सरकार ने साफ किया है कि अगर पुरानी गाड़ियों के बेचने पर मार्जिन नेगेटिव में है और कोई मुनाफा नहीं हो रहा है तो उसपर जीएसटी नहीं देना होगा। हालांकि ये कोई पहला मौका नहीं है जब इस तरह की स्थिति बनी हो। इससे पहले भी कपड़े पर जीएसटी को लेकर गुजरात के व्यापारियों ने मुहिम चलाई थी। केन्द्र सरकार ने पुरानी और यूज्ड गाड़ियां जिसमें ईवी भी शामिल है उसे बेचे जाने पर जीएसटी को लेकर उपजी भ्रम की स्थिति को दूर करने की कोशिश की है। ईवी के अलावा पुरानी और यूज्ड गाड़ियों के सेल को लेकर सरलीकरण किया गया है। जीएसटी काउंसिल ने सभी पुरानी और इस्तेमाल की गई गाड़ियां जिसमें ईवी भी शामिल है उस पर 18 फईसदी जीएसटी लगाने का फैसला लिया है, पहले अलग-अलग दरें लगाई जाती थी। जीएसटी काउंसिल ने कोई भी नया टैक्स लगाने की सिफारिश नहीं की है। ये भी कहा गया है कि केवल रजिस्टर्ड व्यक्ति जो पुरानी और यूज्ड गाड़ियों के सेल से जुड़े कारोबार करते हैं उन्हें ही जीएसटी का भुगतान करना है। कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को पुरानी और यूज्ड कार बेचता है तो ऐसे मामले में जीएसटी लागू नहीं होगा। पुरानी और उपयोग की गई गाड़ियों के सेल वैल्यू पर जीएसटी दिए जाने के सवाल पर कहा गया है कि जीएसटी में रजिस्टर्ड व्यक्ति ने इनकम टैक्स एक्ट 1961 के सेक्शन 32 के तहत डेप्रीसिएशन क्लेम किया है, जीएसटी केवल सप्लायर के मार्जिन वैल्यू पर देना होगा। यानि पैसेंजर गाड़ियों के सेल वैल्यू और डेप्रीसिएटेड वैल्यू के बीच जो अंतर होगा उसपर जीएसटी का भुगतान करना होगा लेकिन ऐसे मामलों में जब मार्जिन नेगेटिव में रहेगा तब कोई जीएसटी नहीं लगेगा। इसी तरह जीएसटी काउंसिल की मीटिंग में ये तय किया गया है कि सिनेमा हॉल में खुले में बिकने वाले पॉपकॉर्न पर रेस्तरां की तरह 5 प्रतिशत की दर से जीएसटी लगेगा। पॉपकॉर्न पर लगने वाले जीएसटी को लेकर कन्फ्यू जन की स्थिति बन गई थी। इसके बाद बताया गया है कि यदि पॉपकॉर्न को फिल्म टिकट के साथ बेचा जाता है तो इसे टोटल सप्लाजई के रूप में माना जाएगा। चूंकि इस मामले में खास सप्लाजई टिकट की है, इसलिए उसकी लागू दर के अनुसार टैक्सॉ लगाया जाएगा। पॉपकॉर्न पर लगने वाली जीएसटी में किसी तरह का इजाफा नहीं किया गया है। सूत्रों के अनुसार पॉपकॉर्न को सिनेमा हॉल में खुले रूप में बेचा जाता है यही कारण है कि इस पर रेस्तरां सर्विस की तरह 5 प्रतिशत की दर से जीएसटी लागू रहेगी। जीएसटी के तहत नमक और मसालों वाले पॉपकॉर्न को नमकीन के रूप में कैटेगराइज किया जाता है और इसपर 5 प्रतिशत टैक्स लगता है। जब इसे पैक्डग और लेबल के साथ बेचा जाता है तो दर 12 प्रतिशत होती है। कुछ वस्तुओं को छोड़कर सभी चीनी कन्फेक्शनरी पर 18 प्रतिशत जीएसटी लगता है। इसलिए कारमेलाइज चीनी वाले पॉपकॉर्न पर 18 प्रतिशत की दर से जीएसटी की दर लागू होगी। सीधे शब्दों में कहा जाए तो पॉपकॉर्न में भी तीन तरह के टैक्स लग रहे हैं। जीएसटी काउंसिल की बैठक में सरकार की ओर से कई फैसले लिए गए हैं। सरकार ने पुरानी गाड़ियों से लेकर पॉपकॉर्न तक पर जीएसटी लगाने की घोषणा कर डाली। सोशल मीडिया पर सबसे ज्यादा बहस छिड़ी पॉपकॉर्न पर लगे जीएसटी को लेकर है। पॉपकॉर्न को लेकर तीन तरह के टैक्स के कारण लोगों ने मुखर होकर हमला बोला। एक वर्ग का कहना है कि अब तो बच्चों को पॉपकॉर्न खिलाना तक मंहगा हो गया है। लोगों का कहना है कि कि पॉपकॉर्न खरीदने से पहले जीएसटी स्लैब देखना पड़ेगा।

नया साल सिर्फ जश्न नहीं, आत्म-परीक्षण और सुधार का अवसर भी...

31 दिसम्बर की आधी रात को हम 2024 को अलविदा कह देंगे और कैलेंडर 1 जनवरी यानी 2025 के नए साल के दिन के लिए अपना नया पन्ना खोलेगा। उतार-चढ़ाव, मजेदार पल और कुछ खास नहीं-यह सब अब अतीत की बात हो जायेंगे। हम एक नए साल के मुहाने पर खड़े हैं, जो हमारे सामने आने वाली हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार है। हवा में उत्साह और चिंतन की गूंज है, जैसे पुरानी यादों और उम्मीदों का एक बेहतरीन मिश्रण। बुद्धिमान लोग कहते हैं कि जीवन विरामों के बीच में ज़िया जाता है-जैसे कि सांस छोड़ने के ठीक बाद और सांस लेने से पहले। हर अंत बस एक और शुरूआत है। वास्तव में इसे महसूस करने के लिए साल के पहले दिन से बेहतर कोई समय नहीं है...

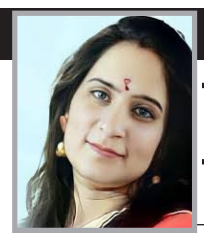

प्रियंका सौरभ
लेखिका

एक नया साल एक नई शुरूआत है। यह एक नए जन्म की तरह है। नया साल शुरू होते ही हमें लगता है कि हमें अपने जीवन में बदलाव करने, नई राह पर चलने, नए काम करने और पुरानी आदतों, समस्याओं और कठिनाइयों को अलविदा कहने की जरूरत है। अक्सर हम नई योजनाएँ और नए संकल्प बनाने लगते हैं। हम उत्साहित, प्रेरित और आशावान महसूस कर सकते हैं, लेकिन कभी-कभी आशंकित भी होते हैं। कवियों और दार्शनिकों ने अक्सर दोहराया है कि भविष्य में जो कुछ भी करना है, उसमें जीवन ने जो सबक हमें सिखाया है, उसे लागू करना जरूरी है। लेकिन यह कहना जितना आसान है, करना उतना ही मुश्किल है। लोग एक-दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएँ देते हैं। संदेश, ग्रीटिंग कार्ड और उपहारों का आदान-प्रदान नए साल के जश्न का अभिन्न अंग है। मीडिया कई नए साल के कार्यक्रमों को कवर करता है, जिन्हें दिन के अधिकांश समय प्राइम चैनलों पर दिखाया जाता है। जो लोग घर के अंदर रहने का फैसला करते हैं, वे मनोरंजन और मौज-मस्ती के लिए इन नए साल के शो का सहारा लेते हैं। नया साल सिर्फ.जश्न मनाने का समय नहीं है, बल्कि आत्म-परीक्षण और सुधार का अवसर भी है। अतीत की गलतियों से सीखते हुए हमें अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास करना चाहिए। आइए हम अपने लक्ष्यों को स्पष्ट करें और उन्हें प्राप्त करने की योजना बनाएँ। आइए हम नकारात्मकता को पीछे छोड़ें और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएँ। आइए हम जरूरतमंदों की मदद करके समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी निभाएँ। आइए हम आत्म-विकास के लिए प्रयास करते रहें और नई चीजें सीखते रहें। लोग रंग-बिरंगे कपड़े पहनते हैं और मौज-मस्ती से भरी गतिविधियाँ करते हैं जैसे गाना, खेलना, नाचना और पार्टियों में जाना। नाइट क्लब, मूवी थिएटर, रिसॉर्ट, रेस्टोरेंट और मनोरंजन पार्क हर उम्र के लोगों से भरे हुए हैं। आने वाले साल के लिए नए संकल्पों की योजना बनाने की सदियों पुरानी परंपरा आम है। कुछ सबसे लोकप्रिय संकल्पों में वजन कम करना, अच्छी आदतें विकसित करना और कड़ी मेहनत करना शामिल है। आज के समय में, जब पर्यावरण के मुद्दे एक गंभीर चिंता का विषय हैं, तो पर्यावरण के प्रति संवेदनशील तरीकों से नए साल का जश्न मनाना हमारी जिम्मेदारी बन जाती है। पटाखों का उपयोग कम करना, पेड़ लगाना और जल संरक्षण इस दिशा में सकारात्मक कदम हो सकते हैं। नया साल हमें अतीत की कड़वाहट को भूलकर नए रिश्ते शुरू करना सिखाता है। आइए हम एक-दूसरे के प्रति प्रेम और सद्भावना व्यक्त करें। आइए हम उन लोगों को सही रास्ते पर लाने का प्रयास करें जो अपना रास्ता भूल गए हैं। भगवद गीता में भगवान कृष्ण की शिक्षाएँ हमें याद दिलाती हैं कि हमें अपना काम करना चाहिए और परिणाम भगवान पर छोड़ देना चाहिए। नया साल सिर्फ.कैलेंडर बदलने के बारे में नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन को एक नई दिशा देने का अवसर है। यह नई ऊर्जा, उत्साह और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ने का समय है। आइए हम सब मिलकर इस नए साल को अपने और समाज के लिए बदलाव का साल बनाएँ। अब, सभी चमक-दमक के बीच, नए साल का दिन कुछ गंभीर सोच-विचार का भी समय है। हाँ, हम आत्मनिरीक्षण के बारे में बात कर रहे हैं-पिछले साल को पीछे देखते हुए और यह पता लगाते हुए कि हमने क्या सीखा है। क्या हमने आखिरकार मकड़ियों के डर पर विजय प्राप्त की? क्या हमने उन लोगों के साथ पर्याप्त समय बिताया जो सबसे ज्यादा मायने रखते हैं? यह कुछ हद तक हमारे जीवन की मुख्य घटनाओं को स्क्रॉल करने और यह सोचने जैसा है, ह्वाह, क्या मैंने वाकई ऐसा किया?ह्व एक पेड़ लगाएँ, अपने भविष्य के लिए एक पत्र लिखें, या बोर्ड गेम का लुत्फ उठाएँ। इसे अपने लिए अनोखा बनाएँ और हर साल इसका इंतजार करें। अब, इस तरह से आप एक परंपरा की शुरूआत कर सकते हैं! नए साल के दिन सोच-समझकर उपहार देकर प्यार फैलाएँ। यह कीमत के बारे में नहीं बल्कि इशारे के पीछे की भावना के बारे में है। एक हस्तलिखित नोट, एक व्यक्तिगत ट्रिंकेट, या एक हार्दिक संदेश दुनिया भर में अंतर ला सकता है जब आप उन लोगों के लिए अपनी प्रशंसा व्यक्त करते हैं जो सबसे ज्यादा मायने रखते हैं। अक्सर, हम या तो इसे महसूस नहीं करते या इसे स्वीकार करने से इनकार करते हैं और एक ऐसी कहानी लिखने की कोशिश करते हैं जो पहले ही खत्म हो चुकी है। ऐसे समय में हमें याद रखना चाहिए कि कभी-कभी कलम को नीचे रखना ठीक होता है। बंद दरवाजे से जूझना ठीक नहीं है। इससे चिपके रहने से आप दूसरी तरफ की खिड़की को देख नहीं पाते। जैसा कि माइंडफुलनेस प्रैक्टिशनर कहते हैं, सबसे बड़ी सच्चाई यह है कि नए सिरे से शुरूआत करने के लिए आपके पास मौजूद पल से बेहतर कोई समय नहीं है। नए साल की सुबह, सबसे अच्छी स्थिति में, केवल सही सेटिंग ही बना सकती है; बाकी, जैसा कि वे कहते हैं, सब आपके भीतर है। हालाँकि, आप नए साल के दिन 2025 को धूम मचाने का फैसला करते हैं, इसे यादगार बनाते हैं। ऐसे नाचें जैसे कोई देख नहीं रहा हो, ऐसे हँसें जैसे यह अब तक का सबसे अच्छा मजाक हो और अपने दोस्तों को ऐसे गले लगाएँ जैसे आपने उन्हें एक दशक से नहीं देखा हो।

पूर्व प्रधानमंत्री का अंतिम संस्कार विवाद : सरदार की नहीं, सरकार की मिटटी पलीद

हर व्यक्ति बिना किसी असुविधा के अंतिम दर्शन कर श्रद्धांजलि दे पाए। , लेकिन इस मुद्दे पर सियासत केवल भारत में होती है। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने आरोप लगाया कि मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार के लिए यथोचित स्थान उपलब्ध नहीं करा कर सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री के पद की गरिमा, मनमोहन सिंह जी की शख्सियत, उनकी विरासत और खुद्दार सिख समुदाय के साथ न्याय नहीं किया। आपको बता दें की राष्ट्रिय स्मारक स्थल के लिए यूपीए सरकार के जमाने में 2013 में अलग से जिस जगह का आवंटन किया गया था वहीं पर 2018 में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का अंतिम संस्कार किया गया था, लेकिन डॉ. मन मोहन सिंह का अंतिम संस्कार निगम बोध घाट पर कराया गया।

राकेश अचल
लेखक

देश के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मन मोहन सिंह अपनी जीवन यात्रा के पूर्ण होने के बाद भी मौन ही रहे, उनके अंतिम संस्कार स्थल को लेकर देश की सरकार ने जो संकीर्णता दिखाई उससे दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री सरदार डॉ. मन मोहन सिंह की नहीं बल्कि देश की सरकार की मिटटी पलीद हो गयी। डॉ. मन मोहन सिंह की पार्थिव देह का अंतिम संस्कार निगम बोध घाट पर हुआ तो भी उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ा लेकिन ये सवाल जरूर खड़ा हो गया कि देश के किसी पूर्व प्रधानमंत्री के अंतिम संस्कार को लेकर सरकार के पास कोई मान्य नियमावली है या सब कुछ मनमानी से होता है? कांग्रेस ने डॉ. मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार ऐसे स्थल पर करने के लिए सरकार से आग्रह किया था जहां उनका स्मारक बनाया जा सके, लेकिन सरकार ने कांग्रेस का आग्रह नहीं माना और दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री का अंतिम संस्कार एक सामान्य नागरिक की तरह निगम बोध श्मशान में करा दिया। सरकार का हाथ कोई रोक नहीं सकता। और डॉ. मनमोहन सिंह ने ऐसी कोई वसीयत छोड़ी नहीं थी जिसमें उन्होंने अपने अंतिम संस्कार के लिए कोई खास स्थान की इच्छा जताई होती। ऐसे में सरकार का निर्णय ही अंतिम होना था सो हुआ। मुझे याद है कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी का अंतिम संस्कार 17 अगस्त 2018 को विजयघाट पर किया गया था, लेकिन तब अटल जी की पार्टी की सरकार थी और कल जब डॉ. मन मोहन सिंह का अंतिम संस्कार किया गया तब उनकी पार्टी की सरकार नहीं थी अन्यथा वे भी किसी विजय घाट पर ही अग्नि की समर्पित किये जाते। दुर्भाग्य ये है कि संकीर्णता का प्रदर्शन करने वाली सरकार अब डॉ. मन मोहन सिंह के अंतिम संस्कार के फैसले पर खेद प्रकट करने के बजाय पूरी बेशर्मी से राजनीति कर रही है। पार्टी के अध्यक्ष जेपी नड्डा से लेकर छुटभैया भाजपा नेता तक अपनी सरकार के फैसले का बचाव करने में लगे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार के लिए स्थल के चयन और उनके नाम पर स्मारक को लेकर सियासी घमासान मच गया. कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने जहां केंद्र सरकार पर पूर्व प्रधानमंत्री की स्मृति का ह्यअपमानह्न करने का आरोप लगाया। वहीं बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पलटवार करते हुए कहा कि राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे पूर्व प्रधानमंत्री के दुखद निधन पर भी राजनीति करने से बाज नहीं आ रहे हैं।नड्डा ने कहा कि केंद्र सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के स्मारक के लिए जगह आवंटित की थी और उनके परिवार को इसकी जानकारी भी दी थी। उन्होंने कहा, ह्यकांग्रेस की ऐसी ओछी सोच की जितनी भी निंदा की जाए कम है।कांग्रेस, जिसने मनमोहन सिंह को उनके जीवित रहते कभी वास्तविक सम्मान नहीं दिया, अब उनके सम्मान के नाम पर राजनीति कर रही है। ह्नइससे पहले कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर देश के पहले सिख प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार के लिए उचित स्थान न देने का आरोप लगाया है, जहां बाद में उनका स्मारक बनाया जा सकता था। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा कि बीजेपी ने केंद्र सरकार ने मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार निगमबोध घाट पर करवाकर ह्यभारत माता के महान सपूत और सिख समुदाय के पहले प्रधानमंत्रीह्न का सरासर अपमान किया है। दुनिया भर में आज तक सभी पूर्व राष्ट्र प्रमुखों की गरिमा का आदर करते हुए उनके अंतिम संस्कार अधिकृत समाधि स्थलों में किए जाते हैं ताकि हर व्यक्ति बिना किसी असुविधा के अंतिम दर्शन कर श्रद्धांजलि दे पाए। , लेकिन इस मुद्दे पर सियासत केवल भारत में होती है। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने आरोप लगाया कि मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार के लिए यथोचित स्थान उपलब्ध नहीं करा कर सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री के पद की गरिमा, मनमोहन सिंह जी की शख्सियत, उनकी विरासत और खुद्दार सिख समुदाय के साथ न्याय नहीं किया। आपको बता दें की राष्ट्रिय स्मारक स्थल के लिए यूपीए सरकार के जमाने में 2013 में अलग से जिस जगह का आवंटन किया गया था वहीं पर 2018 में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का अंतिम संस्कार किया गया था, लेकिन डॉ. मन मोहन सिंह का अंतिम संस्कार निगम बोध घाट पर कराया गया। सरकार के फैसले से डॉ. मन मोहन सिंह के परिजन दुखी हैं या नहीं लेकिन पूरा सिख समुदाय अपने आपको अपमानित अनुभव कर रहा है। दुःख की बात तो ये है कि अपनी सरकार के गलत फैसले के खिलाफ केंद्रीय मंत्रिमंडल के अकेले सिख मंत्री हरदीप सिंह पुरी भी कुछ नहीं बोले। बोलते कैसे, इतना साहस ही नहीं था उनमे। वे कोई डॉ. मनमोहन सिंह थोड़े ही हैं। लगता है कि सरकार डॉ. मन मोहन सिंह की मिटटी पलीद करना चाहती थी किन्तु उसके फैसले से खुद सरकार की मिटटी पलीद हो गयी। पूरी दुनिया ने देखा की निगम बोध घाट पर कैसे प्रबंध थे। डॉ. मन मोहन सिंह के परिजनों तक के बैठने का इन्तिजाम नहीं था। दूरदर्शन को छोड़ किसी दूसरे टीवी चैनल के कैमरे अंदर नहीं जाने दिए गए। डॉ. मन मोहन सिंह के अंतिम संस्कार के लिए स्थल चयन के पीछे सरकार की कौन सी मानसिकता थी इसका आकलन समय करेगा, किन्तु अब ये सवाल भी मुंह बाये खड़ा है कि क्या भविष्य में भी देश के पूर्व प्रधानमंत्रियों और राष्ट्रपतियों के अंतिम संस्कार के समय इसी तरह के विवाद खड़े होंगे या इस मुद्दे पर कोई स्पष्ट प्रोटोकॉल तय किया जाएगा? क्योंकि मरना तो सभी को है, कोई अमरौती खाकर नहीं आया। और कोई भला आदमी मरने से पहले अपने अंतिम संस्कार के लिए वसीयत लिखने से रहा। भाजपा कि सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपेयी का अंतिम संस्कार विजयघाट पर कराया था और अब आठ साल बाद 20 करोड़ कि लागत से स्मारक बनवा रही है ग्वालियर में।

इण्डिया गठबंधन वैचारिक एकता पर आधारित हो अवसरवाद पर नहीं

तनवीर जाफरी

लोकसभा चुनावों से पहले यानी जुलाई 23 में 15 दलों के साथ बने उसी संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन अर्थात यू पी ए ने इण्डिया गठबंधन नामक एक नया विपक्षी गठबंधन बनाने का प्रयास शुरू किया था। परन्तु इस बार इसमें 15 राजनैतिक दल नहीं बल्कि 26 पार्टियां शामिल हुई थीं। इण्डिया गठबंधन के अस्तित्व में आते ही सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के नेताओं की नींदें उड़ गयी थीं। सबसे पहले तो भाजपा नेता काफी दिनों तक इण्डिया गठबंधन (भारतीय राष्ट्रीय विकासशील समावेशी गठबंधन) में क्टउक्कअ नाम के शामिल होने पर ही शोर शराबा करते रहे। उसके बाद जिस भाजपा ने दस वर्षों तक अपने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सहयोगियों की कभी बैठक बुलाने की जरुरत महसूस नहीं की थी उसी भाजपा को इण्डिया गठबंधन के मुकाबले राजग/एनडीए की भी पहली बार बैठक बुलानी पड़ी। उधर इण्डिया गठबंधन पर सिर मुंडाते ही ओले तब पड़ने लगे जबकि इण्डिया गठबंधन के अगुआकारों में सबसे अग्रणी भूमिका निभाने वाले बिहार के मुख्यमंत्री नितीश कुमार स्वयं ही इण्डिया गठबंधन छोड़ भाजपा से ही गलबहियां कर बैठे। परन्तु इसके बावजूद 2024 में आये चुनाव परिणाम ने यह सन्देश जरूर दे दिया कि यदि विपक्ष पूरी ईमानदारी व एकता के साथ सत्ता को चुनौती देगा तो निश्चित रूप से परिणाम चौंकाने वाले होंगे। परन्तु इस हकीकत से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि इसी इण्डिया गठबंधन में कुछ दल ऐसे भी शामिल हैं जिनके गठबंधन में शामिल सबसे बड़े दल कांग्रेस से बुनियादी वैचारिक मतभेद भी हैं। और समय समय पर यह मतभेद उभर कर सामने आते रहते हैं। उदाहरण के तौर पर उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना का अयोध्या मंदिर/मस्जिद विषय तथा सावरकर जैसे मुद्दों को लेकर विशेषकर कांग्रेस व अन्य समाजवादी दलों के साथ मतभेद का प्रश्न? इसी तरह बंगाल में ममता बनर्जी का गठबंधन में शामिल वामदलों को सहन न कर पाना। जबकि कांग्रेस द्वारा पूरी ईमानदारी से गठबंधन धर्म निभाते हुये व बड़ा दल होने के नाते भी बड़े दिल का सुबूत देते हुये हरियाणा से लेकर बंगाल व बिहार झारखण्ड तक वामपंथियों को समझौते के अनुसार प्रतिनिधित्व देने की कोशिश की जाती रही है। इसी तरह देश का सबसे नया राजनैतिक दल यानी आम आदमी पार्टी भी समय समय पर खास तौर पर सीटों के बंटवारे को लेकर सार्वजनिक रूप से गठबंधन की फूट को उजागर करने का काम करती रही है। पंजाब, हरियाणा से लेकर दिल्ली, हिमाचल व गुजरात तक यही देखा जा रहा है। और पिछले दिनों ऐसे समय में जबकि दो महीने बाद ही फरवरी 25 तक दिल्ली विधानसभा की घोषणा की संभावना है इस वातावरण में जबकि इण्डिया गठबंधन को पूरी तरह संगठित नजर आना चाहिए था बजाये इसके बजाये दिल्ली में गठबंधन के दोनों ही प्रमुख सहयोगियों कांग्रेस व आप में तलवारें खिंच गयी हैं। पिछले दिनों कांग्रेस ने दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर दिल्ली की आम आदमी पार्टी सरकार और साथ ही भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के खिलाफ श्वेत पत्र जारी किया। इसी दौरान कांग्रेस नेता अजय माकन ने कई ऐसे आरोप लगा दिये जिससे आप नेता तिलमिला उठे। माकन ने कहा कि ह्यह्लपहले केजरीवाल को समर्थन देना गलती थी और गठबंधन करना भी भूल थी। केजरीवाल भरोसे के योग्य नहीं। उनकी कोई विचारधारा नहीं है। केजरीवाल फजीवाल हैं वे राष्ट्र विरोधी हैं। राष्ट्रविरोधी शब्द से आप तिलमिला उठी और जवाब में आप नेताओं ने कांग्रेस से अजय माकन पर कार्रवाई करने की मांग की। साथ ही यह चेतावनी भी दी कि अगर कांग्रेस ऐसा नहीं करती है तो आम आदमी पार्टी, इंडिया गठबंधन के नेताओं से मांग करेगी कि कांग्रेस को इंडिया गठबंधन से हटाएं।इंडिया गठबंधन में उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना भी कांग्रेस वामपंथियों व अन्य गांधीवादी व समाजवादी विचारधारा रखने वाले दलों के साथ शामिल है। परन्तु यह साथ भी पूरी तरह अवसरवादी है। क्योंकि उद्धव ठाकरे की शिवसेना 6 दिसंबर की अयोध्या घटना का श्रेय भी लेना चाहती है, स्वयं को उस घटना का अगुवाकार भी बताती है। इसी तरह सावरकर को लेकर शिवसेना (उद्धव) के विचार इंडिया गठबंधन में शामिल अन्य दलों से अलग हैं। शिवसेना (उद्धव) सावरकर को हीरो बताती है जबकि इंडिया गठबंधन में शामिल अन्य दल इन दोनों ही मुख्य मुद्दों पर शिवसेना (उद्धव) से मतभेद रखते हैं। दूसरी और इन्हीं दोनों मुद्दों पर भाजपा व शिवसेना (उद्धव) के मत एक समान हैं। गोया वैचारिक व सैद्धांतिक समानता शिवसेना (उद्धव) व भाजपा में है न कि शिवसेना (उद्धव) व कांग्रेस या इंडिया गठबंधन में शामिल अन्य दलों में।

संक्षिप्त खबरें

मथुरा में एनएच-19 पर हुए सड़क हादसे में तीन लोगों की मौत

मथुरा। मथुरा जिले के छाता कोतवाली थाना क्षेत्र में एक चीनी मिल के सामने रविवार सुबह ट्रैक्टर ट्रॉली और ट्रक की टक्कर में तीन व्यक्तियों की मौत हो गयी और एक अन्य व्यक्ति घायल हो गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। छाता कोतवाली के प्रभारी निरीक्षक (एसएचओ) संजय कुमार त्यागी ने कहा, इस हादसे में एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई और दो अन्य ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। हादसा उस समय हुआ, जब तेज रफ्तार ट्रक ने ईंटों से भरी ट्रैक्टर ट्रॉली से आगे निकलने की कोशिश में उसे टक्कर मार दी। पुलिस ने बताया कि दोनों वाहन छाता से मथुरा जा रहे थे। मृतकों की पहचान उमेश, पूरन सिंह और ट्रक चालक प्रिंस के रूप में हुई है। पूरन सिंह ट्रैक्टर पर सवार था। त्यागी ने बताया कि हादसे में घायल तीन लोगों को मेडिकल कॉलेज ले जाया गया, जहां पूरन सिंह और प्रिंस की मौत हो गई, जबकि धर्मेंद्र यादव नाम के व्यक्ति की हालत गंभीर बनी हुई है। उन्होंने बताया कि उमेश की मौत घटनास्थल पर ही हो गई। उन्होंने बताया कि मृतकों की उम्र का अभी पता नहीं चल पाया है। उन्होंने बताया कि शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

बलिया में एसडीएम का फर्जी आदेश जारी करने के आरोपी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

बलिया। बलिया जिले की बांसडीह रोड थाना पुलिस ने उप जिलाधिकारी (एसडीएम) के फर्जी हस्ताक्षर से भूमि पैमाइश का आदेश पारित कर धोखाधड़ी करने के आरोप में एक व्यक्ति के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार, उप जिलाधिकारी सदर आत्रेय मिश्र की तहरीर पर शनिवार को बांसडीह रोड थाने में थाना क्षेत्र के उधो दवनी गांव के शिव शंकर यादव के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की धारा 319 (2) (धोखे से किसी का रूप धारण करके धोखाधड़ी करना) और 318 (4) (धोखाधड़ी और जालसाजी का अपराध) के तहत नामजद मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस ने दर्ज प्राथमिकी का हवाला देते हुए बताया कि मिश्र ने आरोप लगाया है कि उन्होंने भूमि की पैमाइश से संबंधित शिव शंकर यादव के 21 मई 2024 के प्रार्थना पत्र का अवलोकन किया, जिस पर उनका पारित आदेश फर्जी है, क्योंकि इस पर किए गए हस्ताक्षर उनके नहीं है। थाना प्रभारी अखिलेश पांडेय ने रविवार को बताया कि पुलिस मामला दर्ज कर छानबीन कर रही है।

अमरोहा में 10वीं कक्षा की छात्रा ने ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या की

अमरोहा। अमरोहा जिले में भानपुर के निकट 10वीं कक्षा की एक छात्रा ने चलती ट्रेन के आगे कूदकर कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) ने रविवार को यह जानकारी दी। जीआरपी के मुताबिक, गजरौला शहर के अवंतिका नगर मोहल्ले की रहने वाली महक (16) शुक्रवार सुबह घर से स्कूल के लिए निकली थी और उसने शहर के भानपुर के पास ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली। हादसे के बाद घटनास्थल पर राहगीरों की भीड़ जमा हो गई। आरपीएफ (रेलवे सुरक्षा बल) और जीआरपी घटना सूचना मिलने पर घटनास्थल पर पहुंचे। जीआरपी चौकी गजरौला के प्रभारी राजीव सिंह ने बताया कि छात्रा के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। पुलिस ने बताया कि अभी यह पता नहीं चल पाया है कि लड़की ने आत्महत्या क्यों की।

शाहजहांपुर में अपनी कंपनी की महिला अधिकारी के यौन उत्पीड़न के आरोप में एमडी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

शाहजहांपुर। शाहजहांपुर जिले की कांट थाना पुलिस ने एक कंपनी की महिला अधिकारी के यौन उत्पीड़न के आरोप में उसके प्रबंध निदेशक (एमडी) के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस के एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी। नगर क्षेत्र के अपर पुलिस अधीक्षक (एसपी) संजय कुमार ने बताया कि पुलिस ने कंपनी के एमडी एवं आरोपी मनोज यादव के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की धाराओं 75 (2) (यौन उत्पीड़न), 351 (3) (जान से मारने की धमकी) और सूचना प्रौद्योगिकी की धारा 67 (1) के तहत प्राथमिकी दर्ज की है। उन्होंने बताया कि कांट थाने के प्रभारी अश्वनी कुमार सिंह को मामले की जांच सौंपी गयी है। एसपी ने प्राथमिकी के हवाले से बताया कि बाराबंकी की रहने वाली 26 वर्षीय पीड़िता मनोज यादव के कार्यालय में कार्यरत है। उन्होंने बताया कि पुलिस मामले की जांच की जा रही है।

सन्यासी के बाद वैष्णव अखाड़ों में हुई धर्म ध्वज की स्थापना, अब आव्हान के साथ शुरू होंगे अनुष्ठान

प्रात: किरण संवाददाता

प्रयागराज। यहां के त्रिवेणी मार्ग पर स्थित शिविरों में तीन वैष्णव अखाड़ों की धर्म ध्वजा की स्थापना हुई। इन अखाड़ों में श्री पंच निर्मोही अणि अखाड़ा, श्री पंच निर्वाणी अणि अखाड़ा और श्री पंच दिगंबर अणि अखाड़ा शामिल हैं। इन अखाड़ों के धर्म ध्वजा स्थापना समारोह के साथ-साथ चरण पादुका पूजन भी विधिपूर्वक संपन्न हुआ। महाकुंभ के इस आयोजन में विशेष रूप से हनुमान जी की पूजा और उनकी ध्वजा को स्थापना की गई, जो अब इन अखाड़ों में प्रमुख रूप से विराजमान हैं। इन ध्वजाओं की स्थापना के बाद अब अखाड़ों में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान और कार्यक्रमों की शुरुआत होगी। वहीं तीनों वैष्णव अखाड़ों की धर्म ध्वजा स्थापना भी शनिवार को स्थापित हो गई। ध्वज स्थापना के साथ अखाड़ों में भी महाकुंभ के विभिन्न अनुष्ठान शुरू हो जाएंगे।

पंच निर्मोही अनि अखाड़े के राष्ट्रीय अध्यक्ष महंत राजेंद्र दास के अनुसार चरण पादुका और धर्म ध्वजा स्थापना के बाद अब अखाड़े में सभी तरह के कार्यक्रमों की शुरूआत हो जाती है। तीनों अखाड़े में ईष्ट देव भगवान हनुमान जी का प्रवेश हो गया है। तीनों अखाड़े के ईष्ट देव हनुमान जी महाराज हैं। जो कि धर्म ध्वजा के रूप में अखाड़े में विराजमान होते हैं। इस समारोह में सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आगमन भी निर्धारित था, लेकिन पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन के कारण राष्ट्रीय शोक के कारण उनका कार्यक्रम रद्द कर दिया गया। इस आयोजन में सभी 13 अखाड़ों के प्रमुख संत भी उपस्थित थे। बता दें कि इससे पहले सन्यासी अखाड़ों में ध्वज की स्थापना हो चुकी है।

नफरत भरी और स्वार्थी राजनीति को खत्म करेगी आजाद समाज पार्टी: चंद्रशेखर आजाद

प्रात: किरण संवाददाता, नादिर त्यागी

स्योहारा। भीम आर्मी चीफ एवं आजाद समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नगीना लोकसभा क्षेत्र के लोकप्रिय सांसद चंद्रशेखर आजाद एडवोकेट शनिवार को स्योहारा पहुंचे और अपने समर्थकों व जनता से रूबरू हुए। इसी कार्यक्रम के चलते सांसद चंद्रशेखर आजाद सबसे पहले चौधरी फईम उर रहमान के यहां कुरी हॉउस पहुंचे और नगर की मुख्य समस्याओं के बारे में जनता से जानकारी ली और देश की ताजा राजनैतिक हालात पर चर्चा करते हुए कहा कि आज देश,प्रदेश में चल रही नफरत भरी और स्वार्थी राजनीति को आजाद समाज पार्टी हर हाल में खत्म करेगी। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री डॉक्टर सरदार मनमोहन सिंह के निधन पर शोक प्रकट करते हुए अपने विचार व्यक्त करते हुए किया कि स्वर्गीय डॉक्टर मनमोहन सिंह देश के बहुत काबिल अर्थशास्त्री और प्रधानमंत्री रहे हैं। ऐसी शख्सियतें बहुत कम हुई हैं। उनका दाहसंस्कार दिल्ली के निगमबोध घाट पर हुआ जबकि उनका दाहसंस्कार दिल्ली के राजघाट पर होना चाहिए था और वहीं उनकी समाधि बननी चाहिए। सरकार ने उनके क्रियाकर्म के लिये राजघाट पर अनुमति न देकर एक छोटी सोच का परिचय दिया। उन्होंने संभल हिंसा पर भी गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा सम्भल हिंसा एक स्वार्थी राजनीति का नतीजा है हिंसा देश और किसी भी समाज के लिए हितकारी नहीं है देश नफरतो से नही चलता मौहब्बतों से चलता है आज के दौर में चल रही देश की नफरत भरी राजनीति को आजाद समाज पार्टी खत्म करेगी। और सबको साथ लेकर चलेगी। इस अवसर पर चौधरी फईम उर रहमान, चौधरी जकी उररहमान,चौधरी जुनैदुर्रहमान, राजेंद्र सिंह, ठाकुर आयुष प्रताप सिंह, विवेक सेन जिला पंचायत सदस्य, नय्यर चौधरी, चौधरी वली उर रहमान, समीर चौधरी, सैफुर रहमान उर्फ टीपू चौधरी, अयाज अहमद ,बबलू जैदी, हजरत गफ्फार पूर्व सभासद, असगर सलमानी, शरीफ अंसारी, एहतेशाम मलिक, आबिद मलिक आदि सैकड़ो कार्यकर्ता शामिल रहे। इसके अलावा भी स्योहारा में सांसद चंद्रशेखर आजाद एडवोकेट सैयद सुब्हानी शबाहत, शोएब असलम अंसारी, शेख कमर आलम के यहां भी जाकर गर्म जोशी से मिले और हाल चाल जाना।

सुबह से ही छाए रहे घने बादल, शीतलहर से कांपे लोग

अमरोहा। जिले में दो दिन से हो रही हल्की बूंदाबांदी और पहाड़ी क्षेत्रों में बर्फबारी के चलते रविवार को जबरदस्त शीतलहर के प्रकोप से लोग कांप उठे। बफीर्ली हवा ने लोगों को दुबकने को मजबूर कर दिया। इससे सड़क यातायात भी प्रभावित हुआ। बाजारों में भी सन्नाटा पसरा दिखाई दिया। लोग अलाव से राहत पाने की कोशिश में जुटे रहे। रविवार को न्यूनतम तापमान लुढ़क कर 9 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। अधिकतम तापमान सुबह 14 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने खराब मौसम के चलते एक सप्ताह तक शीतलहर का प्रकोप जारी रहने की संभावना जताई है। रविवार को भी मौसम खराब रहा। सुबह से आसमान में बादल छाए हुए हैं। शीतलहर चल रही है। घरों के अंदर भी सर्दी के कारण लोगों का बुरा हाल हो रहा है। सर्दी बढ़ने से लोग घरों में दुबके रहे और जरूरी होने पर ही बाहर निकले। शीतलहर और गलन से लोगों की कंपकपी छूटी रही। सर्दी अधिक होने के कारण लोगों ने अलाव का सहारा लिया। नगर में जगह-जगह मुख्य रास्तों और बाजारों में अलाव जलाए गए।

श्रावस्ती में फर्जी प्रवेश पत्र इस्तेमाल कर परीक्षा देने की कोशिश करने वाली महिला अभ्यर्थी गिरफ्तार

प्रात: किरण संवाददाता

श्रावस्ती। उत्तर प्रदेश पुलिस में भर्ती संबंधी लिखित परीक्षा में असफल रही एक महिला अभ्यर्थी को फर्जी प्रवेश पत्र का इस्तेमाल कर शारीरिक मानक की परीक्षा देने की कोशिश करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी।

श्रावस्ती के अपर पुलिस अधीक्षक (एएसपी) प्रवीण कुमार यादव ने बताया कि शनिवार को एक महिला अभ्य र्थी रिचा सिंह को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने बताया कि अगस्त में आरक्षी नागरिक पुलिस भर्ती की परीक्षा विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर हुई थी और लिखित परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों के दस्तावेजों की जांच एवं शारीरिक परीक्षण की प्रक्रिया शुक्रवार को हुई। इसके लिए श्रावस्ती जिला मुख्यालय भिनगा स्थित रिजर्व पुलिस लाइन में भी केंद्र निर्धारित किया गया था। एएसपी ने कहा, श्रावस्ती के इस केंद्र पर 533 अभ्यर्थी आने थे और हमारी सूची में किसी महिला अभ्यर्थी का नाम नहीं था। इसी बीच रिचा सिंह नाम की महिला अभ्यर्थी का प्रवेश पत्र प्रस्तुत हुआ तो परीक्षकों को शक हुआ। आरंभिक जांच में प्रवेश पत्र फर्जी साबित हुआ। उन्होंने बताया कि प्रवेश पत्र पर तस्वीर व अन्य विवरण तो बहराइच जिले के पयागपुर क्षेत्र निवासी रिचा सिंह के थे लेकिन क्रमांक संख्या कानपुर के मयंक नाम के किसी अभ्यर्थी का था। उन्होंने बताया कि जांच से मालूम हुआ कि आरोपी ने मोबाइल एप्लीकेशन स्वीट स्नैप का इस्तेमाल कर क्रमांक संख्या को कट पेस्ट करके फर्जी प्रवेश पत्र तैयार किया।

एएसपी ने बताया कि आरोपी महिला के पास मौजूद टैबलेट और प्रपत्रों को कब्जे में लेकर थाना कोतवाली भिनगा में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है।

उन्होंने बताया कि महिला को गिरफ्तार कर शनिवार को अदालत में पेश किया गया और विधिक प्रक्रिया पूरी करने के बाद उसे जेल भेज दिया गया। उन्होंने बताया कि आरंभिक जांच व पूछताछ से मालूम हुआ कि रिचा ने बलरामपुर जिले के एक परीक्षा केंद्र पर लिखित परीक्षा दी थी, लेकिन वह फेल हो गयी। एएसपी ने कहा कि मामले की जांच की जा रही है।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह देशवासियों के दिलों में हमेशा रहेंगे: सैफ मंसूरी

जहां रहेगा वहीं रोशनी लुटाएगा,किसी चराग का कोई अपना मकां नहीं होता...

प्रात: किरण संवाददाता

शेरकोट। कांग्रेस पार्टी के युवा नेता सैफ मंसूरी निवासी शेरकोट ने पूर्व प्रधानमंत्री डाक्टर मनमोहन सिंह के निधन पर दुख व्यक्त करते हुए उन्हें खिराज ए अकीदत पेश करते की और कहा की भारत ने एक महान व्यक्ति को खो दिया।

देश के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का निधन हो गया है। उन्होंने 92 साल की आयु में दिल्ली स्थित एम्स अस्पताल में अंतिम सांस ली। शनिवार को उनका अंतिम संस्कार हुआ। सरकार ने सात दिनों का राजकीय शोक घोषित किया है। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर कांग्रेस युवा नेता सैफ मंसूरी ने उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री एवं प्रख्यात अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह जी का निधन अत्यंत दुःखद एवं भारतीय राजनीति की अपूरणीय क्षति है। वित्त मंत्री और प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने देश की शासन व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। कांग्रेस युवा नेता सैफ मंसूरी ने कहा डॉक्टर मनमोहन सिंह जी के वो तीन काम जिनके लिए हमेशा याद आएंगे। पहला काम सबसे बड़ा था ह्यलाइसेंस राजह्ल को खत्म करना उन्होंने ऐसी नीतियां बनाईं। जिनके जरिए भारत में विदेशी निवेश के लिए दरवाजे खुल गये। दूसरा काम अमेरिका के साथ भारत की न्यूक्लियर डील जब मनमोहन सिंह साल 2004 में प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने इन खराब हुए रिश्तों को सुधारने के लिए कदम आगे बढ़ाया। इस डील के लिए उन्हें यूपीए गठबंधन सरकार के सहयोगी लेफ्ट का कड़ा विरोध भी झेलना पड़ा लेकिन उन्होंने भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते को आगे बढ़ाने का फैसला किया। और तीसरा काम मनमोहन सिंह जी के कार्यकाल के दौरान ही आधार कार्ड अस्तित्व में आया और ये दिवंगत पूर्व पीएम की सबसे बड़ी उपलब्धियों में एक बना। गौरतलब है कि आधार कार्ड आज के समय में हर भारतीय की न केवल पहचान बन गया है बल्कि तमाम फाइनेंशियल कामों के लिए भी सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज हो गया है। डॉक्टर मनमोहन सिंह का कार्य इतिहास के पन्नों में हमेशा रहेगा।उनके जीवन पर इस अशआर की पंक्तियां सटीक बैठती हैं कि

डीएम ने किया गजरौला की गौशाला एवं रैन बसेरे का निरीक्षण, ईओ को चेताया

रैन बसेरों में ठहरने के हों बेहतर इंतजाम, आवश्यक जगहों पर नियमित रूप से जले अलाव: डीएम

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा। देर शाम जिलाधिकारी गुप्ता वत्स ने नगर पालिका गजरौला के रैन बसेरे , ठंड से बचाव के लिए अलाव की व्यवस्था तथा गौ संरक्षण के दृष्टिगत गौशाला का निरीक्षण किया गया। गौ शाला निरीक्षण ने जिलाधिकारी ने ठंड से पशुओं को बचाव के इंतजाम हरा चारा खली चोकर भूसा की उपलब्धता के लिए स्टॉक रजिस्टर सुपर्दगी रजिस्टर सहित अन्य व्यवस्था ओं को देखा।जिलाधिकारी ने अधिशासी अधिकारी गजरौला को निर्देशित करते हुए कहा कि ठंड से बचाव के दृष्टिगत पशुओं के बेहतर देखभाल किया जाए कोई भी पशु ठंड के अभाव में परेशानी में नहीं आना चाहिए ।कोई भी पशु बीमार होता है तो उसको त्वरित पशु डॉक्टर को सूचित कर इलाज कराया जाए। उन्होंने कहा कि पशुओं का कृत्रिम गभार्धान कराया जाए ताकि अच्छी नस्ल के गौ वंश पैदा हो और उन्हें अधिक से अधिक सुपुर्दगी कराया जाय । जिलाधिकारी ने अधिकारी नगर पालिका से अभी तक कितनी सुपर्दगी की गई है जानकारी भी ली । कहा की यह ध्यान रखा जाय कि हरा चारा भूसा और खली चोकर मिलाकर पशुओं को अवश्य दिया जाए । गौशाला के गोबर के निस्तारण के लिए बनाए गए गोबर गैस प्लांट के बंद होने पर जिलाधिकारी ने अधिशासी अधिकारी नगर पालिका को शीघ्र चालू करने के निर्देश दिया । जिलाधि कारी ने नगर पालिका परिषद गजरौला में अलाव की व्यवस्था को आवश्यक जगह पर भृमण कर देखा और निर्देशित करते हुए कहा कि नियमित रूप से सुबह और शाम अलाव जलते रहना चाहिए ।रैन बसेरे का निरीक्षण कर निर्देशित किया कि रैन बसेरे में सभी आवश्यक व्यवस्थाएं होनी चाहिए रात में कोई भी आश्रयहीन व्यक्ति खुले में बाहर घूम रहा है वैठा है तो उन्हें रैन बसेरे में लाया जाए । यह सुनिश्चित हो कि कोई भी व्यक्ति खुले में बैठा या घूमते रात में ना मिले उसे रैन बसेरे में लाया जाए।इस अवसर पर अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद गजरौला दीपिका शुक्ला सहित अन्य सम्बन्धित मौजूद रहे।

श्री मोती स्मृति इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी मे काग्रेसियों ने की शोक सभा

देश के विकास में डॉक्टर मनमोहन सिंह का रहा अहम योगदान: ओमकार

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा। जिला एवं शहर कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारीयो द्वारा जिला महासचिव राजकुमार अरुण के विद्यालय श्री मोती स्मृति इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में एक शोक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें देश के पूर्व प्रधानमंत्री देश में आर्थिक सुधारो के प्रणव स्त्रोत महान अर्थशास्त्री स्वर्गीय डॉक्टर श्री मनमोहन सिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई उनकी आत्मा शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई और 2 मिनट का मौन धारण किया गया। शोक सभा में कार्यवाहक जिला अध्यक्ष ओमकर सिंह कटारिया ने कहा देश के पूर्व प्रधानमंत्री देश में आर्थिक सुधारो के जनक देश की एकता अखंडता के लिए देश के विकास के लिए हमेशा कार्य करने वाले आदरणीय स्वर्गीय डॉक्टर मनमोहन सिंह का जन कांग्रेस पार्टी और भारत देश के लिए अपूर्ण क्षति है जिसकी भरपाई होना असंभव है डॉक्टर मनमोहन सिंह ने देश के प्रधानमंत्री रहते हुए देश की जनता के लिए कई महत्वपूर्ण कानून बनाए जिसमें मनरेगा सूचना का अधिकार शिक्षा का अधिकार खाद्य सुरक्षा गारंटी योजना भूमि अधिकरण अधिनियम बहुत सारे जनहित में कानून बनाए डॉक्टर मनमोहन सिंह जी के लिए देश हित और जनहित सर्वोपरि था हम सब लोग डॉक्टर मनमोहन सिंह के पद चिन्नू पर चलने का संकल्प लें भारत देश हमेशा डॉक्टर मनमोहन सिंह का ऋणी रहेगा और उनके द्वारा किए गए कार्यों को सराहता रहेगा आज डॉक्टर मनमोहन सिंह हमारे बीच से चले गए परंतु उनकी यादें उनके द्वारा किए गए जनहित के कार्य देश हित के कार्य हमेशा हमें उनकी याद दिलाते रहेंगे। इस मौके पर ओंकार सिंह कटारिया, फैज आलम राईनी, प्रदेश सचिव चौधरी सुखराज सिंह, जिला महासचिव राजकुमार अरुण, शाहिद सिद्दीकी खेड़ी, अब्दुल सत्तार सैफी, मयंक कुमार गुर्जर, चौधरी नरेंद्र सिंह, हर्श्वरूप प्रधान, अकरम अली, अली हसन नेताजी, मलिक सरदार इंदर सिंह, आबिद खान, इकबाल अंसारी, राजपाल सैनी, मोहसिन अली तुर्क, योगेंद्र कटारिया, राजपाल सिंह पूर्व प्रधान किशोर चंद्र,पूर्व प्रधान यशपाल सिंह, इशरत अली, सुनील कुमार, हाजी रियासत, सरदार नानक सिंह, नितिन कुमार पराग आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

खालिस्तानियों के समर्थन में पोस्ट् करने पर सिख युवक के खिलाफ पीलीभीत में प्राथमिकी दर्ज

पीलीभीत। पीलीभीत में पुलिस ने खालिस्तानियों के समर्थन में फेसबुक पर हथियारों के साथ अपनी तस्वीकरें पोस्टर करने के आरोप में एक सिख युवक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। पीलीभीत नगर कोतवाली के प्रभारी निरीक्षक (एसएचओ) राजीव कुमार सिंह ने पत्रकारों को बताया कि आरोपी गुरसेवक सिंह के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर पूरे मामले की जांच की जा रही है। कोतवाली पुलिस के अनुसार, चौकी प्रभारी दीपचंद्र ने शहर कोतवाली पुलिस को इस घटना की लिखित जानकारी दी। शिकायत के आधार पर शहर कोतवाली पुलिस ने आरोपी गुरसेवक सिंह के खिलाफ गंभीर धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस के अनुसार, 23 दिसंबर को पीलीभीत के पूरनपुर इलाके में उत्तर प्रदेश और पंजाब पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में खालिस्तान समर्थक तीन लोग मुठभेड़ में मारे गए थे। इसी घटना के बाद हरियाणा के सिरसा निवासी गुरसेवक सिंह ने खालिस्तानियों के समर्थन में फेसबुक पर एक पोस्ट साझा कर विवाद खड़ा कर दिया। पुलिस ने बताया कि सोशल मीडिया पर भड़काऊ सामग्री प्रसारित करने वालों पर नजर रखी जा रही है और ऐसे लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। पुलिस अधिकारियों ने स्थानीय लोगों से भी अपील की है कि वे सोशल मीडिया पर ऐसी कोई भी गतिविधि होने पर इसकी सूचना तुरंत पुलिस को दें।

संभल बावड़ी : किशोर वंदे मातरम का दावा राजा चन्द्र विजय ने उन्हें बनाया अपना प्रतिनिधि

संभल। उत्तर प्रदेश के संभल स्थित चंदौसी में मिली बावड़ी पर अपने वंशजों का दावा करने वाले राजा चंद्र विजय सिंह ने किशोर वंदे मातरम को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया है। किशोर वंदे मातरम ने ऐसा दावा किया है। किशोर वंदे मातरम ने कहा कि राजा चंद्र विजय और रानी बीना कुमारी की यह मिल्कियत है जो राजा प्रीतम कुमार के वंशज हैं। उन्हीं की वंशावली की यह बावड़ी है। उन्होंने कहा, राजा चन्द्र विजय ने हमें अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया है। डीएम संभल को हम लेटर देने जा रहे हैं। उनकी संपत्ति पर जो कब्जा है उसे हटवाने का प्रयास करेंगे। हमें बड़ी जिम्मेदारी मिली है। उनकी जमीनों के बारे में प्रशासन को अवगत कराकर भूमाफियाओं से मुक्त कराने का प्रयास करूंगा। उन्होंने कहा कि बावड़ी हमारी पुरातन सभ्यता की निशानी है। इस पर जो भी अतिक्रमण है, उसे हटवाया जाएगा। यह बावड़ी कहां तक जाती है, यह प्रशासन के विवेक और जांच का विषय है। किशोर ने कहा कि उन लोगों को चिह्नित किया जाना चाहिए जिन्होंने हमारी ऐतिहासिक धरोहर को जमींदोज करने का प्रयास किया है जिन्होंने सनातन संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया है, उन्हें भी चिह्नित किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा, यह पत्र मैं जिलाधिकारी को सौंपने जा रहा हूं। राजा साहब ने कहा है कि यह बावड़ी पुरातत्व विभाग को सौंपी जानी चाहिए। पुरातत्व विभाग इसका सर्वे करे। जिला प्रशासन इसको जनता के सामने लाए। पुनः इसका सौंदर्यीकरण किया जाना चाहिए। एएसआई की टीम लगातार आ रही है। वे इसका सर्वे कर रहे हैं। हम लोगों का दावा है कि यह 1700 ईस्वी की है और इसे जो राजा आत्माराम जी ने बनवाया था। यह वही समय की निकलेगी। ज्ञात हो कि संभल जिले के चंदौसी शहर में पुरातत्व विभाग की खुदाई में मिली तीन मंजिला बावड़ी को लोग अपने-अपने दावे कर रहे हैं। इस बीच मुरादाबाद की सहसपुर रियासत के वारिस पूर्व सांसद राजा चंद्रविजय सिंह सामने आए हैं। उन्होंने मीडिया से कहा कि चंदौसी में मिली तीन मंजिला बावड़ी उनके पुरखों की मिल्कियत है।

उत्तर प्रदेश पुरातत्व विभाग ने मनहर खेड़ा किले को अपने अधीन लेने के लिए पहल की

मुजफ्फरनगर। उत्तर प्रदेश पुरातत्व विभाग अपनी सलाहकार समिति की सिफारिशों पर शामली जिले के जलालाबाद में ऐतिहासिक मनहर खेड़ा किले को अपने अधीन लेने के प्रस्ताव की समीक्षा कर रहा है। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। शामली के उप जिलाधिकारी (एसडीएम) हामिद हुसैन ने कहा, पुरातत्व विभाग ने प्रस्ताव पर आगे बढ़ने के लिए अधिकारियों से राजस्व दस्तावेज मांगे थे। संबंधित दस्तावेज पुरातत्व विभाग को भेज दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश पुरातत्व विभाग की निदेशक रेणु द्विवेदी ने हाल में शामली जिला प्रशासन को एक पत्र भेजकर किले को राष्ट्रीय धरोहर स्थल के रूप में नामित करने के प्रस्ताव के तहत किले से संबंधित राजस्व दस्तावेज मांगे। किले में वर्तमान में कई परिवार रहते हैं, जिसमें थाना भवन निर्वाचन क्षेत्र से राष्ट्रीय लोक दल के विधायक अशरफ अली खान का आवास भी शामिल है। किले को राष्ट्रीय धरोहर घोषित करने की मांग विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के कार्यकताओं ने की थी। कार्यकताओं ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को एक ज्ञापन भी सौंपा था, जिसमें राज्य से किले को सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थल के रूप में संरक्षित करने का आग्रह किया गया था। बाद में, उत्तर प्रदेश पुरातत्व सलाहकार समिति ने किले का सर्वेक्षण किया। इसकी सिफारिश के आधार पर, विभाग अब किले के अधिग्रहण पर विचार कर रहा है।

हमीरपुर में दो ट्रकों की टक्कर होने के बाद आग लगने से दो व्यक्तियों की मौत

हमीरपुर। उत्तर प्रदेश में हमीरपुर जिले के सुमेरपुर थाना क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग-34 पर दो ट्रकों के बीच शनिवार की रात टक्कर होने के बाद आग लग गयी जिससे दो लोगों की मौत हो गयी। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि सुमेरपुर थाना क्षेत्र में मंडी के पास राष्ट्रीय राजमार्ग-34 पर एक पेट्रोल पंप के पास यह हादसा हुआ। पुलिस क्षेत्राधिकारी (सीओ) राजेश कमल ने बताया कि यह घटना शनिवार एवं रविवार की मध्यरात्रि को हुई। अधिकारी ने कहा, ह्यद्दो ट्रकों के बीच टक्कर हो जाने के बाद एक ट्रक में आग लग गई, जिससे उसके चालक और सहायक की मौत हो गई। उनकी पहचान अभी नहीं हो पाई है।

उन्होंने कहा, ह्यदूसरे ट्रक में सवार लोग मौके से भाग गए और उनकी तलाश की जा रही है। हमें इस मामले में अभी तक कोई शिकायत नहीं मिली है। हम दोनों ट्रकों के मालिकों से संपर्क करने की कोशिश कर रहे हैं।घटना के कथित वीडियो क्लिप भी सोशल मीडिया पर सामने आए हैं।

उ0 प्र0 माध्यमिक शिक्षक संघ की चुनावी बैठक शिव इण्टर कॉलेज गजरौला में हुई सम्पन्न

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा/गजरौला। उ0 प्र0 माध्यमिक शिक्षक संघ जनपद अमरोहा की चुनावी बैठक शिव इण्टर कॉलेज गजरौला में प्रान्तीय नेतृत्व द्वारा नियुक्त चुनाव अधिकारी मनोज रस्तोगी (जिला मंत्री संभल) के दिशा निर्देशन में सम्पन्न हुई। चुनावी सभा को हरिओम शर्मा, राजवीर सिंह, मनोज गौड़, रुकने आलम, सिद्धार्थ पांडेय, साहित्य प्रभाकर, संदीप कुमार, छवि रस्तोगी आदि ने संबोधित करते हुए पुरानी कार्यकारिणी को ही आगामी वर्ष के लिए पुनः निर्वाचित करने को अपना समर्थन दिया। कोई भी विरोध में नही आया। एक सुर में सभी से पुरानी कार्यकारिणी को ही समर्थन दिया। चुनाव अधिकारी मनोज रस्तोगी ने जनपद के शिक्षकों की आम राय और पुरानी कार्यकारिणी में सबकी आस्था को देखते हुए घोषणा की कि जिलाध्यक्ष पद पर गुरनाम सिंह, जिलामंत्री पद पर बालक राम तथा जिलाकोषाध्यक्ष के पद पर कृष्णपाल को निर्विरोध निर्वाचित हुए। किसी भी पद के लिए कोई भी नामांकन प्राप्त नही हुआ। अतः पुरानी कार्यकारिणी पुनः निर्वाचित हुई। पूरे सदन से ने नाव निर्वाचित पदाधिकारियों को फूल मालाओं से लाद दिया। प्रदेशीय मंत्री डॉ0 जी0पी0 सिंह ने नाव निर्वाचित तीनो पदाधिकारियों जिलाध्यक्ष गुरनाम सिंह, जिलामंत्री बालकराम तथा जिलाकोषाध्यक्ष कृष्णपाल सिंह को बधाई देते हुए कहा कि यह टीम और भी अच्छे से पूरी निष्ठा और लगन से शिक्षकों के हितों के लिए कार्य करेगी। सभी साथी संगठन में आस्था बनाएं रखें।मंडलीय अध्यक्ष रविन्द्र कुमार शर्मा ने कहा कि हम लोग संगठित होकर ही अपनी उपलब्धियों को सुरक्षित रख सकते हैं। संघ में ही शक्ति है। सदस्य प्रदेश कार्यकारिणी अतुल कुमार शर्मा ने कहा कि जनपद के सभी प्रतिनिधियों ने पुरानी कार्यकारिणी में आस्था व्यक्त कर जनपद को चुनाव से बचा लिया, सभी साथी बधाई के पात्र हैं। और कहा कि जनवरी माह में 7, 8 तथा 9 तारीख को आगरा में होने वाले शिक्षक सम्मेलन में अधिक से अधिक शिक्षक साथी प्रतिभाग करें। इसके लिए तीन दिन का विशेष आकस्मिक अवकाश शिक्षा निदेशक मा0 द्वारा स्वीकृत किया गया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष संभल मोहित सक्सेना, अनुज गुप्ता, डी0 पी0 अग्रवाल, भूकन सिंह, डॉ0 जमशेद कमाल, डॉ0 कमर अब्बास जैदी, रामकिशोर, आनंद कुमार, खुर्शीद अनवर, चारु शर्मा, सुहाना मंजूर, रुकने आलम, हीरा लाल, काले सिंह, दानिश हबीब खान, हसनैन नवाज, बृजपाल सिंह, अवलोक मोहन, कावेंद्र सिंह, राम इंदल सिंह, संजय सिंह, फरहत नरजिस, पुष्पा शुक्ला, भगवान दास, रेखा चौहान, लोकेंद्र सिंह, अवधेश कुमार, पुष्पेंद्र सिंह, संजय कुमार, लोकेश सिंह, चंद्र पाल सिंह, ममता अग्रवाल, चंचल रानी, शीश पाल सिंह, दयानन्द, वीरपाल सिंह, डॉ0 नरेश कुमार, जसविंदर सिंह चीमा, पुष्पेंद्र यादव, आमोद कुमार, सतपाल सिंह, आरती, अरविंद शर्मा, महेश शर्मा, श्यामधर पाल, सचिन गंधर्व, अंकित कुमार, आदि प्रधानाचार्य और शिक्षक भारी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ साथी महिपाल सिंह ने किया। अंत मे मेजबान विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ0 शलभ भारद्वाज ने सभी को स्वादिष्ट भोजन कराया और सभी का आभार व्यक्त किया।

संक्षिप्त खबरें

हमीरपुर में दो ट्रकों की टक्कर होने के बाद आग लगने से दो व्यक्तियों की मौत

हमीरपुर। उत्तर प्रदेश में हमीरपुर जिले के सुमेरपुर थाना क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग-34 पर दो ट्रकों के बीच शनिवार की रात टक्कर होने के बाद आग लग गयी जिससे दो लोगों की मौत हो गयी। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी।पुलिस ने बताया कि सुमेरपुर थाना क्षेत्र में मंडी के पास राष्ट्रीय राजमार्ग-34 पर एक पेट्रोल पंप के पास यह हादसा हुआ। पुलिस क्षेत्राधिकारी (सीओ) राजेश कमल ने बताया कि यह घटना शनिवार एवं रविवार की मध्यरात्रि को हुई। अधिकारी ने कहा, दो ट्रकों के बीच टक्कर हो जाने के बाद एक ट्रक में आग लग गई, जिससे उसके चालक और सहायक की मौत हो गई। उनकी पहचान अभी नहीं हो पाई है। उन्होंने कहा, ह्यदूसरे ट्रक में सवार लोग मौके से भाग गए और उनकी तलाश की जा रही है। हमें इस मामले में अभी तक कोई शिकायत नहीं मिली है। हम दोनों ट्रकों के मालिकों से संपर्क करने की कोशिश कर रहे हैं। घटना के कथित वीडियो क्लिप भी सोशल मीडिया पर सामने आए हैं।

शाहजहांपुर में अपनी कंपनी की महिला अधिकारी के यौन उत्पीड़न के आरोप में एमडी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

शाहजहांपुर (उप्र)। शाहजहांपुर जिले की कांट थाना पुलिस ने एक कंपनी की महिला अधिकारी के यौन उत्पीड़न के आरोप में उसके प्रबंध निदेशक (एमडी) के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस के एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी।नगर क्षेत्र के अपर पुलिस अधीक्षक (एएसपी) संजय कुमार ने बताया कि पुलिस ने कंपनी के एमडी एवं आरोपी मनोज यादव के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की धाराओं 75 (2) (यौन उत्पीड़न), 351 (3) (जान से मारने की धमकी) और सूचना प्रौद्योगिकी की धारा 67 (1) के तहत प्राथमिकी दर्ज की है।उन्होंने बताया कि कांट थाने के प्रभारी अश्वनी कुमार सिंह को मामले की जांच सौंपी गयी है।एएसपी ने प्राथमिकी के हवाले से बताया कि बाराबंकी की रहने वाली 26 वर्षीय पीड़िता मनोज यादव के कार्यालय में कार्यरत है। उन्होंने बताया कि पुलिस मामले की जांच की जा रही है।

बलिया में एसडीएम का फर्जी आदेश जारी करने के आरोपी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

बलिया। बलिया जिले की बांसडीह रोड थाना पुलिस ने उप जिलाधिकारी (एसडीएम) के फर्जी हस्ताक्षर से भूमि पैमाइश का आदेश पारित कर धोखाधड़ी करने के आरोप में एक व्यक्ति के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी।पुलिस के अनुसार, उप जिलाधिकारी सदर आत्रेय मिश्र की तहरीर पर शनिवार को बांसडीह रोड थाने में थाना क्षेत्र के उधो दवनी गांव के शिव शंकर यादव के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की धारा 319 (2) (धोखे से किसी का रूप धारण करके धोखाधड़ी करना) और 318 (4) (धोखाधड़ी और जालसाजी का अपराध) के तहत नामजद मुकदमा दर्ज किया गया है।

अमरोहा में 10वीं कक्षा की छात्रा ने ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या की

अमरोहा (उप्र)। अमरोहा में भानपुर के निकट 10वीं कक्षा की एक छात्रा ने चलती ट्रेन के आगे कूदकर कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) ने रविवार को यह जानकारी दी।जीआरपी के मुताबिक, गजरौला शहर के अवंतिका नगर मोहल्ले की रहने वाली महक (16) शुक्रवार सुबह घर से स्कूल के लिए निकली थी और उसने शहर के भानपुर के पास ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली।हादसे के बाद घटनास्थल पर राहगीरों की भीड़ जमा हो गई। आरपीएफ (रेलवे सुरक्षा बल) और जीआरपी घटना सूचना मिलने पर घटनास्थल पर पहुंचे।

सन्यासी के बाद वैष्णव अखाड़ों में हुई धर्म ध्वज की स्थापना, अब आव्हान के साथ शुरू होंगे अनुष्ठान

प्रयागराज। यहां के त्रिवेणी मार्ग पर स्थित शिविरों में तीन वैष्णव अखाड़ों की धर्म ध्वजा की स्थापना हुई। इन अखाड़ों में श्री पंच निमोही अणि अखाड़ा, श्री पंच निवार्णी अणि अखाड़ा और श्री पंच दिगंबर अणि अखाड़ा शामिल हैं। इन अखाड़ों के धर्म ध्वजा स्थापना समारोह के साथ-साथ चरण पादुका पूजन भी विधिपूर्वक संपन्न हुआ। महाकुंभ के इस आयोजन में विशेष रूप से हनुमान जी की पूजा और उनकी ध्वजा की स्थापना की गई, जो अब इन अखाड़ों में प्रमुख रूप से विराजमान हैं। इन ध्वजाओं की स्थापना के बाद अब अखाड़ों में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान और कार्यक्रमों की शुरूआत होगी। वहीं तीनों वैष्णव अखाड़ों की धर्म ध्वजा स्थापना भी शनिवार को स्थापित हो गई।

मथुरा में एनएच-19 पर हुए सड़क हादसे में तीन लोगों की मौत

प्रात: किरण/एजेंसी

मथुरा (उप्र)। मथुरा जिले के छाता कोतवाली थाना क्षेत्र में एक चीनी मिल के सामने रविवार सुबह ट्रैक्टर ट्रॉली और ट्रक की टक्कर में तीन व्यक्तियों की मौत हो गयी और एक अन्य व्यक्ति घायल हो गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। छाता कोतवाली के प्रभारी निरीक्षक (एसएचओ) संजय कुमार त्यागी ने कहा, इस हादसे में एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई और दो अन्य ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। हादसा उस समय हुआ, जब तेज रफ्तार ट्रक ने ईंटों से भरी ट्रैक्टर ट्रॉली से आगे निकलने की

कोशिश में उसे टक्कर मार दी। पुलिस ने बताया कि दोनों वाहन छाता से मथुरा जा रहे थे। मृतकों की पहचान उमेश, पूरन सिंह और ट्रक चालक प्रिंस के रूप में हुई है। पूरन सिंह ट्रैक्टर पर सवार था। त्यागी ने बताया कि हादसे में घायल तीन लोगों को मेडिकल कॉलेज ले जाया गया, जहां पूरन सिंह और प्रिंस की मौत हो गई, जबकि धर्मेंद्र यादव नाम के व्यक्ति की हालत गंभीर बनी हुई है। उन्होंने बताया कि उमेश की मौत घटनास्थल पर ही हो गई। उन्होंने बताया कि मृतकों की उम्र का अभी पता नहीं चल पाया है। उन्होंने बताया कि शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

संभल बावड़ी : किशोर वंदे मातरम का दावा राजा चन्द्र विजय ने उन्हें बनाया अपना प्रतिनिधि

किशोर वंदे मातरम ने कहा कि राजा चंद्र विजय और रानी बीना कुमारी की यह मिल्कियत है जो राजा प्रीतम कुमार के वंशज हैं। उन्हीं की वंशावली की यह बावड़ी है। उन्होंने कहा, राजा चन्द्र विजय ने हमें अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया है। डीएम संभल को हम लेटर देने जा रहे हैं। उनकी संपत्ति पर जो कब्जा है उसे हटवाने का प्रयास करेंगे। हमें बड़ी जिम्मेदारी मिली है। उनकी जमीनों के बारे में प्रशासन को अवगत कराकर भूमाफियाओं से मुक्त कराने का प्रयास करूंगा।

प्रात: किरण/एजेंसी

संभल। उत्तर प्रदेश के संभल स्थित चंदौसी में मिली बावड़ी पर अपने वंशजों का दावा करने वाले राजा चंद्र विजय सिंह ने किशोर वंदे मातरम को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया है। किशोर वंदे मातरम ने ऐसा दावा किया है। किशोर वंदे मातरम ने कहा कि राजा चंद्र विजय और रानी बीना कुमारी की यह मिल्कियत है जो राजा प्रीतम कुमार के वंशज हैं। उन्हीं की वंशावली की यह बावड़ी है। उन्होंने कहा, राजा चन्द्र विजय ने हमें अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया है। डीएम संभल को हम लेटर देने जा रहे हैं। उनकी संपत्ति पर जो कब्जा है उसे हटवाने का प्रयास करेंगे। हमें बड़ी जिम्मेदारी मिली है। उनकी जमीनों के बारे में प्रशासन को अवगत कराकर भूमाफियाओं से मुक्त कराने का प्रयास करूंगा।

उन्होंने कहा कि बावड़ी हमारी पुरातन सभ्यता की निशानी है। इस पर जो भी अतिक्रमण है, उसे

हटवाया जाएगा। यह बावड़ी कहां तक जाती है, यह प्रशासन के विवेक और जांच का विषय है। किशोर ने कहा कि उन लोगों को चिह्नित किया जाना चाहिए जिन्होंने हमारी ऐतिहासिक धरोहर को जमींदोज करने का प्रयास किया है जिन्होंने सनातन संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया है, उन्हें भी चिह्नित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, यह पत्र मैं जिलाधिकारी को सौंपने जा रहा हूं। राजा साहब ने कहा है कि यह बावड़ी पुरातत्व विभाग को सौंपी जानी चाहिए। पुरातत्व विभाग इसका सर्वे करे। जिला प्रशासन इसको जनता के सामने लाए। पुनः इसका सौंदर्यीकरण किया जाना चाहिए। एएसआई की टीम लगातार आ रही है। वे इसका सर्वे कर रहे हैं। हम लोगों का दावा है कि यह 1700 ईस्वी की है और इसे जो राजा आत्माराम जी ने बनवाया था। यह वही समय की निकलेगी।

ज्ञात हो कि संभल जिले के चंदौसी शहर में पुरातत्व विभाग की खुदाई में मिली तीन मंजिला बावड़ी को लोग अपने-अपने दावे कर रहे हैं। इस बीच मुरादाबाद की सहसपुर रियासत के वारिस पूर्व सांसद राजा चंद्रविजय सिंह सामने आए हैं। उन्होंने मीडिया से कहा कि चंदौसी में मिली तीन मंजिला बावड़ी उनके पुरखों की मिल्कियत है।

श्रावस्ती में फर्जी प्रवेश पत्र इस्तेमाल कर परीक्षा देने की कोशिश करने वाली महिला अभ्यर्थी गिरफ्तार

प्रात: किरण/एजेंसी

श्रावस्ती। उत्तर प्रदेश पुलिस में भर्ती संबंधी लिखित परीक्षा में असफल रही एक महिला अभ्यर्थी को फर्जी प्रवेश पत्र का इस्तेमाल कर शारीरिक मानक की परीक्षा देने की कोशिश करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी।श्रावस्ती के अपर पुलिस अधीक्षक (एएसपी) प्रवीण कुमार यादव ने बताया कि शनिवार को एक महिला अभ्य र्थी रिचा सिंह को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

उन्होंने बताया कि अगस्त में आरक्षी नागरिक पुलिस भर्ती की परीक्षा विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर हुई थी और लिखित परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों के दस्तावेजों की जांच एवं शारीरिक परीक्षण की प्रक्रिया शुक्रवार को हुई। इसके लिए श्रावस्ती जिला मुख्यालय भिनगा स्थित रिजर्व पुलिस लाइन में भी केंद्र निर्धारित किया गया था।

एएसपी ने कहा, श्रावस्ती के इस केंद्र पर 533 अभ्यर्थी आने थे और हमारी सूची में किसी महिला अभ्यर्थी का नाम नहीं था। इसी बीच रिचा सिंह नाम की महिला अभ्यर्थी का प्रवेश पत्र प्रस्तुत हुआ तो परीक्षकों को शक हुआ। आरंभिक जांच में प्रवेश पत्र फर्जी साबित हुआ। उन्होंने बताया कि प्रवेश पत्र पर तस्वीर व अन्य विवरण तो बहराइच जिले के पयागपुर क्षेत्र निवासी रिचा सिंह के थे लेकिन क्रमांक संख्या कानपुर के मयंक नाम के किसी अभ्यर्थी का था। उन्होंने बताया कि जांच से मालूम हुआ कि आरोपी ने मोबाइल एप्लीकेशन स्वीट स्नैप का इस्तेमाल कर क्रमांक संख्या को कट पेस्ट करके फर्जी प्रवेश पत्र तैयार किया। एएसपी ने बताया कि आरोपी महिला के पास मौजूद टैबलेट और प्रपत्रों को कब्जे में लेकर थाना कोतवाली भिनगा में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। उन्होंने बताया कि महिला को गिरफ्तार कर शनिवार को अदालत में पेश किया गया और विधिक प्रक्रिया पूरी करने के बाद उसे जेल भेज दिया गया। उन्होंने बताया कि आरंभिक जांच व पूछताछ से मालूम हुआ कि रिचा ने बलरामपुर जिले के एक परीक्षा केंद्र पर लिखित परीक्षा दी थी, लेकिन वह फेल हो गयी। एएसपी ने कहा कि मामले की जांच की जा रही है।

उत्तर प्रदेश पुरातत्व विभाग ने मनहर खेड़ा किले को अपने अधीन लेने के लिए पहल की

प्रात: किरण/एजेंसी

मुजफ्फरनगर (उप्र)। उत्तर प्रदेश पुरातत्व विभाग अपनी सलाहकार समिति की सिफारिशों पर शामली जिले के जलालाबाद में ऐतिहासिक मनहर खेड़ा किले को अपने अधीन लेने के प्रस्ताव की समीक्षा कर रहा है। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी।

शामली के उप जिलाधिकारी (एसडीएम) हामिद हुसैन ने कहा, पुरातत्व विभाग ने प्रस्ताव पर आगे बढ़ने के लिए अधिकारियों से राजस्व दस्तावेज मांगे थे।

संबंधित दस्तावेज पुरातत्व विभाग को भेज दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश पुरातत्व विभाग की निदेशक रेणु द्विवेदी ने

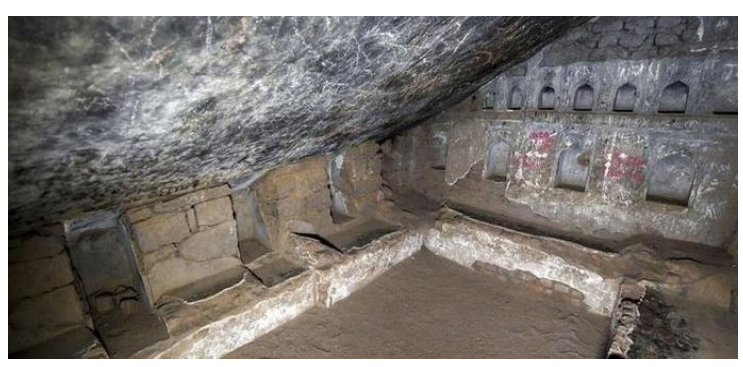

हाल में शामली जिला प्रशासन को एक पत्र भेजकर किले को राष्ट्रीय धरोहर स्थल के रूप में नामित करने के प्रस्ताव के तहत किले से संबंधित राजस्व दस्तावेज मांगे। किले में वर्तमान में कई परिवार रहते हैं, जिसमें थाना भवन निर्वाचन क्षेत्र से राष्ट्रीय लोक दल के विधायक अशरफ अली खान का आवास भी शामिल है।

किले को राष्ट्रीय धरोहर घोषित करने की मांग विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के कार्यकर्ताओं ने की थी। कार्यकर्ताओं ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को एक ज्ञापन भी सौंपा था, जिसमें राज्य से किले को सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थल के रूप में संरक्षित करने का आग्रह किया गया था। बाद में, उत्तर प्रदेश पुरातत्व सलाहकार समिति ने किले का सर्वेक्षण किया। इसकी सिफारिश के आधार पर, विभाग अब किले के अधिग्रहण पर विचार कर रहा है।

खालिस्तानियों के समर्थन में 'पोस्टन' करने पर सिख युवक के खिलाफ पीलीभीत में प्राथमिकी दर्ज

प्रात: किरण/एजेंसी

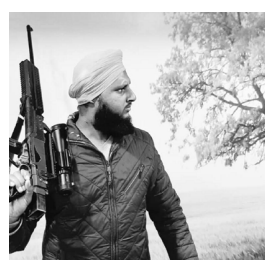

पीलीभीत। पीलीभीत में पुलिस ने खालिस्तानियों के समर्थन में फेसबुक पर हथियारों के साथ अपनी तस्वी रें पोस्ट् करने के आरोप में एक सिख युवक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी।पीलीभीत नगर कोतवाली के प्रभारी निरीक्षक (एसएचओ) राजीव कुमार सिंह ने पत्रकारों को बताया कि आरोपी गुरसेवक सिंह के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर पूरे मामले की जांच की जा रही है।

कोतवाली पुलिस के अनुसार, चौकी प्रभारी दीपचंद्र ने शहर कोतवाली पुलिस को इस घटना की लिखित जानकारी दी। शिकायत के आधार पर शहर कोतवाली पुलिस ने आरोपी गुरसेवक सिंह के खिलाफ गंभीर धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया है।

पुलिस के अनुसार, 23 दिसंबर को पीलीभीत के पूरनपुर इलाके में उत्तर प्रदेश और पंजाब पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में खालिस्तान समर्थक तीन लोग मुठभेड़ में मारे गए थे। इसी घटना के बाद हरियाणा के सिरसा निवासी गुरसेवक सिंह ने खालिस्तानियों के समर्थन में फेसबुक पर एक पोस्ट साझा कर विवाद खड़ा कर दिया।

पुलिस ने बताया कि सोशल मीडिया पर भड़काऊ सामग्री प्रसारित करने वालों पर नजर रखी जा रही है और ऐसे लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। पुलिस अधिकारियों ने स्थानीय लोगों से भी अपील की है कि वे सोशल मीडिया पर ऐसी कोई भी गतिविधि होने पर इसकी सूचना तुरंत पुलिस को दें।

नोएडा में पुलिस का एक्शन, राहगीरों का मोबाइल लूटने वाला बदमाश मुठभेड़ में घायल

प्रात: किरण/एजेंसी

नोएडा। सेक्टर-126 थाने की पुलिस ने मुठभेड़ में एक बदमाश को घायल कर दिया है। घायल बदमाश राहगीरों का मोबाइल लूटने का काम करते थे। गिरफ्तार आरोपी के पास से लूट का मोबाइल, बाइक और तमंचा बरामद किए गए हैं। पुलिस घायल बदमाश का आपराधिक इतिहास पता कर रही है।

एडिशनल नोएडा डीसीपी मनीष कुमार मिश्र ने बताया कि शनिवार शाम को एसीपी प्रवीण कुमार सिंह की अगुवाई में पुलिस की टीमें सेक्टर-126 थानाक्षेत्र में गश्त कर रही थी। इसी दौरान एक बाइक सवार उधर से गुजरा, संदिग्ध लगने पर जब पुलिस ने उसे रोकने का प्रयास किया तो वह बाइक तेजी से भगाने लगा। पीछा करने पर उसने पुलिस टीम पर फायरिंग की। जवाबी कार्रवाई में पुलिस की गोली पैर में लगने से बाइक सवार बदमाश घायल हो गया। आरोपी की पहचान दिल्ली के मदनपुर खादर निवासी यशवंत के रूप में हुई है। उसे उपचार के लिए जिला अस्पताल भेजा गया है।

बीते दिनों यशवंत ने थानाक्षेत्र में मोबाइल लूट की वारदात को अंजाम दिया था। घायल बदमाश के अन्य साथियों के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है। बदमाश दिल्ली से आता था और एक ही दिन में नोएडा और गाजियाबाद के अलग-अलग थानाक्षेत्र में वारदात कर फरार हो जाता था। शाम को जब कंपनियों और फैक्ट्रियों से लोग निकलते थे तो बदमाश उन्हें ही निशाना बनाता था। लूट के मोबाइल को ओरपी किसे बेचता था इसके बारे में भी पुलिस को अहम जानकारी मिली है।

कार चालक व उसके साथी को लाठी-डंडे से पीटा: नोएडा में रोडरेज की घटना में साइड न देने पर आरोपियों ने सामने जा रही कार में टक्कर मारी, फिर उसमें सवार चालक और उसके साथी को लाठी और डंडे से पीटकर बुरी तरह से घायल कर दिया। राहगीरों के घटनास्थल पर एकत्र होने पर आरोपी जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए। पीड़ित की शिकायत पर एक्सप्रेसवे थाने की पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ शनिवार को मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

पुलिस को दी शिकायत में सेक्टर-105 निवासी सिद्धांत चौधरी ने बताया कि बीते दिनों वह अपनी कार से एक कार्यक्रम में हिस्सा लेकर नॉलेज पार्क से घर आ रहे थे। एक्सप्रेसवे पर पीछे से एक ब्रेजा कार आई। कार चला रहे चालक ने साइड न देने की बात कहकर अपनी कार को आगे लगा दिया और गालियां देनी शुरू कर दी। विरोध करने पर चालक और उसके अन्य साथियों ने शिकायतकर्ता और उसके साथी को लाठी और डंडे से बुरी तरह से पीटना शुरू कर दिया।

संदिग्ध वाहनों को रोककर की गई सघन चेकिंग: नोएडा के एसीपी प्रथम प्रवीण कुमार सिंह ने शनिवार को सेक्टर-39 सहित तीन थाना क्षेत्रों में पैदल मार्च कर सुरक्षा तैयारियों को परखा। इस दौरान काशीराम चौराहा, सेक्टर-45, सेक्टर-98, जयपुरिया मार्केट, सेक्टर-26, सेक्टर-132 और 21/25 चौराहे पर संदिग्ध वाहनों की चेकिंग की गई।

तलाशी के बाद ही वाहनों को आगे जाने दिया गया। एसीपी ने मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों को ब्रीफ किया और यातायात व्यवस्था के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। नए साल के आगमन को देखते हुए शहर के सभी हिस्से में तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। शराब पीकर वाहन चलाने वालों पर पुलिस का विशेष जोर है। भीड़भाड वाली जगहों पर सादे कपड़े में पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई है।

बोगस फर्मों के जरिये चल रहा टैक्स चोरी का खेल

गाजियाबाद, एजेंसी। कारोबारी बोगस फर्मों के जरिये टैक्स चोरी कर रहे हैं। ऐसे में राज्य कर विभाग ऐसी ही बोगस फर्मों को चिह्नित करने में जुटी है, जिसमें अभी तक 235 बोगस फर्में चिह्नित हुई है। इन फर्मों के माध्यम से करोड़ों रुपये की टैक्स चोरी सामने आई है। राज्य कर विभाग टैक्स चोरी करने वाली फर्मों पर नजर बनाए हुए हैं। इसके लिए विभाग की विशेष अनुसंधान शाखा ने कई धांधली पकड़ी है, जिसमें बोगस फर्मों के जरिये टैक्स चोरी सामने आई है। अधिकारी बताते हैं कि टैक्स चोरी करने के लिए सर्विस सेक्टर, ईंट भट्ठा कारोबारी, प्राइवेट सेक्टर व अन्य क्षेत्रों की कई फर्में बोगस कंपनियों से खरीद दिखाकर आईटीसी क्लेम कर लेती है, जबकि जिन कंपनियों से खरीद दिखाई गई होती है। वह कंपनियां मौके पर नहीं होती, सिर्फ दस्तावेजों में ही खरीद बिक्री दिखाई जाती है। राज्य कर विभाग के अपर आयुक्त ग्रेड 1 दिनेश कुमार मिश्र ने बताया कि फर्मों की ओर से दाखिल किए जा रहे जीएसटी रिटर्न और डाउनलोड किए जा रहे ईवे बिल की बिजनेस इंटेलिजेंस एंड फ्रॉड एनालिसिस के माध्यम से जांच कराने पर पता चल रहा है कि कंपनी आईटीसी ऐसी फर्मों से क्लेम किया है जो अस्तित्व में नहीं है। ऐसी फर्मों को चिह्नित किया जा रहा है। ताकि इनसे हुई अन्य खरीद बिक्री के बारे में भी जानकारी की जा सके।

डीएम ने बैठक में अनुपस्थित प्रोजेक्ट मैनेजरों को भिजवाया कारण बताओं नोटिस

प्रात: किरण, एजेंसी

गाजियाबाद। विकास भवन गाजियाबाद के दुर्गावती देवी सभागार में डीएम इन्द्र विक्रम सिंह की अध्यक्षता में सीएमआईएस पोर्टल पर प्रदर्शित एक करोड़ रुपए से अधिक लागत की परियोजनाओं की समीक्षा बैठक हुई। बैठक के दौरान उप प्रोजेक्ट्स कारपोरेशन लि0, उप्र राजकीय निमार्ण निगम लि0, उप्र आवास विकास परिषद निर्माण ईकाई, ग्रामीण अभियंत्रण सेवा, एचएससीसी, उप्र राज्य निर्माण सहकारी संघ लि0, उप्र जल निगम, सीएण्डडीएस, उप्र राज्य सेतु निगम लि, सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, यूपी स्टेट कन्ट्र एण्ड इन्फ्रा डवलपमेंट कारपोरेशन लि, निर्माण खण्ड भवन लोनिवि मेरठ सहित अन्य विभागों के कार्यों की समीक्षा की गयी। जिलाधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह ने बैठक के दौरान निर्माण कार्यों में कम प्रगति एवं समयानुरूप कार्य सम्पन्न ना होने पर नाराजगी जताई। इस दौरान डीएम ने सभी प्रोजेक्ट मैनेजर से कार्य पूर्ण होने का समय शपथ पत्र पर लिखकर देने के लिए कहा।

डीएम इंद्र विक्रम सिंह ने कहा कि अगर शपथ पत्र के अनुसार कार्य समय पर पूर्ण नहीं होता है तो उस प्रोजेक्ट मैनेजर के खिलाफ प्रशासनिक या दण्डात्मक कार्यवाही या दोनों की जाएगी। उन्होंने बैठक में अनुपस्थित रहने वाले अधिकारियों,प्रोजेक्ट मैनेजर को कारण बताओ नोटिस देने के लिए निर्देशित किया। डीएम ने कहा कि बैठक में प्रोजेक्ट से सम्बंधित प्रोजेक्ट मैनेजर ही उपस्थित हो या किसी कारण वश वह नहीं आ सकता तो उसके लिए डीएम से अनुमति प्राप्त करें और जिसे अधिकृत करें उसे सम्बंधित प्रोजेक्टों के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए। जिलाधिकारी ने कहा कि जिन प्रोजेक्ट मैनेजर का कार्य लम्बित है या समयानुसार पूर्ण नहीं है, वह कार्य को समय से पूर्ण करने का प्लान चार्ट प्रस्तुत शीघ्र प्रस्तुत करें।

गिरफ्तारी पुलिस टीम द्वारा पीछा किया तो कीचड़ के रास्ते में इनकी बाइक जल्दबाजी में फिसल गई।

दो पुलिस मुठभेड़ों में चार अपराधी गिरफ्तार, दो पुलिस की गोली से हुए घायल

खासबात यह भी है कि अपराधियों की बारिश के कारण मोटरसाइकिल या स्कूटी फिसली है और उसने पुलिस पार्टी पर फायर किया है। जिसके बाद पुलिस की करवाई में सभी घायल अपराधियों के पैरों में गोली लगी है। तीन अपराधी शुक्रवार की रात व शनिवार को दिन में पकड़े गए थे, जबकि शनिवार की रात में टीन अपराधी पकड़े गए हैं। जिनमें दो विजयनगर और दो शालीमार गार्डन पुलिस ने मुठभेड़ में पकड़ने का दावा किया है। एसीपी रितेश त्रिपाठी ने रविवार की सुबह बताया कि थाना विजयनगर पुलिस को बिजलीघर चौराहे पर चेंकिग के दौरान एक बाइक पर दो व्यक्ति आते दिखायी दिये तो पुलिस ने चेंकिग के लिए रुकने के लिए कहा।

प्रात: किरण, एजेंसी

गाजियाबाद। पिछले 36घंटों पर नजर मारे तो दिल्ली से सटे गाजियाबाद में पुलिस बदमाशों पर भारी पड़ रही है। इस दौरान अलग-अलग मुठभेड़ों में पांच अपराधियों को पुलिस की गोली लगी है। खासबात यह भी है कि अपराधियों की बारिश के कारण मोटरसाइकिल या स्कूटी फिसली है और उसने पुलिस पार्टी पर फायर किया है। जिसके बाद पुलिस की करवाई में सभी घायल अपराधियों के पैरों में गोली लगी है। तीन अपराधी शुक्रवार की रात व शनिवार को दिन में पकड़े गए थे, जबकि शनिवार की रात में टीन अपराधी पकड़े गए हैं। जिनमें दो विजयनगर और दो शालीमार गार्डन पुलिस ने मुठभेड़ में पकड़ने का दावा किया

है। एसीपी रितेश त्रिपाठी ने रविवार की सुबह बताया कि थाना विजयनगर पुलिस को बिजलीघर चौराहे पर चेंकिग के दौरान एक बाइक पर दो व्यक्ति आते दिखायी दिये तो पुलिस ने चेंकिग के लिए रुकने के लिए कहा। इस पर वे डीपीएस स्कूल की तरफ भागने लगे। संदिग्ध मानते हुए पुलिस ने पीछा और दूसरी तरफ सिद्धार्थ बिहार पर चेंकिग कर पुलिस टीम को भी उनको घेरने के लिए कहा गया। दोनो तरफ से घिरता हुए देख बाइक को सर्विस लेन की तरफ भागने लगे। पुलिस टीम द्वारा पीछा किया तो कीचड़ के रास्ते में इनकी बाइक जल्दबाजी में फिसल गई। पुलिस ने एकबार फिर उन्हें रुकने के लिए कहा तो बाइक पर पीछे बैठे व्यक्ति ने पुलिस पर फायर कर दिया। पुलिस की जवाबी फायरिंग में फायर कर रहे व्यक्ति के पैर में गोली लगी एवं दूसरे व्यक्ति को मौके से पकड़ा गया। पूछताछ में बाइक चला रहे व्यक्ति ने अपना नाम अंशु एवं पीछे बैठे व्यक्ति का नाम हर्ष बताया। त्रिपाठी ने बताया कि 28दिसंबर को थाना विजयनगर क्षेत्रान्तर्गत एक व्यक्ति से मोबाइल स्नैंचिग एवं एक महिला से पर्स छीनने की घटना हुई थी जिसे इन्हीं अपराधियों ने अंजाम दिया था। उनके कब्जे से 03 मोबाइल, एक तमंचा, एक जिन्दा कारतूस व एक मोटरसाइकिल बरामद हुई है।

एसीपी सलोनी अग्रवाल ने बताया कि थाना शालीमार गार्डन पुलिस सेक्टर 03 राजेन्द्र नगर जीडीए मार्केट में वजीराबाद रोड की तरफ से आने वाले रास्ते पर चेकिंग की जा रही थी। तभी स्कूटी सवार दो व्यक्ति डीएवी कट वजीराबाद रोड की तरफ से आते दिखाई दिये जिनको चेकिंग हेतु रुकने का इशारा किया गया तो नहीं रुके और अपनी स्कूटी को पीछे मोड़कर तेजी से वजीराबाद रोड की तरफ भागने लगे शक होने पर पुलिस टीम द्वारा पीछा किया गया तो पुलिस टीम को अपने पीछे आते देख भाग रहे बदमाशो के द्वारा स्कूटी को तेजी से भगाने व बारिश होने के कारण स्कूटी वजीराबाद रोड कट से पहले गीली मिट्टी होने के कारण फिसल कर गिर गई। पुलिस को पीछे आते देख भाग रहे बदमाशो द्वारा पुलिस पार्टी पर जान से मारने की नियत से सीधा फायर कर दिया।पुलिस की जवाबी कार्यवाही में पुलिस पार्टी पर फायर कर रहे बदमाशो मे से एक बदमाश घायल हो गया तथा दूसरा बदमाश मौके से भाग गया जिसको गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम को पीछे भेजा गया। घायल बदमाश का नाम मंसूर खान उर्फ राजू पुत्र मंजूर निवासी जी 380 शहीदनगर थाना साहिबाबाद। है। कुछ देर में ही दूसरे बदमाश वाजिद उर्फ दानिश पुत्र शमी आलम निवासी राजीव कॉलोनी डीएलएफ थाना शालीमार गार्डन गिरफ्तार कर लिया। उनके कब्जे से 01 अवैध तमंचा मय जिंदा कारतूस, 01खोखा कारतूस व चोरी की 01 स्कूटी बरामद हुए हैं।

सिंघम अगेन की विफलता से पुलिस यूनिवर्स पर टूटा रोहित का भरोसा, अब बनाएंगे ये बायोपिक

इस साल नवंबर में आई रोहित शेट्टी की फिल्म सिंघम 3 बॉक्स ऑफिस पर औंधे मुंह गिरी। इस फिल्म की विफलता के बाद कॉप यूनिवर्स से उनका भरोसा उठ गया है। अब वे बायोपिक बनाने जा रहे हैं। हालांकि, बायोपिक पुलिस अधिकारी की है। इस फिल्म में जॉन अब्राहम के लीड रोल अदा करने की खबर है। जॉन अब्राहम ने खुद को इंडस्ट्री में एक्शन हीरो के रूप में स्थापित किया है। इस साल अगस्त में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर उनकी फिल्म वेदा रिलीज हुई। बॉक्स ऑफिस पर यह खास कमाल नहीं दिखा सकी। अब उनके हाथ एक बायोपिक लगी है। जिस फिल्म को रोहित शेट्टी बना रहे हैं, उसमें जॉन अब्राहम पुलिस अधिकारी की भूमिका अदा करेंगे। यह फिल्म भारतीय पुलिस अधिकारी राकेश मारिया की बायोपिक है।

कई बड़े मिशन का हिस्सा रहे मारिया

राकेश मारिया के जीवन पर बायोपिक बनाई जा रही है। इसमें 1993 के मुंबई बम विस्फोट, जावेरी बाजारा विस्फोट और 26/11 हमलों को सुलझाने के उनके सफर को दिखाया जाएगा। मालूम हो कि राकेश मारिया मुंबई पुलिस के इतिहास में सबसे मशहूर पुलिसकर्मियों में से एक रहे हैं। उन्होंने 1981 से 2017 तक अपने कार्यकाल के दौरान मुंबई में हुए कई आतंकी हमलों के पीछे के जिम्मेदार गुनहगारों को पकड़ने के लिए में अहम भूमिका निभाई, वे महत्वपूर्ण मिशन का हिस्सा रहे।

अगले साल शुरू होगी शूटिंग

इस किरदार को परदे पर अदा करने के लिए जॉन अब्राहम काफी उत्साहित हैं। उनका मानना है कि राकेश मारिया ने जिस श्रद्धा और समर्पण के साथ राष्ट्र की सेवा की है, यह फिल्म उनकी इसी विरासत को एक श्रद्धांजलि होगी। फिल्म की शूटिंग साल 2025 के छमाही में शुरू होगी। फिलहाल फिल्म की स्क्रिप्ट पर काम चल रहा है। इसे इंडस्ट्री के नामी निर्माता बनाएंगे। इस फिल्म का निर्देशन रोहित शेट्टी करने वाले हैं। फिल्म का निर्माण रिलायंस एंटरटेनमेंट के बैनर तले होगा।

दिखाया जाएगा राकेश मारिया का सफर

इस फिल्म में राकेश मारिया के डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस (ट्रैफिक) से लेकर होम गार्ड्स के महानिदेशक बनने तक का सफर दिखाया जाएगा। राकेश मारिया की बायोपिक से इतर जॉन की दो फिल्में रिलीज को तैयार हैं। वे दिनेश विजन की तेहरान और भूषण कुमार की डिप्लोमैट में दिखाई देंगे।

2025 की गर्मियों में शुरू होगी ऋतिक की कृष 4 की शूटिंग

ऋतिक रोशन ने अपने एक्टिंग करियर में एक से बढ़कर एक बड़ी फिल्मों में काम किया है। फिल्म कृष ने उन्हें देशभर में एक सुपरहीरो के रूप में पहचान दिलाई है। इस फ्रेंचाइज की पिछली तीनों फिल्में सुपरहिट रही हैं। अब अब कृष 4 की शूटिंग से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी सामने आ रही है। रिपोर्ट्स के अनुसार... ऋतिक कृष 4 के लिए तैयार हैं। वह 2025 की गर्मियों में फिल्म की शूटिंग शुरू करने वाले हैं। कहा जा रहा है कि फिल्म की शूटिंग का पहला शेड्यूल ऋतिक के साथ मुंबई में शुरू होगा। इसके बाद यूरोप में कुछ हिस्से की शूटिंग की जाएगी। कृष 4 के लिए ऋतिक अपने पिता और दिग्गज निर्माता राकेश रोशन और निर्देशक करण मल्होत्रा के साथ सहयोग कर रहे हैं।

राजामौली की 1000 करोड़ी फिल्म का हिस्सा बनीं प्रियंका चोपड़ा? महेश बाबू के साथ जमेगी जोड़ी

एसएस राजामौली 2022 में राम चरण और जूनियर एनटीआर अभिनीत आरआरआर की भारी सफलता के बाद , महेश बाबू की अपनी अगली फिल्म के साथ वापसी करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। प्रशंसक फिल्म के कलाकारों और विषय के बारे में अधिक जानने के लिए उत्सुक हैं, और अब रिपोर्ट्स का दावा है कि प्रियंका चोपड़ा इस बहुप्रतीक्षित परियोजना में महेश के साथ मुख्य भूमिका निभाएंगी , जिसे अभी एसएसएमबी 29 टाइटल दिया गया है।

राजामौली की फिल्म में शामिल हुई प्रियंका

राजामौली महेश बाबू के साथ जंगल एडवेंचर फिल्म पर काम कर रहे हैं। फिल्म के कलाकारों और क्रू के बारे में कोई और जानकारी नहीं थी, लेकिन यह खबर है कि बॉलीवुड अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा फिल्म में एक महत्वपूर्ण भूमिका के लिए बातचीत कर रही हैं। मेकर्स की तरफ से अभी तक इस बात कोई आधिकारिक जानकारी या घोषणा नहीं दी गई है।

ये अभिनेता निभाएगा विलेन की भूमिका

पिंकविला की नई रिपोर्ट में पता चला है कि प्रियंका चोपड़ा को महेश बाबू के साथ अभिनय करने के लिए फिल्म में साइन किया गया है। इतना ही नहीं, मलयालम सुपरस्टार पृथ्वीराज सुकुमारन फिल्म में खलनायक की भूमिका निभा रहे हैं। पृथ्वीराज हाल ही में प्रभास की सालार में दिखाई दिए थे।

आधिकारिक घोषणा का है इंतजार

फिल्म अप्रैल 2025 में फ्लोर पर आएगी। राजामौली ग्लोबल आइकन वाली एक महिला प्रधान भूमिका की तलाश में थे और प्रियंका चोपड़ा इस काम के लिए फिट बैठती हैं। प्रियंका चोपड़ा ने पिछले छह सालों में किसी भारतीय फिल्म में काम नहीं किया है। उनकी आखिरी फिल्म द स्काई इज पिंक थी। वैसे, स्टार फिल्म निर्माताओं ने अभी तक इसे आधिकारिक तौर पर घोषित नहीं किया है। इस बीच, महेश बाबू और राजामौली के प्रशंसक यह जानने का इंतजार कर रहे हैं कि फिल्म में और कौन शामिल हो रहा है।

मैं स्क्रीन पर खुद को एक जैसे रोल में रिपीट करने से बचती हूं

मौजूदा साल यामी गौतम के लिए पर्सनल और प्रोफेशनल दोनों तरह से सफल रहा है। उन्होंने इस साल मातृत्व का सुखद अनुभव पाया और अपने करियर में भी बड़ी उपलब्धियां हासिल कीं। हालिया बातचीत में उन्होंने अपने जज्बात और सिनेमा के बदलते स्वभाव पर चर्चा की...

फिल्म इंडस्ट्री के वर्तमान हालात पर क्या कहेंगी?

इंडस्ट्री इस समय काफी चुनौतियों का सामना कर रही है। खासकर फाइनेंशियल प्रेशर और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स का बढ़ता प्रभाव। यह फिल्म मेकर्स और प्रोड्यूसर्स के लिए कठिन दौर है। प्रोड्यूसर्स के लिए पैसे कमाना जरूरी है लेकिन मेरे लिए स्क्रिप्ट और क्रिएटिविटी पर फोकस करना ज्यादा अहम है। फिल्म सिर्फ बिजनेस कैलकुलेशन तक सीमित नहीं होनी चाहिए। यह इंडस्ट्री जोखिम लेने वाले रवैये से बनी थी। अब कॉरपोरेट स्टूडियोज की अलग गणना है। उसके चलते ज्यादातर मौकों पर वह सेफ तरीके से फिल्म करना चाहते हैं। ऐसे में कई बार सितारों से सजी फिल्में भी फीकी रह जाती हैं, जबकि बेटर स्क्रिप्ट वाली फिल्मों को वह सुनते भी नहीं हैं, क्योंकि शायद उसमें सितारों की फौज नहीं रहती। जबकि क्वालिटी फिल्में बनाने का पहला पैमाना सिर्फ स्क्रिप्ट होनी चाहिए। फिल्ममेकर्स को स्वतंत्र रूप से कुछ रचने की आजादी मिलनी चाहिए लेकिन वर्तमान समय में कमर्शियल पहलुओं पर ज्यादा जोर दिया जाता है।

साउथ से भी ऑफर आ रहे हैं क्या?

तमिल और मलयाली से आए हैं। वहां कॉन्सेप्ट अच्छे रहते हैं। तेलुगु में बड़ा स्केल में यकीनन होता है। हालांकि ऑफर कम आए हैं, मगर मैं जरूर काम करना चाहूंगी।

आप ऐसे प्रेशर्स को कैसे संभालती हैं?

मैं कोशिश करती हूं कि वैसे प्रेशर मुझे प्रभावित न करें। एक क्रिएटिव व्यक्ति के रूप में, मेरा ध्यान हमेशा अच्छी कहानियां सुनाने पर रहता है। एक अच्छी कहानी जो दर्शकों के दिलों को छू सके, वही सफलता की चाबी है। मेरे मामले में मैं स्क्रिप्ट का नैरेशन लेने से ज्यादा उसे पूरा पढ़ना ही पसंद करती हूं। तो ही मुझे संतुष्टि मिलती है। जिन मजबूत किरदारों ने मुझे पूर्व में काफी लोकप्रियता दी, उनको मैं रिपीट करने से बचती हूं, क्योंकि मैं दर्शकों का भरोसा नहीं तोड़ सकती।

मदरहुड के बारे में आप क्या कहेंगी?

मेरा बेटा सिर्फ 7 महीने का है। मातृत्व को शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। मां बनने का अनुभव सबसे सशक्त अहसास है। मैंने इस फेज को पूरी तरह से अपनाया है और इसके लिए मैं आभारी हूं। यह निश्चित रूप से एक बड़ी जिम्मेदारी है, जिसमें समय और धैर्य दोनों की जरूरत होती है।

समय रैना के शो पर बिफरीं उर्फी जावेद

समय रैना का शो इंडियाज गॉट लेटेंट एक बार फिर विवादों में घिर गया है। खबर है कि शो में बतौर गेस्ट शामिल हुईं सोशल मीडिया सेंसेशन उर्फी जावेद दो कंटेस्टेंट का उनके खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी किए जाने के बाद बीच में ही शो से बाहर चली गईं। उर्फी ने आखिरकार विवाद पर चुप्पी तोड़ी है और अपने वॉकआउट के बारे में बताया है।

उर्फी ने शो में जो कुछ हुआ, उसे शेयर करते हुए उन्होंने दो कंटेस्टेंट पर उन्हें स्लट शेमिंग करने का आरोप लगाया। उन्होंने खुलासा किया कि एक कंटेस्टेंट ने उनकी तुलना एडल्ट फिल्म एक्ट्रेस मिया खलीफा से भी की। उर्फी ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर उस विवाद के बारे में बताते हुए लिखा, मुझे लगता है कि मैं मेमो से चूक गई, आजकल लोगों को लगता है कि किसी को गाली देना या किसी को सिर्फ कुछ व्यूज के लिए शर्मिंदा करना अच्छा है। उर्फी ने आगे लिखा, मुझे खेद है लेकिन मुझे कोई भी मुझे गाली दे या मेरी बॉडी काउंट के लिए मुझे बदनाम करे। यह सब किस लिए? 2 मिनट की प्रसिद्धि के लिए? यही नहीं, उर्फी ने उस आदमी पर भी निशाना साधा, जिसने उन्हें गाली दी। उर्फी ने लिखा, जिस आदमी ने मुझे गाली दी, वह मजाक भी नहीं कर रहा था, जब मैंने उससे पूछा कि वह विकलांग होने का नाटक क्यों कर रहा है तो वह मुझ पर गुस्सा हो गया! उसने इतने सारे लोगों के सामने स्टेज पर मुझे गाली दी।

उर्फी को हुई घृणा

उर्फी ने यह भी लिखा, मुझे सच में घृणा हो रही थी। मुझे इन लोगों से कुछ कहना चाहिए था, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया क्योंकि मैं जिस जगह पर थी, वहां सभी को यह अच्छा लगा। नहीं, यह अच्छा नहीं है। यह अच्छा नहीं है।

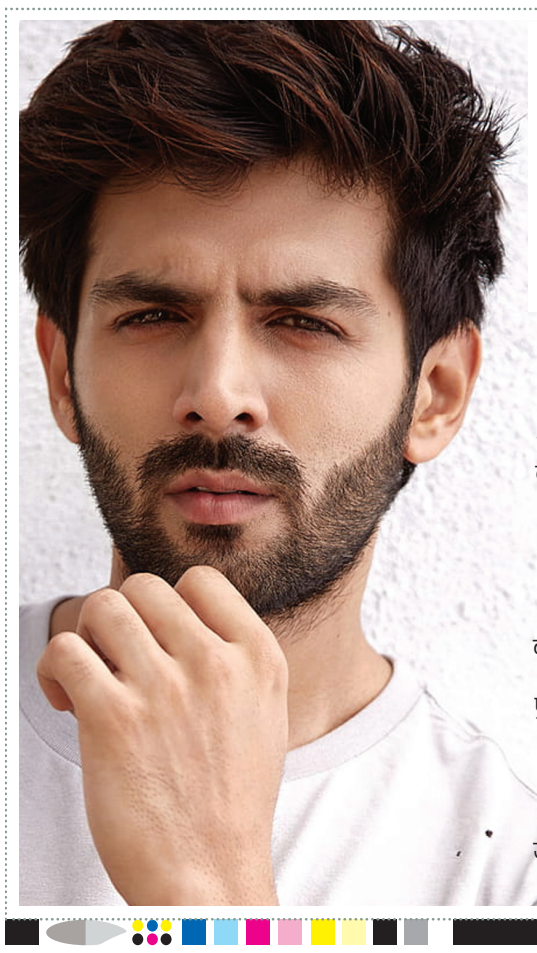

'अर्जुन उस्तरा' से बाहर होने के बाद कार्तिक का करियर संकट में

इस साल होली के तुरंत बाद जिस एक फिल्म के रंग सबसे ज्यादा हिंदी सिनेमा में बिखरने की उम्मीद दर्शकों को रही, वह फिल्म थी 'अर्जुन उस्तरा'। फिल्म 'चंदू चैंपियन' की रिलीज से पहले निर्माता साजिद नाडियाडवाला ने अपने चहीते कलाकार कार्तिक आर्यन के साथ ये तीसरी फिल्म बनाने का फैसला किया था लेकिन 'चंदू चैंपियन' ने जिस तरह साजिद के पैसे बॉक्स ऑफिस पर डुबोए, उसके बाद ही फिल्म 'अर्जुन उस्तरा' से कार्तिक की छुट्टी कर दी गई। सुनने में आया है कि टी सीरीज की फिल्म 'भूल भुलैया 4' भी बिना कार्तिक आर्यन के बन सकती है। कार्तिक आर्यन बीते कुछ साल की तरह इस साल भी दिसंबर महीने में पुरस्कार बटोरने में लग गए हैं। उन्हें जो भी पुरस्कार मिल रहे हैं, उनकी खबरें वह अपने सोशल मीडिया पर चमकते चेहरे के साथ साझा कर रहे हैं। लेकिन, ऐसे हर कार्यक्रम से पहले कार्यक्रम आयोजकों और कार्तिक आर्यन की टीम के बीच जमने वाली जुगलबंदी की कहानियां खूब चटखारे लेकर लोग अब मुंबई में सुना रहे हैं। फिल्म 'धमाका' को पूरी तरह नकार दिए जाने के बाद कार्तिक आर्यन के अभिनय की तारीफ सीधे ओटीटी पर रिलीज हुई उनकी दूसरी फिल्म 'फ्रेडी' को लेकर हुई थी। लेकिन, इसके बाद आई फिल्मों 'शहजादा', 'सत्यप्रेम की कथा' और 'चंदू चैंपियन' की विफलता ने कार्तिक के करिश्मे पर खूब पानी फेरा। फिल्म 'शहजादा' के लिए जब टी सीरीज ने उनकी मुंहमांगी रकम देने से इन्कार किया तो वह इस फिल्म के निर्माता भी बने। टी सीरीज की इसके पहले बनी फिल्म 'भूल भुलैया 2' के प्रचार के समय तब्बू के साथ कार्तिक की अनबन भी खूब चर्चा में रही। और, अब बताते हैं कि फिल्म 'भूल भुलैया 3' की रिलीज और उसके बाद कार्तिक आर्यन और तृप्ति डिमरी के आपसी समीकरण इतने बिगड़े कि तृप्ति ने उनके साथ फिल्म 'आशिकी 3' में काम करने से ही मना कर दिया है। ये फिल्म वैसे तो अपने अदालती विवादों के चलते भले ही बने लेकिन टी सीरीज के भीतर चर्चा इस बात की भी है कि फिल्म 'भूल भुलैया 4' की एक कहानी बिना कार्तिक आर्यन के किरदार के भी तैयार हो रही है। जैसे कार्तिक ने अक्षय कुमार को इस फ्रेंचाइजी में रिप्लेस किया, वैसे ही एक नए हीरो की तलाश उन्हें 'भूल भुलैया 4' में रिप्लेस करने की अंदरखाने चल रही है। 'आशिकी 3' अब करीब करीब बंद हो चुकी फिल्म है। इसके पहले हंसल मेहता की फिल्म 'कैप्टन इंडिया' और करण जौहर की फिल्म 'दोस्ताना 2' भी बंद हो ही चुकी हैं। जानकारी के मुताबिक कार्तिक आर्यन इन दिनों अपने फेवरिट निर्देशक लव रंजन के फिर से करीब होने की कोशिश कर रहे हैं। कार्तिक चाहते हैं कि उनकी फ्रेंचाइजी 'प्यार का पंचनामा' का नया सीक्वेल लव रंजन बनाएं और वो मुमकिन न हो तो 'सोनू के टीटू की स्वीटी' का सीक्वेल तो बन ही सकता है। लेकिन, 'सोनू के टीटू की स्वीटी' के समय जिन सस्ते होटलों में कार्तिक रुका करते थे, उनसे वह अब मीलों दूर निकल आए हैं, लौट कर वह उसी माहौल में जा पाएंगे या नहीं इसी पर इस फिल्म का सीक्वल टिका है। 'अर्जुन उस्तरा' से निकाले जाने का कार्तिक आर्यन के करियर पर सबसे ज्यादा असर पड़ने वाला है।

मैं हमेशा मेन कैरेक्टर रहूंगी?

काजोल अपनी बेहतरीन एक्टिंग के लिए बॉलीवुड में जानी जाती हैं, साथ ही उनका सादगी भरा अंदाज भी दर्शकों को भाता है हाल ही में काजोल ने अपने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक सेल्फी शेयर की। इस पर एक्ट्रेस ने कैप्शन लिखा- यह मैं हूं, मैं हमेशा मेन कैरेक्टर रहूंगी। इस तस्वीर में काजोल का नो मेकअप लुक नजर आया, वह बिना मेकअप के भी बहुत खूबसूरत दिखीं काजोल इंस्टाग्राम के जरिए अपनी हॉबीज भी फैंस के साथ साझा करती हैं। उन्हें क्रोशिएटिंग का भी शौक है। इससे उनका स्ट्रेस दूर होता है। वह गाड़ी में ट्रैवलिंग करते हुए भी क्रोशिएटिंग करती हुई देखी जा सकती है। काजोल के करियर फ्रंट की बात की जाए तो वह इस साल फिल्म 'दो पत्ती' में पुलिस ऑफिसर के रोल में नजर आईं।

दिग्गज कंपनी एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी ने भरी उड़ान

नई दिल्ली, एजेंसी। एनर्जी सेक्टर से जुड़ी कंपनी- एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी के शेयरों की शुक्रवार को भारी डिमांड थी। सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन बीएसई इंडेक्स पर एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी के शेयर 5.79 प्रतिशत बढ़कर 133.35 रुपये प्रति शेयर पर पहुंच गए।

368 करोड़ का काम मिलने के बाद पीएसयू स्टॉक का भाव बढ़ा

नई दिल्ली, एजेंसी। सरकारी कंपनी एनबीसीसी (इंडिया) लिमिटेड ने 27 दिसंबर, दिन शुक्रवार को दी जानकारी में बताया था कि उन्हें कई ऑर्डर मिले हैं। जिसकी कुल वैल्यू 368.75 करोड़ रुपये की है। शुक्रवार को कंपनी के शेयर बाजार के बंद होने के समय पर बीएसई में 1.43 प्रतिशत की तेजी के साथ 93.40 रुपये के लेवल पर था।

एलन मस्क की टेंशन बढ़ा रही है जेफ बेजोस की पूर्व पत्नी की दरियादिली, दान पर उठाए गंभीर सवाल

नई दिल्ली, एजेंसी। टेस्ला प्रमुख एलन मस्क ने मैकेंजी स्कॉट के दान पर सवाल उठाए हैं। मैकेंजी अमेजन के संस्थापक जेफ बेजोस की पूर्व पत्नी हैं। मस्क ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट पर अपनी राय दी। इस पोस्ट में स्कॉट के दान पर सवाल उठाए। दावा किया कि स्कॉट जरूरी वैश्विक मुद्दों पर ध्यान नहीं दे रहीं। उनके दान से विवादित विचारधाराओं को बढ़ावा मिल रहा है। पोस्ट में स्कॉट के ट्रस्ट-बेस्ड फिलैंथ्रॉपी पर भी सवाल उठाए गए। इसके तहत वह 2,500 से ज्यादा एनजीओ को बिना किसी शर्त के दान देती हैं।

मस्क ने स्कॉट के दान पर चिंता जताई है। उन्होंने एक सोशल मीडिया पोस्ट पर यह बात कही। पोस्ट में आरोप लगाया गया कि स्कॉट का ध्यान नस्लीय समानता, प्रवासी अधिकारों और एलजीबीटीक्यू जैसे मुद्दों पर ज्यादा है। महंगी डिग्रियों वाले लोग यहां नौकरी पा जाते हैं। पोस्ट में कहा गया कि स्कॉट ने पांच सालों में 16 अरब डॉलर का दान दिया है। अमेजन के शेयर बढ़ने से उनकी संपत्ति 36 अरब डॉलर हो गई है।

जेफ बेजोस की पूर्व पत्नी मैकेंजी स्कॉट हाल के वर्षों में बड़ी दानवीर बनकर उभरी हैं। अपनी यील्ड गिविंग पहल के जरिए उन्होंने 2019 से अब तक 19 अरब डॉलर से ज्यादा

दान दिए हैं। अफ्रीका में लड़कियों की शिक्षा से लेकर अमेरिका में किफायती आवास तक कई कार्यों में उन्होंने दान दिया है। स्कॉट नए तरीके से दान देती हैं। वह संस्थाओं को बड़ी रकम बिना किसी शर्त के देती हैं। इससे संस्थाएं अपनी जरूरत के हिसाब से पैसे खर्च कर सकती हैं।

2024 में स्कॉट ने कई संस्थाओं को दोबारा दान दिया। यह उनके एक बार दान वाले तरीके से अलग है। उदाहरण के लिए सीएएमएफइडी को इस साल तीसरी बार दान मिला। यह संस्था अफ्रीका में लड़कियों की शिक्षा पर काम करती है। एंटरप्राइज कम्युनिटी पार्टनर्स को भी अतिरिक्त 6.5 करोड़ डॉलर मिले। उन्हें 2020 में 5 करोड़ डॉलर मिल चुके थे।

इस साल स्कॉट ने दान देने का तरीका भी बदला है। पहली बार उन्होंने खुले आवेदन की प्रक्रिया शुरू की। 6,000 से ज्यादा एनजीओ ने आवेदन किया। स्कॉट ने 360 से ज्यादा संस्थाओं को 64 करोड़ डॉलर देने का वादा किया। यह उनके शुरुआती वादे से कहीं ज्यादा है। दान पाने वाली संस्थाओं ने स्कॉट के बिना शर्त दान की तारीफ की है। उनका कहना है कि इससे सिर्फ उनकी संस्थाओं को ही नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र को फायदा होगा। एलन मस्क ने स्कॉट के दान पर सवाल उठाते हुए इसे चिंताजनक बताया है। उनका मानना है कि स्कॉट गलत जगहों पर पैसा लगा रही हैं। वह ऐसे मुद्दों पर ध्यान दे रहीं हैं जिनसे समाज में फूट पड़ सकती है। मस्क का कहना है कि स्कॉट को दुनिया की असली समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए। जैसे गरीबी, भूख और बीमारी।

स्कॉट और मस्क के बीच यह मतभेद दान के तरीके पर बहस छेड़ सकता है। स्कॉट का मानना है कि संस्थाओं को बिना किसी शर्त के पैसे देने चाहिए। ताकि वे जरूरत के हिसाब से उनका इस्तेमाल कर सकें। मस्क का विचार है कि दान का इस्तेमाल ठीक से होना चाहिए और उस पर नजर रखी जानी चाहिए जिससे पैसा बर्बाद न हो।

भारत में वित्तीय वर्ष 2024 में 997.83 मीट्रिक टन का रिकॉर्ड कोयला उत्पादन

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत ने वित्त वर्ष 2023-24 में 997.826 मिलियन टन (एमटी) का अपना अब तक का सबसे अधिक कोयला उत्पादन हासिल किया, जो 2022-23 में 893.191 एमटी की तुलना में 11.71 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाता है।

कोयला मंत्रालय के अनुसार, एकीकृत कोयला रसद योजना के तहत सरकार ने वित्त वर्ष 2030 तक 1.5 बीटी कोयला उत्पादन का लक्ष्य रखा है। कैलेंडर वर्ष 2024 (15 दिसंबर तक) के दौरान, कोयला उत्पादन अनंतिम 988.32 मीट्रिक टन तक पहुंच गया, इसमें सालाना आधार पर 7.66 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई।

कोयले की आपूर्ति में भी उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई, 15 दिसंबर, 2024 तक 963.11 मीट्रिक टन अनंतिम आपूर्ति की गई, जो पिछले वर्ष की तुलना में 6.47 प्रतिशत अधिक है।बिजली क्षेत्र को 792.958 मीट्रिक टन कोयला मिला, जिसमें 5.02 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि गैर-विनियमित क्षेत्र (एनआरएस) में 14.48 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई, जिसमें 171.236 मीट्रिक टन की आपूर्ति की गई।

दूसरी बार बोनस शेयर दे रही है कंपनी, मिलेगा 1 स्टॉक फ्री

नई दिल्ली, एजेंसी। शेयर बाजार में इस हफ्ते कई कंपनियां एक्स-बोनस स्टॉक के तौर पर ट्रेड करेंगी। इसमें केपीआई ग्रीन एनर्जी भी एक है। कंपनी 2 शेयर पर 1 शेयर बोनस दे रही है। लॉन्ग टर्म में इस कंपनी ने शेयर बाजार में निवेशकों को अच्छा रिटर्न भी दिया है।

कब है रिकॉर्ड डेट- केपीआई ग्रीन एनर्जी के शेयर 3 जनवरी 2025 को एक्स-बोनस ट्रेड करेगी। कंपनी ने शेयर बाजारों को दी जानकारी में कहा था कि 5 रुपये के फेस वैल्यू वाले दो शेयर पर एक शेयर बोनस दिया जाएगा। यानी जिन निवेशकों का नाम 3 जनवरी को रिकॉर्ड बुक में रहेगा उन्हें बोनस शेयर का लाभ मिलेगा।

केपीआई ग्रीन एनर्जी के शेयर इससे पहले 2023 में एक्स-बोनस स्टॉक के तौर पर ट्रेड किया था। तब कंपनी ने एक शेयर पर एक शेयर बोनस दिया था।

शेयर बाजार में कंपनी का प्रदर्शन धमाकेदार- शुक्रवार को कंपनी के शेयर 0.55 प्रतिशत की तेजी के साथ 798.80 रुपये के लेवल पर था। बीते एक साल में केपीआई ग्रीन एनर्जी के शेयरों की कीमतों में 86 प्रतिशत से

अधिक की तेजी देखने को मिली है। कंपनी का 52 वीक हाई 1116 रुपये और कंपनी का 52 वीक लो लेवल 441.89 रुपये है।

पिछले 3 साल में कंपनी ने पोजीशनल निवेशकों को 1300 प्रतिशत से अधिक चढ़ा है। वहीं, 5 साल में कंपनी के शेयरों का भाव 12000 प्रतिशत से अधिक बढ़ा है।

इसी साल हुआ था कंपनी के शेयरों का बंटवारा- 2024 में ही कंपनी के शेयरों का बंटवारा हुआ था। कंपनी के शेयरों को 2 हिस्सों में बांट दिया गया था। जिसके बाद केपीआई ग्रीन एनर्जी के शेयरों की फेस वैल्यू घटकर 5 रुपये प्रति शेयर हो गई थी। कंपनी इस साल 3 बार एक्स-बोनस स्टॉक के तौर पर ट्रेड किया है। तीनों बार कंपनी ने 0.20 रुपये प्रति शेयर के हिसाब से डिविडेंड अपने निवेशकों को दिया है।

चीन और वियतनाम से नायलॉन फिलामेंट यार्न और टीडीक्यू की डंपिंग जांच शुरू

वाणिज्य मंत्रालय की जांच शाखा डीजीटीआर इस मामले की कर रही है जांच

कई कंपनियों ने यार्न पर डंपिंग रोधी जांच शुरू करने के लिए दिया था आवेदन

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत ने चीन से आने वाले दो उत्पादों पर डंपिंग रोधी जांच शुरू की है। ये उत्पाद रबर उद्योग में इस्तेमाल होने वाला एक रसायन और नायलॉन फिलामेंट यार्न हैं। वाणिज्य मंत्रालय की जांच शाखा डीजीटीआर इस मामले की जांच कर रही है। डीजीटीआर चीन और वियतनाम से आने वाले नायलॉन फिलामेंट यार्न की डंपिंग की जांच कर रहा है। साथ ही, टीडीक्यू (ट्राइमिथाइल डाइहाइड्रोक्विनोलिन) नाम के रसायन की भी जांच हो रही है। सेंचुरी एन्का, गुजरात पॉलीफिल्म्स और ओरिलॉन इंडिया ने यार्न पर डंपिंग रोधी जांच शुरू करने के लिए आवेदन दिया था। एनओसीआईएल लिमिटेड ने टीडीक्यू के लिए आवेदन दिया है।

डीजीटीआर यानी डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ ट्रेड रेमिडीज ने दो अलग-अलग अधिसूचनाएं जारी की हैं। इनमें

बताया है कि आवेदकों के लिखित आवेदन पर जांच शुरू की गई है। अगर यह साबित होता है कि डंपिंग से घरेलू कंपनियों को नुकसान हुआ है तो डीजीटीआर इन आयातों पर डंपिंग रोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करेगा। शुल्क लगाने का अंतिम फैसला वित्त मंत्रालय लेता है।

जांच से क्या पता चलेगा- यह कदम घरेलू उद्योगों को संरक्षण देने के लिए उठाया गया है। चीन से सस्ते आयात की वजह से भारतीय कंपनियों को काफी नुकसान हो रहा था। इस जांच से पता चलेगा कि क्या वाकई डंपिंग हो रही है। अगर डंपिंग साबित होती है तो सरकार डंपिंग रोधी शुल्क लगा सकती है। यह शुल्क चीनी उत्पादों को महंगा बना देगा। इससे भारतीय कंपनियों को राहत मिलेगी। यह देखना होगा कि इस मामले में क्या नतीजा निकलता है।

क्या होता है डंपिंग का मतलब

डंपिंग का मतलब है किसी उत्पाद को दूसरे देश में उसकी वास्तविक कीमत से कम दाम पर बेचना। ऐसा करके विदेशी कंपनियां उस देश के बाजार पर कब्जा करने की कोशिश करती हैं। डंपिंग रोधी जांच यह पता लगाने के लिए की जाती है कि क्या सस्ते आयात के कारण घरेलू उद्योगों को नुकसान हुआ है। इसके खिलाफ कदम उठाते हुए देश ड्ढ्ढञ्जह्र के नियमों के तहत डंपिंग रोधी शुल्क लगाते हैं। यह शुल्क निष्पक्ष व्यापार सुनिश्चित करने और घरेलू उत्पादकों के लिए विदेशी उत्पादकों और निर्यातकों के मुकाबले समान अवसर पैदा करने के लिए है। भारत ने पहले ही कई उत्पादों पर चीन समेत कई देशों से सस्ते आयात पर लगाम लगाने के लिए डंपिंग रोधी शुल्क लगाया है। डीजीटीआर ने 2024 में अब तक अलग-अलग उत्पादों पर 43 डंपिंग रोधी जांच शुरू की हैं। इनमें से 34 चीन के खिलाफ हैं। जिन देशों के खिलाफ ये जांच शुरू की गई हैं, उनमें रूस, ताइवान और जापान शामिल हैं। नायलॉन फिलामेंट यार्न का इस्तेमाल कपड़े, टायर और अन्य उत्पाद बनाने में होता है। ञ्जष्टक्त रबर उद्योग में इस्तेमाल होने वाला रसायन है।

2 दिन में 28 गुना सब्सक्रिप्शन, दांव लगाने का आखिरी मौका

नई दिल्ली, एजेंसी। अन्या पॉलीटेक आईपीओ को पहले दो दिन अच्छा रिस्पॉन्स मिला है। कंपनी का आईपीओ अभी कल भी निवेशकों के लिए खुला रहेगा। यह आईपीओ 26 दिसंबर को खुला था। बता दें, कंपनी के आईपीओ का साइज 44.80 करोड़ रुपये का है। कंपनी आईपीओ के जरिए निवेशकों को फ्रेश शेयर जारी करेगी।

14 रुपये है अपर प्राइस बैंड- अन्या पॉलीटेक आईपीओ का प्राइस बैंड 13 रुपये से 14 रुपये प्रति शेयर तय किया गया है। कंपनी ने 1000 शेयरों का एक लॉट बनाया है। जिसकी वजह से निवेशकों को कम से कम 1,40,000 रुपये का दांव लगाना होगा। कंपनी का आईपीओ एंकर निवेशकों के लिए 24 दिसंबर को खुला था। तब कंपनी ने एंकर निवेशकों के जरिए 12.74 करोड़ रुपये जुटाए थे। एंकर निवेशकों को जारी किए 50 प्रतिशत

शेयरों का लॉक इन पीरियड महज 30 दिनों का ही है। वहीं, बाकि बचे 50 प्रतिशत का लॉक इन पीरियड 90 दिन का है।

2 दिन में 28 गुना सब्सक्राइब हुआ आईपीओ- पहले दिन अन्या पॉलीटेक आईपीओ के आईपीओ को 12 गुना से अधिक सब्सक्रिप्शन मिला था। तो वहीं दो दिन की समाप्ति के बाद आईपीओ को 28 गुना से अधिक सब्सक्राइब किया जा चुका था। रिटेल कैटगरी में सबसे अधिक 47 गुना से अधिक सब्सक्रिप्शन मिला था। क्वालीफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स कैटगरी में करीब 3 गुना सब्सक्रिप्शन मिला था।

क्या चल रहा है जीएमपी- ग्रे मार्केट में कंपनी का आईपीओ 4 रुपये पर ट्रेड कर रहा है। 26 तारीख से अबतक कंपनी के जीएमपी में कोई बदलाव नहीं हुआ है। अगर यही जीएमपी लिस्टिंग के दिन भी रहता है हो तो कंपनी पहले दिन करीब 30 प्रतिशत का फायदा मिल सकता है।

रिजर्व बैंक दे रही है देसी डिजिटल करेंसी को बढ़ावा

अब इसे बैंक अपने अधिकारियों को रीइम्बर्समेंट के तौर पर देगी

नई दिल्ली, एजेंसी। क्रिप्टोकरेंसी का मुकाबला करने के लिए देसी डिजिटल करेंसी को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारतीय रिजर्व बैंक अपने अधिकारियों के साथ केंद्रीय बैंक डिजिटल करेंसी के लिए इसकी टेस्टिंग करेगा। केंद्रीय बैंक ने हाल ही में आरबीआई अधिकारियों के सीबीडीसी वॉलेट में रीइम्बर्समेंट किए जाने वाले भत्ते का एक हिस्सा जमा करने का फैसला किया है। देसी डिजिटल करेंसी यानी सीबीडीसी को केंद्रीय बैंकों की ओर से सुरक्षित और स्मार्ट पेमेंट ऑप्शन के साथ-साथ क्रिप्टोकरेंसी का मुकाबला करने के लिए एक कदम के रूप में माना जाता है। यह पूरी तरह से डिजिटल होगी और डिजिटल वॉलेट में होगी।

इसके जरिए आप कहीं भी पेंमेंट कर सकेंगे। यह भारत में पूरी तरह वैध होगी। अभी क्रिप्टोकरेंसी में पेमेंट भारत में वैध नहीं है। हालांकि कई दूसरे देशों में कई कंपनियां और संस्थान क्रिप्टोकरेंसी में पेमेंट स्वीकार करते हैं।

लोगों को प्रोत्साहित करने की ओर कदम- 27 दिसंबर को वरिष्ठ अधिकारियों को एक इंटरनल कम्युनिकेशन भेजा गया। इसके अनुसार, सीबीडीसी रिटेल पायलट को बढ़ाने और रिजर्व बैंक के अधिकारियों की ओर से सीबीडीसी वॉलेट के इस्तेमाल को प्रोत्साहित करने के लिए डिजिटल करेंसी जमा कराई जाएगी। यह करेंसी इंटरनेट/डेटा शुल्क के लिए रीइम्बर्समेंट के तौर पर जमा की जाएगी।

चल रहा है पायलट प्रोजेक्ट- देसी डिजिटल करेंसी अभी भी पायलट प्रोजेक्ट के रूप में चलन में है। एसबीआई, आईसीआईसीआई, एचडीएफसी, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केनरा बैंक आदि डिजिटल करेंसी जारी कर रहे हैं।

क्या है रिजर्व बैंक का प्लान

क्रिप्टोकरेंसी को टक्कर देने के लिए रिजर्व बैंक डिजिटल करेंसी को बढ़ावा देने का प्रयास लगातार कर रहा है। रिजर्व बैंक का कहना है कि इसका सबसे ज्यादा इस्तेमाल दूसरे देशों में पेमेंट करने को लेकर हो सकता है। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि अगर वर्तमान निर्णय कर्मचारियों के बीच अच्छा रहा तो क्या भविष्य में सीबीडीसी वॉलेट में अधिक रीइर्म्बसमेंट जमा किया जाएगा। एक बैंकर ने कहा, यूजर्स को इससे कोई आपत्ति नहीं होगी अगर वे सीबीडीसी वॉलेट से पेमेंट करने के लिए यूपीआई और जीपेय जैसे पेमेंट मोड का इस्तेमाल कर सकें या वॉलेट में खर्च न किए गए डिजिटल रुपये को वापस बैंक अकाउंट में ट्रांसफर कर सकें।

अगले हफ्ते लगेगा नए आईपीओ का चौका, 6 की होगी लिस्टिंग

नई दिल्ली, एजेंसी। साल 2024 को खत्म होने में मात्र दो दिन ही बचे हैं। हालांकि आईपीओ आ आना खत्म नहीं हुआ है। अगले हफ्ते चार नए आईपीओ शेयर मार्केट में एंट्री कर रहे हैं। इनमें से एक आईपीओ मेन बोर्ड से और तीन आईपीओ एसएमई सेगमेंट से हैं। इनमें से कुछ आईपीओ को ग्रे मार्केट में जबरदस्त भाव मिल रहा है। अगर आप आईपीओ के जरिए शेयर मार्केट में निवेश करना पसंद करते हैं तो इन आईपीओ में दांव लगा सकते हैं। वहीं अगले हफ्ते 6 आईपीओ की लिस्टिंग भी होगी।

इंडो फार्म इक्विपमेंट- यह मेन बोर्ड का आईपीओ है। इसका इश्यू

साइज 260.15 करोड़ रुपये है। कंपनी 184.90 करोड़ रुपये के 86 लाख फ्रेश इश्यू और 75.25 करोड़ रुपये के 35 लाख ओएफएस के तहत इश्यू जारी करेगी।

यह आईपीओ निवेश के लिए मंगलवार यानी 31 दिसंबर को खुलेगा। इसमें आप 2 जनवरी तक बोली लगा सकेंगे। इसकी लिस्टिंग 7 जनवरी को हो सकती है। इसकी फेस वैल्यू 10 रुपये प्रति शेयर है। वहीं प्राइस बैंड 204 से 215 रुपये प्रति शेयर है। एक लॉट में 69 शेयर हैं। इसके लिए कम से कम 14,835 रुपये निवेश करने होंगे। एक रिटेल निवेशक अधिकतम 13 लॉट बुक करवा सकेगा।

क्या है ग्रे मार्केट में स्थिति- ग्रे मार्केट में इसे अच्छा भाव मिल रहा है। रविवार सुबह 11:30 बजे तक इसका ग्रे मार्केट प्रीमियम (जीएमपी) 80 रुपये था। यानी यह आईपीओ 37.21 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 295 रुपये पर लिस्ट हो सकता है।

टेक्नीकेम ऑर्गेनिक्स लिमिटेड- यह एसएमई सेगमेंट का आईपीओ है। इसका इश्यू साइज 25.25 करोड़ रुपये है।

फैबटेक टेक्नोलॉजीज क्लीनरूम्स लिमिटेड

यह भी एसएमई सेगमेंट का आईपीओ है। इसका इश्यू साइज क्या होगा, अभी इसके बारे में कंपनी ने कोई घोषणा नहीं की है। हां, इतना जरूर बताया है कि कंपनी 32.64 लाख फ्रेश शेयर जारी करेगी। कोई भी शेयर ओएफएस के तहत जारी नहीं किया जाएगा।

यह शेयर निवेश के लिए 3 जनवरी को खुलेगा। इसमें 7 जनवरी तक बोली लगा सकेंगे। लिस्टिंग 10 जनवरी को हो सकती है। इसकी फेस वैल्यू 10 रुपये प्रति शेयर होगी। हालांकि कंपनी ने अभी इसके प्राइस बैंड के बारे में भी कुछ नहीं बताया है।

वोडाफोन समूह ने वीआईएल के शेयरों के बदले लिया 11,650 करोड़ रुपए का कर्ज चुकाया

नई दिल्ली, एजेंसी। ब्रिटेन स्थित वोडाफोन समूह ने वोडाफोन आइडिया के शेयरों के बदले जुटाए गए लगभग 11,650 करोड़ रुपए या 10.9 करोड़ पाउंड का बकाया चुका दिया है। कंपनी ने शेयर बाजार को बताया कि वोडाफोन समूह ने कर्ज जुटाने के लिए वीआईएल में लगभग पूरी हिस्सेदारी गिरवी रख दी थी। मॉरीशस और भारत स्थित वोडाफोन समूह की संस्थाओं द्वारा जुटाए गए कर्ज के लिए एचएसबीसी कॉरपोरेट ट्रस्टी कंपनी (यूके) के पक्ष में शेयर गिरवी रखे गए थे। शेयर बाजार को दी जानकारी के मुताबिक, वोडाफोन के प्रवर्तकों के ऋणदाताओं को बकाया चुकाने के बाद ऋणदाताओं के लिए सुरक्षा ट्रस्टी के रूप में काम करने वाली एचएसबीसी कॉरपोरेट ट्रस्टी कंपनी (यूके) लिमिटेड ने 27 दिसंबर 2024 को गिरवी शेयरों को जारी कर दिया गया है। वोडाफोन समूह के पास वीआईएल की 22.56 प्रतिशत हिस्सेदारी है, जबकि आदित्य बिड़ला समूह के पास 14.76 प्रतिशत और सरकार के पास 23.15 प्रतिशत हिस्सेदारी है।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें

@Pratahkiran www.pratahkiran.com

राष्ट्रीय दैनिक प्रातःकिरण
नई दिल्ली, सोमवार, 30 दिसंबर, 2024

हम्पी ने दूसरी बार वर्ल्ड रैपिड शतरंज चैंपियनशिप जीती

इंडोनेशिया की इरीन सुखंदर को हराया, टूर्नामेंट में 11 में से 8.5 पॉइंट्स अर्जित किए

न्यूयार्क (एजेंसी)। भारत की कोनेरू हम्पी ने दूसरी बार वर्ल्ड रैपिड शतरंज चैंपियनशिप खिताब जीत लिया है। न्यूयॉर्क में खेले गए इस टूर्नामेंट में हम्पी ने फाइनल में इंडोनेशिया की इरीन सुखंदर को हराया। इससे पहले हम्पी ने साल 2019 में जॉर्जिया में हुए इस चैंपियनशिप को जीता था। भारत की नंबर 1 खिलाड़ी चीन की जू वेनजुन के बाद एक से अधिक बार खिताब जीतने वाली दूसरी खिलाड़ी हैं। 37 वर्षीय हम्पी ने 11 में से 8.5 अंकों के साथ टूर्नामेंट का समापन किया।

हम्पी ग्रैंड मास्टर बनने वाली भारत की पहली महिला खिलाड़ी –हंपी नेशनल बॉयज टाइटल जीतने वाली पहली भारतीय महिला थीं। वे ग्रैंड मास्टर बनने वाली भारत की पहली महिला खिलाड़ी हैं। वे 2600 ईएलओ पॉइंट हासिल करने वाली सिर्फ दूसरी महिला खिलाड़ी हैं। उनके पिता अशोक कोनेरू ने 5 साल की उम्र में उनकी प्रतिभा को पहचान लिया था। अशोक भी शतरंज खेलते थे। उन्होंने हम्पी को ट्रेनिंग दी। अशोक प्रोफेसर थे। बेटी के शतरंज के सपनों को पूरा करने के लिए उन्होंने नौकरी छोड़ दी और हंपी को ट्रेनिंग देने लगे। 6 और 7 साल की उम्र में हंपी ने स्टेट चैंपियनशिप जीत ली। इसके बाद अंडर-12, 14, 16 की नेशनल चैंपियन बन गईं।

रूस के वोलोडर मुर्जिन ने पुरुषों का खिताब जीता

रूस के 18 वर्षीय वोलोडर मुर्जिन ने मेन्स का खिताब जीता। मुरजिन स्त्रढ्ढष्ठश्च वर्ल्ड रैपिड चैंपियन जीतने वाले दूसरे सबसे युवा खिलाड़ी हैं। उनसे पहले नोडिरबेक अब्दुसत्तोरोव 17 साल की उम्र में खिताब जीता था।

चेस में इस साल भारत का रहा बेहतर प्रदर्शन

चेस में इस साल भारत का प्रदर्श प्रदर्शन बेहतर रहा है। डी गुकेश ने चीन के डिंग लिरेन को 12 दिसंबर को वर्ल्ड चेस चैंपियनशिप फाइनल में 7.5-6.5 से हराया था। इतनी कम उम्र में खिताब जीतने वाले गुकेश दुनिया के पहले प्लेयर हैं। इससे पहले 1985 में रूस के गैरी कैस्परोव ने 22 साल की उम्र में यह खिताब जीता था। वहीं सितंबर में हंगरी के बुडापेस्ट में हुए चेस ओलिंपियाड में भारत ने ओपन और विमेंस कैटेगरी में ऐतिहासिक गोल्ड मेडल जीता। ओलिंपियाड के 97 साल के इतिहास में भारत ने दोनों कैटेगरी में पहली बार ही पहला स्थान हासिल किया। 11वें राउंड की ओपन कैटेगरी में भारत ने स्लोवेनिया को 3.5-0.5 से हराया। वहीं, विमेंस टीम ने अजरबैजान को 3.5-0.5 के अंतर से ही आखिरी राउंड हराया।

नीतीश के पिता ने गावस्कर के पैरों पर सिर रखा

पूर्व क्रिकेटर रो पड़े, कहा- आपके बलिदान की वजह से नीतीश रेड्डी जैसा हीरा मिला

मेलबर्न (एजेंसी)। मेलबर्न टेस्ट में करियर का पहला शतक लगाने वाले नीतीश रेड्डी के पिता मुत्याला रेड्डी ने पूर्व क्रिकेटर सुनील गावस्कर से मुलाकात की। इस दौरान मुत्याला ने गावस्कर के पैरों पर सिर रखकर नमस्कार किया। गावस्कर ने मुत्याला को उठाया और गले से लगा लिया। इस इमोशनल मोमेंट पर गावस्कर भी रो पड़े। उन्होंने कहा, आपके बलिदान की वजह से भारत को नीतीश रेड्डी नाम का हीरा मिला है। हम जानते हैं कि आपने कितना त्याग किया है। बहुत संघर्ष किया है। आपकी वजह से मैं रो रहा हूं। आपकी वजह से भारत को हीरा मिला है, भारतीय क्रिकेट को हीरा मिला है। नीतीश के शतक के बाद मुत्याला ने हाथ जोड़ा। वे रो पड़े और कहा कि ये स्पेशल मोमेंट, कभी नहीं भूलेंगे।

पिता ने नीतीश के लिए नौकरी छोड़ दी थी

मुताल्या रेड्डी ने अपने बेटे की क्रिकेटिंग स्किल्स निखारने के लिए 2016 में हिंदुस्तान जिंक में अपनी नौकरी छोड़ दी। नीतीश ने भी अपने पिता के त्याग की चर्चा बीसीसीआई टीवी को दिए इंटरव्यू में की।

नीतीश ने कहा था, सच कहूं तो बचपन में मैं क्रिकेट के प्रति ज्यादा सीरियस नहीं था। मेरे पिता ने मेरे लिए नौकरी छोड़ दी थी। मेरी कहानी के पीछे मेरे पिता और परिवार का बहुत त्याग रहा है। एक दिन मैंने पैसे की कमी के कारण उन्हें रोते हुए देखा। तब मुझे एहसास हुआ कि इस तरह मजे के लिए क्रिकेट नहीं खेली जा सकती।

यहां से मैं क्रिकेट के प्रति पूरी तरह सीरियस हो गया। मैंने बहुत ज्यादा कड़ा परिश्रम किया और इसका मुझे रिजल्ट मिला। अब मुझे खुद पर गर्व है कि मेरे पिता अब खुश हैं।

सुनील गावस्कर ने दिया था स्टैंडिंग ओवेशन

नीतीश रेड्डी ने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के पहले मैच से टेस्ट में डेब्यू किया है। मेलबर्न में चौथे मैच के तीसरे दिन शनिवार को उन्होंने करियर का पहला शतक बनाया। नीतीश के शतक के बाद सुनील गावस्कर ने उन्हें स्टैंडिंग ओवेशन दिया था।

आलोचकों को गलत साबित करना चाहता था, नीतिश रेड्डी की शतकीय पारी के बाद पहली प्रतिक्रिया

मेलबर्न (एजेंसी)। नीतिश रेड्डी अपने आलोचकों को गलत साबित करना चाहते थे जो टेस्ट प्रारूप में उनकी काबिलियत पर संदेह करते थे और एमसीजी के प्रतिष्ठित मैदान पर शतक जड़कर उन्होंने यह संदेश दिया कि वह क्रिकेट के उच्चतम स्तर के खिलाड़ी हैं। कुछ पूर्व खिलाड़ी रेड्डी के टेस्ट खिलाड़ी के रूप में उभरने को लेकर संशय में थे जिसमें पूर्व मुख्य चयनकर्ता भी शामिल था। लेकिन छह पारियों में 293 रन बनाकर और 58 से अधिक के बल्लेबाजी औसत से उन्होंने इन सभी को करारा जवाब दिया है।

रेड्डी की 114 रन की पारी की बदौलत भारत पहली पारी में 369 रन बनाने में सफल रहा। इस शतक की बदौलत युवा बल्लेबाज ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। क्या आपको कभी लगा कि आप इस टीम में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी होंगे? रेड्डी ने चौथे दिन का खेल समाप्त होने के बाद अपनी निराशा साझा करते हुए कहा, 'कुछ लोगों को मुझ पर संदेह था जैसे आईपीएल खेलने वाला कोई युवा खिलाड़ी इतनी बड़ी श्रृंखला में प्रदर्शन नहीं कर सकता। मैं जानता हूं कि बहुत से लोग इस तरह की बातें करते थे।

इस 21 साल के खिलाड़ी ने कहा, 'मैं बस उन्हें यह अहसास दिलाना चाहता हूं कि उन्होंने मेरे बारे में जो कुछ कहा है, वह गलत है और मैं यही कर रहा हूं। मैं लोगों को बताना चाहता हूं कि मैं भारतीय टीम के लिए अपना शत प्रतिशत देने के लिए यहां हूं। यह पूछे जाने पर कि वह पिछले एक महीने को कैसे देखते हैं जिसमें उनका जीवन बदल गया, उन्होंने तुरंत जवाब दिया 'मुझे लगता है कि आप लोगों के लिए यह एक या दो महीने ही हैं। लेकिन मेरे लिए यह पिछले दो से तीन साल हैं। मैं अपनी बल्लेबाजी और गेंदबाजी पर कितनी मेहनत कर रहा हूं। रेड्डी ने 2024 आईपीएल की शुरुआत से पहले 'साइड-आर्म थ्रोडाउन' विशेषज्ञों की सेवायें ली थीं और उनके खिलाफ लगभग 18 गज की दूरी से 145 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से गेंद पर बल्लेबाजी का अभ्यास किया था।

असमान उछाल में बल्लेबाजी करना मुश्किल हो सकता है : मार्नस लाबुशेन

मेलबर्न (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया की तरफ से चौथे टेस्ट मैच की दूसरी पारी में सर्वाधिक रन बनाने वाले मार्नस लाबुशेन ने रविवार को यहां कहा कि भारत के लिए ऐसे विकेट पर लक्ष्य का पीछा करना मुश्किल हो सकता है जिसमें असमान उछाल है। ऑस्ट्रेलिया ने चौथे दिन का खेल समाप्त होने तक अपनी दूसरी पारी में नौ विकेट पर 228 रन बनाए हैं और उसकी कुल बढ़त 333 रन की हो गई है।

लाबुशेन ने सर्वाधिक 70 रन बनाए जबकि निचले क्रम में पैट कमिंस (41), नाथन लियोन (नाबाद 41) और स्कॉट बोलैंड (नाबाद 10) ने उपयोगी योगदान दिया। लाबुशेन से जब पूछा गया कि पांचवें दिन पिच का व्यवहार कैसा होगा, उन्होंने कहा, 'मेरा मानना है की पहली पारी में पिच से कुछ मूवमेंट मिल रहा था। निश्चित रूप से पहले 40 से 50 ओवर तक रन बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ा लेकिन खेल आगे बढ़ने के साथ उछाल कम और असमान हो गई। इसलिए हमने देखा कि अधिकतर गेंद विकेट को निशाना बनाकर की गई।

उन्होंने कहा, 'सीम मूवमेंट शायद पहले जैसा ही है लेकिन अब कम गेंद उछाल ले रही है और ऐसे में बल्लेबाजी करना मुश्किल हो जाता है। लाबुशेन ने यह नहीं बताया कि उनकी टीम कल सुबह मौजूदा स्कोर पर ही पारी समाप्त की घोषणा करेगी या नहीं लेकिन उन्होंने यह जरूर कहा कि चौथे दिन उनकी टीम ने रणनीति पर अमल किया। उन्होंने कहा, 'मुझे बहुत खुशी हुई कि आप सोचते हैं कि मुझे यह पता है कि हमारी टीम पारी समाप्ति की घोषणा करेगी या नहीं।

मेलबर्न में सिर्फ एक बार चेज हुआ 300+ रन का लक्ष्य, क्या पांचवें दिन भारत रचेगा इतिहास?

● कमिंस के बाद लियोन ने संभाला, ऑस्ट्रेलिया ने बनाई 333 रन की लीड ● बुमराह ने चार जबकि सिराज ने अभी तक 3 विकेट अपने नाम किए

मेलबर्न (एजेंसी)। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉक्सिंग डे टेस्ट के रूप में खेले जा रहे बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी सीरीज के चौथे मैच में मेजबान टीम ने चौथे दिन 9 विकेट के नुकसान पर 228 रन बनाते हुए 333 रन की लीड हासिल कर ली है। दूसरे पारी में तेज गेंदबाज चमके जिन्होंने कुल 7 विकेट अपने नाम किए। इसमें बुमराह ने चार जबकि सिराज ने अभी तक 3 विकेट अपने नाम किए हैं। ऑस्ट्रेलिया की तरफ से दूसरी पारी में मार्नस लाबुशेन (139 गेंदों पर 3 चौकों की मदद से 70 रन) के बाद पैट कमिंस की 41 रन की पारी प्रभावी रही। नाथन लियोन ने अंत में आकर पासा पलटने की कोशिश की और इस दौरान उन्हें बोलैंड का भी साथ मिला। दोनों ने चौथे दिन विकेट बचाए रखा जिससे ऑस्ट्रेलिया को मजबूती मिली।

अब भारत को मेलबर्न में इतिहास भी रचना होगा और इस मैदान पर सबसे बड़े लक्ष्य का पीछा करना होगा, क्योंकि इससे पहले मेलबर्न में टेस्ट में सबसे सफल चेज 332 रन का था, जो इंग्लैंड ने 1928 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ किया था।

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच मैचों की सीरीज का चौथा टेस्ट मेलबर्न में खेला जा रहा है। इस बॉक्सिंग डे टेस्ट के चौथे दिन का खेल खत्म हो चुका है। ऑस्ट्रेलिया ने अपनी दूसरी पारी में नौ विकेट गंवाकर 228 रन बना लिए हैं। पहली पारी के आधार पर उनके पास 105 रन की बढ़त थी। ऐसे में टीम की कुल बढ़त 333 रन की हो चुकी है। अब तक मेलबर्न में सिर्फ एक बार 300 से ज्यादा रन के लक्ष्य को सफलतापूर्वक चेज किया गया है।

टेस्ट क्रिकेट में शुरूआती कदम रखने वाले नीतिश कुमार रेड्डी ने भारत के लिए 'संकटमोचक' की भूमिका निभाते हुए चौथे टेस्ट के तीसरे दिन नाबाद शतक लगाकर आस्ट्रेलिया की जीत की उम्मीदों को झटका दिया है। रेड्डी के नाबाद 105 रन की मदद से भारत ने बारिश के कारण तीसरे दिन का खेल जल्दी समाप्त किए जाने तक 9 विकेट पर 358 रन बना लिए हैं।

आस्ट्रेलिया के पहली पारी के 474 रन से भारत अभी भी 116 रन पीछे है। एमसीजी की सपाट पिच पर गेंदबाजों को कोई मदद नहीं मिलती देख अब टेस्ट बचाना भारत के लिए बहुत मुश्किल नहीं होना चाहिए। इस श्रृंखला में भारत की खोज रहे रेड्डी को इसका पूरा श्रेय जाता है। उन्होंने जुझारूपन की मिसाल पेश करते हुए वॉशिंगटन सुंदर (162 गेंद में 50 रन) के साथ 127 रन की अहम साझेदारी की जो भारत के लिये निर्णायक मोड़ रही।

महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने रेड्डी की पारी को सर्वश्रेष्ठ टेस्ट पारियों में से एक बताया। ऋषभ पंत के गैर जिम्मेदाराना शॉट खेलकर विकेट गंवाने के समय भारत का स्कोर छह विकेट पर 191 रन था। आंध्र के युवा बल्लेबाज का स्कोर 99 रन था जब जसप्रीत बुमराह आउट हो गए। इस समय रेड्डी और आखिरी बल्लेबाज मोहम्मद सिराज क्रीज पर थे। सिराज के आने पर दर्शकों ने फिर उनकी हूटिंग की लेकिन उन्होंने मेजबान कप्तान पैट कमिंस की तीन गेंद संभलकर खेली। हर गेंद के बाद रेड्डी और दीर्घा में बैठे उनके पिता के चेहरे के भाव बदल रहे थे लेकिन सिराज ने तीन गेंद संभलकर खेली और रेड्डी को वह पल दिया जिसका सपना वह हजारों बार देख चुके थे। स्कॉट बोलैंड को सीधे चौका लगाकर रेड्डी ने अपना शतक पूरा किया और घुटने के बल बैठकर बल्ले पर हेलमेट रखकर भारतीय डगआउट के प्रति आभार व्यक्त किया। भारतीय खिलाड़ियों ने खड़े होकर उनका अभिवादन किया।

रेड्डी ने अपनी पारी में 10 चौके और एक छक्का लगाया। सुबह के सत्र में जहां ऋषभ पंत का गैर जिम्मेदाराना शॉट खेलकर अपना विकेट गंवाना भारत को भारी पड़ा वहीं दूसरे सत्र में रेड्डी ने जबर्दस्त संयम का प्रदर्शन किया। भारत ने पहले सत्र में 80 रन बनाए। पंत 37 गेंद में 28 रन बनाकर खराब शॉट खेलकर आउट हुए। एमसीजी पर तीसरा दिन बल्लेबाजी के लिये शानदार था चूंकि घास हट चुकी थी और कूकाबूरा से गेंदबाजों को कोई मदद नहीं मिल रही थी। पंत अगर टिककर खेलते तो बड़ी पारी खेल सकते थे। रविंद्र जडेजा (51 गेंद में 17 रन) और पंत ने दिन की अच्छी शुरूआत की। पंत ने कुछ चौके भी लगाए लेकिन लांग लेग पर गैर जरूरी रिवर्स लैप पुल शॉट खेलकर अपना विकेट गंवा दिया।

स्कॉट बोलैंड की गेंद पर जब उन्होंने पहली बार यह शॉट खेलने का प्रयास किया तो गेंद नाभि के पास लगी और वह दर्द में दिखे। वह उठे और उन्हें समझ में नहीं आया कि पैट कमिंस ने डीप फाइन लेग और डीप थर्डमैन पर फील्डर लगा दिया है ताकि रिवर्स और रिवर्स लैप शॉट रोक सके। पंत ने फिर वही शॉट खेला और अतिरिक्त उछाल के कारण गेंद सीधे थर्डमैन पर फील्डर के हाथ में गई। इसके बाद रेड्डी ने संभलकर खेला और कुछ अच्छे स्ट्रोक्स लगाये । इस बीच जडेजा को नाथन लियोन ने पगबाधा आउट कर दिया।

मेलबर्न में टेस्ट में सबसे सफल रन चेज

लक्ष्य (रन)	टीम	खिलाफ	साल
332	इंग्लैंड	ऑस्ट्रेलिया	1928
297	इंग्लैंड	ऑस्ट्रेलिया	1895
295	दक्षिण अफ्रीका	ऑस्ट्रेलिया	1953
286	ऑस्ट्रेलिया	इंग्लैंड	1929
282	इंग्लैंड	ऑस्ट्रेलिया	1908

दोनों टीमों की प्लेइंग 11

ऑस्ट्रेलिया – उस्मान ख्वाजा, सैम कोंस्टास, मार्नस लाबुशेन, स्टीवन स्मिथ, ट्रैविस हेड, मिशेल मार्श, एलेक्स कैरी (विकेट कीपर), पैट कमिंस (कप्तान), मिशेल स्टार्क, नाथन लियोन, स्कॉट बोलैंड

भारत – यशस्वी जयसवाल, केएल राहुल, रोहित शर्मा (कप्तान), विराट कोहली, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रवींद्र जड़ेजा, नितीश कुमार रेड्डी, वाशिंगटन सुंदर, जसप्रित बुमरा, मोहम्मद सिराज, आकाश दीप

सिनर, स्वियातेक के डोपिंग मामलों पर खिलाड़ियों को अंधेरे में रखा गया : जोकोविच

ब्रिसबेन (एजेंसी)। दुनिया के पूर्व नंबर एक टेनिस खिलाड़ी नोवाक जोकोविच ने रविवार को इस खेल में डोपिंग से जुड़े हाई-प्रोफाइल मामलों से निपटने में 'दोहरे मापदंड' अपनाने की आलोचना की। जोकोविच चोट से उबर कर सोमवार से शुरू होने वाले 'ब्रिसबेन इंटरनेशनल' से प्रतिस्पर्धी टेनिस में वापसी करेंगे। अगले महीने शुरू होने वाले ऑस्ट्रेलियाई ओपन में अपना रिकॉर्ड 25वां ग्रैंड स्लैम खिताब जीतने की कवायद में लगे जोकोविच 2009 के बाद पहली बार 'ब्रिसबेन इंटरनेशनल' में भाग लेंगे। इस टूर्नामेंट के एकल में उन्हें शीर्ष वरीयता मिली है। जोकोविच ने मौजूदा समय में रैंकिंग में शीर्ष पर काबिज यानिस सिनर के डोपिंग मामले के बारे में 'अंधेरे में रखे जाने' पर निराशा व्यक्त की। जोकोविच 'बिसबेन इंटरनेशनल' के युगल में ऑस्ट्रेलिया के निक किर्गियोस के साथ भी जोड़ी बनाएंगे। यह जोड़ी सोमवार से अपना अभियान शुरू करेगी। उन्होंने कहा, 'मैं यह सवाल नहीं कर रहा हूं कि (सिनर ने) जानबूझकर प्रतिबंधित पदार्थ लिया था या नहीं। हमने अतीत और वर्तमान में बहुत सारे खिलाड़ियों को प्रतिबंधित पदार्थों के लिए जांच में पॉजिटिव आने के कारण निलंबित होते देखा है। उन्होंने कहा, 'कम रैंकिंग वाले कुछ खिलाड़ी एक साल से अधिक समय से अपने मामले के सुलझने का इंतजार कर रहे हैं। मैं वास्तव में निराश हो हूं। हमें (सिनर मामले पर) कम से कम पांच महीने तक अंधेरे में रखा गया। इंटरनेशनल टेनिस इंटीग्रिटी एजेंसी (आईटीआईए) ने सिनर और पूर्व महिला विश्व नंबर एक इगा स्वियातेक दोनों पर साल की शुरुआत में डोपिंग रोधी उल्लंघन का आरोप लगाया था। सर्बियाई खिलाड़ी ने डोपिंग उल्लंघनों के संबंध में टेनिस अधिकारियों की ओर से पारदर्शिता की कमी की भी आलोचना की।

आस्ट्रेलिया -भारत

यशस्वी जायसवाल ने चौथे दिन 3 कैच छोड़े, रोहित शर्मा भड़के

मेलबर्न (एजेंसी)। बॉक्सिंग डे टेस्ट के चौथे दिन दूसरे सत्र के दौरान युवा ओपनर यशस्वी जायसवाल द्वारा सीधा कैच छोड़े जाने के बाद रोहित शर्मा स्लिप कॉर्डन में गुस्से में दिखे। ऑस्ट्रेलिया की दूसरी पारी में एक महत्वपूर्ण क्षण में मौका चूक गया, जिससे 46 रन पर अच्छी तरह से जमे मार्नस लाबुशेन को एक अतिरिक्त जीवनदान मिला।

रोहित आमतौर पर शांत और संयमित रहते हैं, लेकिन वह अपनी हताशा को छिपा नहीं पाए और महंगे कैच के बाद गुस्से में हवा में मुक्का मारने लगे। जब लाबुशेन ने आकाश दीप की गेंद पर मौका दिया, तब भारत 99 रन पर 6 विकेट खोकर मजबूत स्थिति में था। जायसवाल ने कठोर हाथों से कैच लेने की कोशिश की, लेकिन गेंद जमीन पर गिर गई। यह यशस्वी द्वारा चौथे दिन छोड़ा गया दूसरा कैच था।

इससे पहले ऑस्ट्रेलिया की पारी के तीसरे ओवर में, उन्होंने उस्मान ख्वाजा को आउट करने का मुश्किल मौका गंवा दिया, जो 2 रन पर थे। लेग में खड़े जायसवाल ख्वाजा की शक्तिशाली फ्लिक पर जल्दी से प्रतिक्रिया करने के लिए संघर्ष कर रहे थे। ख्वाजा ने इसका फायदा उठाया और मोहम्मद सिराज द्वारा आउट होने से पहले 19 रन जोड़े।

बुमराह के 200 टेस्ट विकेट पूरे, संयुक्त रूप से दूसरे सबसे तेज भारतीय गेंदबाज

मेलबर्न (एजेंसी)। भारत के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह रविवार को यहां ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चौथे टेस्ट के चौथे दिन के खेल के दौरान टेस्ट क्रिकेट में 200 विकेट पूरे करने वाले रविंद्र जडेजा के साथ संयुक्त रूप से दूसरे सबसे तेज भारतीय गेंदबाज बन गए। बुमराह ने लंच के बाद के सत्र में ट्रेविस हेड (01) को अपना 200वां शिकार बनाया जिससे उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में सबसे तेज 200 विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में जडेजा की बराबरी की। बुमराह और जडेजा दोनों ने अपने 44वें टेस्ट में यह उपलब्धि हासिल की और वह टेस्ट क्रिकेट में यह उपलब्धि हासिल करने वाले 12वें भारतीय गेंदबाज हैं। हाल ही में संन्यास लेने वाले भारतीय स्पिनर रविचंद्रन अश्विन 200 विकेट लेने वाले भारतीयों की सूची में सबसे तेज हैं। उन्होंने अपने 37वें टेस्ट में यह उपलब्धि हासिल की थी। अश्विन सबसे तेज 200 टेस्ट विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में दुनिया में तीसरे स्थान पर हैं। उनसे आगे दो लेग स्पिनर हैं- पाकिस्तान के यासिर शाह (33 टेस्ट) और ऑस्ट्रेलिया के क्लेरी ग्रिमेट (36 टेस्ट)। हेड को आउट करने के बाद बुमराह ने मिचेल मार्श (00) को विकेट के पीछे कैच कराया जिससे उन्होंने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में अपने विकेटों की संख्या 28 पर पहुंचा दी। इससे पहले उन्होंने ऑस्ट्रेलिया की दूसरी पारी में सलामी बल्लेबाज सैम कोन्सटास (08) को आउट करके पहला विकेट लिया था।

एक अनूठा कारनामा – टेस्ट क्रिकेट के 148 साल के इतिहास में यह पहली बार है जब किसी गेंदबाज ने 200 या उससे अधिक विकेट 20 से कम के औसत से लिए हों। इससे पहले यह रिकॉर्ड वेस्टइंडीज के दिग्गज गेंदबाज मैल्कम मार्शल के नाम था, जिन्होंने 376 विकेट 20.94 के औसत से लिए थे। बुमराह ने न केवल मार्शल के इस रिकॉर्ड को तोड़ा बल्कि टेस्ट क्रिकेट में एक नया इतिहास स्थापित किया है।

संक्षिप्त खबरें

फ्लोरिडा में ट्रेन और दमकल गाड़ी की टक्कर में 15 लोग घायल

न्यूयॉर्क। अमेरिका में फ्लोरिडा के डाउनटाउन डेलरे बीच में शनिवार को एक तेज रफ्तार यात्री ट्रेन और दमकल की गाड़ी के बीच टक्कर हो जाने से तीन दमकलकर्मियों समेत 15 लोग घायल हो गए। स्थानीय रिपोर्टों के अनुसार दुर्घटना स्थानीय समयानुसार सुबह 10:45 बजे हुई जब दमकल की गाड़ी दूसरी ट्रेन के गुजरने का इंतजार करने के बाद रेल क्रॉसिंग आर्म्स से होते हुए पटरियों पर जा घुसी। रिपोर्ट के अनुसार टक्कर में ट्रेन का अगला हिस्सा नष्ट हो गया जबकि दमकल की गाड़ी की सीढ़ी टूटकर दूर घास वाले क्षेत्र में जा गिरी। टक्कर के कारणों की जांच चल रही है।

ऑस्ट्रेलिया के समुद्र तट पर शार्क के हमले में एक व्यक्ति की मौत

सिडनी। पूर्वी ऑस्ट्रेलिया के मध्य क्वींसलैंड तट पर शार्क के हमले में एक व्यक्ति की मौत हो गई। स्थानीय मीडिया ने शनिवार को यह जानकारी दी। येप्पून के तटवर्ती जलक्षेत्र में शार्क के हमले में 40 वर्षीय व्यक्ति की मृत्यु हो गई। पिछले एक महीने में मध्य क्वींसलैंड में यह दूसरी घटना है।क्वींसलैंड पुलिस सेवा के प्रवक्ता ने बताया कि वह व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों के साथ मछली पकड़ रहा था, तभी शार्क ने उस पर हमला कर दिया। समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने ब्रिसबेन स्थित द कूरियर मेल दैनिक समाचार पत्र के हवाले से बताया कि यह घटना शनिवार को शाम करीब 4:37 बजे हुई। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि व्यक्ति को जानलेवा चोटें आईं थीं और शाम को उसकी मौत हो गई। समाचार पत्र ने ऑस्ट्रेलियाई शार्क-घटना डेटाबेस के हवाले से बताया कि इस साल अब तक ऑस्ट्रेलियाई जलक्षेत्र में कम से कम चार अन्य शार्क हमले हुए हैं। इससे पहले 23 जुलाई को ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी तट पर एक व्यक्ति पर शार्क ने हमला किया था, इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया था। आपातकालीन सेवा न्यू साउथ वेल्स ने बताया कि शार्क द्वारा किसी व्यक्ति को काटे जाने की सूचना मिलने के बाद, स्थानीय समयानुसार सुबह 11 बजे के बाद पोर्ट मैक्वेरी के नॉर्थ शोर बीच पर दल को बुलाया गया था। न्यू साउथ वेल्स एंबुलेंस ने एक बयान में कहा कि 20 साल के एक व्यक्ति के पैर में गंभीर चोट लगने के बाद उसे उपचार के लिए पोर्ट मैक्वेरी बेस अस्पताल पहुंचाया। 10 किमी से अधिक में फैला, नॉर्थ शोर बीच न्यू साउथ वेल्स के मध्य-उत्तर में स्थित है और राज्य की राजधानी सिडनी से 300 किमी से अधिक उत्तर में स्थित है। घटना के बाद, एक स्थानीय जीवन रक्षक एजेंसी और आम लोगों ने अस्थायी टूर्निकेट का उपयोग करके सहायता प्रदान की। पोर्ट मैक्वेरी हेस्टिंग्स एएलएस लाइफगार्ड ने कहा कि नॉर्थ शोर और लाइटहाउस बीच (टैकिंग पॉइंट) के बीच के समुद्र तट बंद कर दिए गए और कम से कम 24 घंटे तक बंद रहे।

पक्षी से टकराने के बाद हेलीकॉप्टर को काठमांडू के निकट आपात स्थिति में उतारा गया

काठमांडू। अमेरिका के पांच नागरिकों को लेकर रविवार को नेपाल की राजधानी काठमांडू जा रहे एक हेलीकॉप्टर को एक पक्षी से टकराने के कारण राजधानी से 50 किलोमीटर पूर्व में बनेपा में आपात स्थिति में उतरना पड़ा। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी।उन्होंने बताया कि निजी हेली एवरेस्ट एयरलाइन का 9एन-एकेजी हेलीकॉप्टर माउंट एवरेस्ट के प्रवेश द्वार लुक्ला से आ रहा था कि जो पूर्वाह्न 11 बजे एक पक्षी से टकरा गया। अधिकारी ने कहा कि पायलट हेलीकॉप्टर को सुरक्षित उतारने में सफल रहा। एयरलाइन के अनुसार, हेलीकॉप्टर में पांच अमेरिकी नागरिक और एक नेपाली पायलट सवार थे। इसने कहा कि हालांकि हेलीकॉप्टर को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है, लेकिन अगली उड़ान के लिए तैयार होने से पहले इसे तकनीकी जांच से गुजरना होगा।

दक्षिण कोरिया में हवाई अड्डे पर विमान हादसे में मरने वालों की संख्या बढ़कर 167 हुई

सियोल। दक्षिण कोरिया में एक हवाई अड्डे पर रविवार को उतरते समय एक यात्री विमान में आग लगने की घटना में कम से कम 167 लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि यह देश में अब तक हुए सबसे वीभत्स हवाई हादसों में से एक है।देश की राष्ट्रीय अग्निशमन एजेंसी ने बताया कि बचाव दल मुआन शहर स्थित इस हवाई अड्डे पर जेजू एयर यात्री विमान से लोगों को निकालने की कोशिश में जुटा हुआ है। विमान में 181 यात्री सवार थे परिवहन मंत्रालय ने बताया कि विमान 15 वर्ष पुराना बोइंग 737-800 जेट था, जो बैंकॉक से लौट रहा था और दुर्घटना स्थानीय समयानुसार सुबह नौ बजकर तीन मिनट पर हुई।

इजरायली पीएम नेतन्याहू की होगी प्रोस्टेट रिमूवल सर्जरी

प्रात : किरण/एजेंसी

यरूशलम। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की रविवार को प्रोस्टेट सर्जरी होगी। उनके कार्यालय ने इस खबर की पुष्टि की। शनिवार को जारी एक बयान में बताया गया कि बुधवार को नेतन्याहू ने यरूशलम के हदासाह मेडिकल सेंटर में जांच करवाई थी। इस जांच में उन्हें प्रोस्टेट में हल्की वृद्धि के कारण यूटीआई होने का पता चला। इसके बाद, प्रधानमंत्री को एंटीबायोटिक उपचार दिया गया और अब उनका संक्रमण ठीक हो चुका है। हालांकि, नेतन्याहू को सर्जरी करानी है। इस बीच, प्रधानमंत्री कार्यालय ने यह स्पष्ट किया है कि इजरायल की कैबिनेट की साप्ताहिक बैठक रविवार को तय समय पर ही होगी।

इस साल की शुरूआत में, मार्च महीने में नेतन्याहू ने सामान्य एनेस्थीसिया के तहत हर्निया की सर्जरी करवाई थी। इसके दौरान इजरायल के उप प्रधानमंत्री और न्याय मंत्री यारिव लेविन ने अस्थायी रूप से प्रधानमंत्री

का कार्यभार संभाला था। जुलाई 2023 में, नेतन्याहू को डिहाइड्रेशन का अनुभव करने के ठीक एक सप्ताह बाद एरिथमिया से पीड़ित होने के बाद पेसमेकर लगवाने के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया था। इस घटना के बाद इजरायल में कई लोगों के बीच प्रधानमंत्री के स्वास्थ्य के बारे में काफी अटकलें लगाई जाने लगीं। जनवरी में जारी एक मेडिकल रिपोर्ट में कहा गया कि नेतन्याहू स्वास्थ्य की पूरी तरह से सामान्य स्थिति में थे, उनका पेसमेकर सही तरीके से काम कर रहा था और हृदय एरिथमिया या किसी अन्य किसी समस्या होने का कोई सबूत नहीं था। प्रधानमंत्रियों को वार्षिक स्वास्थ्य रिपोर्ट जारी करने के लिए आवश्यक प्रोटोकॉल के बावजूद, नेतन्याहू ने 2016 और 2023 के अंत के बीच एक भी रिपोर्ट जारी नहीं की। उन्हें कानूनी रूप से अपनी स्वास्थ्य जानकारी साझा करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता था क्योंकि पीएमओ द्वारा विकसित ये प्रोटोकॉल कानून में निहित नहीं थे। हाल ही में स्वास्थ्य संबंधी समस्या उसी सप्ताह सामने आई है जब इजरायल ने ईरान समर्थित समूह द्वारा मिसाइल हमलों की बौछार के जवाब में हूतियों द्वारा नियंत्रित यमन के कुछ हिस्सों पर हवाई हमलों की झड़ी लगा दी थी। इजरायली सेना के हमलों के बाद, जिसमें सना में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर हमला भी शामिल है, हूतियों ने इजरायल पर रॉकेट दागना जारी रखा है। ज्ञात हो कि 7 अक्टूबर, 2023 को हमास के नेतृत्व वाले आतंकी हमले के बाद से इजरायल कई मोर्चों पर संघर्ष में उलझा हुआ है। गाजा में फिलिस्तीनी समूह और लेबनान में हिजबुल्लाह से लड़ रहा है।

मुआन में यात्री विमान दुर्घटना में दो लोगों को छोड़कर सभी के मारे जाने की आशंका

प्रात : किरण/एजेंसी

सोल। दक्षिण कोरिया के दक्षिण-पश्चिमी काउंटी मुआन में रविवार को एक हवाई अड्डे पर रनवे से उतरने और दीवार से टकराने के बाद 181 लोगों को ले जा रहे एक यात्री विमान के आग की चपेट में आ जाने से उसमें सवार दो लोगों को छोड़कर सभी के मारे जाने की आशंका है। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। योनहाप समाचार एजेंसी ने अग्निशमन एजेंसी के हवाले से बताया कि दक्षिण कोरिया के 173 और थाईलैंड के दो लोगों सहित 175 यात्रियों एवं छह चालक दल सदस्य के साथ यात्री विमान राजधानी सोल से लगभग 288 किमी दक्षिण-पश्चिम में दक्षिण जिओला प्रांत के मुआन काउंटी में स्थानीय समयानुसार सुबह लगभग 09:07 बजे मुआन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरने का प्रयास करते समय दुर्घटनाग्रस्त हो गया। एजेंसी ने बताया कि बैंकॉक, थाईलैंड से जेजू एयर का विमान 7सी2216 रनवे से उतर गया और रनवे की बाहरी दीवार से टकरा गया जिससे उसमें आग लग गई। माना जा रहा है कि दुर्घटना पक्षी के टकराने के कारण हुई जिसके कारण लैंडिंग गियर में खराबी आ गई। उन्होंने बताया कि दुर्घटना में बचाए गए दो लोगों को छोड़कर सभी लापता लोगों के मारे जाने की आशंका है। अग्निशमन अधिकारियों ने कहा कि वे शवों को बरामद करने के लिए खोज अभियान चला रहे हैं। अधिकारियों ने दुर्घटना में अब तक 85 लोगों की मौत की पुष्टि की है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार दुर्घटना के तुरंत बाद एक यात्री और एक चालक दल का सदस्य (दोनों महिलाएँ) को बचा लिया गया और उनका मोकपो के एक अस्पताल में इलाज चल रहा है। बैंकॉक से लौट रहे विमान में चालक दल के छह सदस्यों सहित कुल 181 लोग सवार थे। विस्फोट के कारण विमान लगभग पूरी तरह नष्ट हो गया। दक्षिण जिओला के अधिकारियों ने उच्चतम स्तर पर आपातकालीन अलर्ट जारी किया और दुर्घटना स्थल पर सभी उपलब्ध बचाव और पुलिस कर्मियों को तैनात किया।

अधिकारियों का मानना है कि लैंडिंग गियर में खराबी संभवतः पक्षी के टकराने के कारण हुई है। उन्होंने सटीक कारण का पता लगाने के लिए मौके पर जाँच शुरू की। कार्यवाहक राष्ट्रपति चोई सांग-मोक दोपहर के आसपास दुर्घटना स्थल पर पहुँचे और अधिकारियों को खोज अभियान के लिए हरसंभव प्रयास करने का निर्देश दिया। श्री चोई ने शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति गहरी संवेदना भी व्यक्त की और उन्हें हर संभव सरकारी सहायता देने का वादा किया।

टेक्सास में आए बवंडर में एक व्यक्ति की मौत, छह घायल

अधिकारियों ने बताया कि ह्यूस्टन से लगभग 72.4 किमी दक्षिण में स्थित ब्रेजोरिया काउंटी में शेरिफ कार्यालय ने एक व्यक्ति की मौत और चार लोगों के घायल होने की पुष्टि की है। डिप्टी चीफ ऑफ स्टाफ जेसन स्मिथ ने सीबीएस न्यूज को बताया कि उत्तरी ह्यूस्टन के मोंटगोमरी काउंटी में दो अन्य लोगों को घायल अवस्था में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अभी तक गंभीर चोटों की कोई रिपोर्ट नहीं मिली है। ब्रेजोरिया काउंटी शेरिफ कार्यालय की प्रवक्ता मैडिसन पोलस्टन ने सीएनएन को बताया, 'हम अभी भी द्वितीयक खोज कर रहे हैं और यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि सभी निवासियों का पता चल जाए।'

प्रात : किरण/एजेंसी

ह्यूस्टन। अमेरिका के टेक्सास राज्य के ग्रेटर ह्यूस्टन महानगरीय क्षेत्र में शनिवार दोपहर को आए कई बवंडर और भयंकर तूफान से कम से कम एक व्यक्ति की मौत हो गई और छह अन्य घायल हो गए। अधिकारियों ने बताया कि ह्यूस्टन से लगभग 72.4 किमी दक्षिण में स्थित ब्रेजोरिया काउंटी में शेरिफ कार्यालय ने एक व्यक्ति की मौत और चार लोगों के घायल होने की पुष्टि की है।

डिप्टी चीफ ऑफ स्टाफ जेसन स्मिथ ने सीबीएस न्यूज को बताया कि उत्तरी ह्यूस्टन के मोंटगोमरी काउंटी में दो अन्य लोगों को घायल अवस्था में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अभी तक गंभीर चोटों की कोई रिपोर्ट नहीं मिली है। ब्रेजोरिया काउंटी शेरिफ कार्यालय की प्रवक्ता

मैडिसन पोलस्टन ने सीएनएन को बताया, 'हम अभी भी द्वितीयक खोज कर रहे हैं और यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि सभी निवासियों का पता चल जाए।' उन्होंने कहा, 'इस समय हमें और अधिक मौतें होने की उम्मीद नहीं है।' अमेरिकी राष्ट्रीय मौसम सेवा के अनुसार शनिवार को ह्यूस्टन के उपनगरीय क्षेत्रों में कई बवंडर आए जिससे दर्जनों घर क्षतिग्रस्त हो गए तथा बिजली की लाइनें और पेड़ गिर गए।

लेबनान ने 70 सीरियाई सैनिकों को सीरिया वापस भेजा

प्रात : किरण/एजेंसी

काहिरा। लेबनान सरकार ने सीरिया में सत्ता में आए सीरियाई सशस्त्र विपक्ष को 70 सीरियाई सैनिकों और अधिकारियों को सौंप दिया है। ये लोग पूर्व राष्ट्रपति बशर असद के पद छोड़ने के बाद लेबनान भाग गए थे। सीरियाई समाचार पत्र अल-वतन ने शनिवार को यह जानकारी दी। रिपोर्ट में कहा गया है कि ये लोग असद के परिवार के करीबी थे और अनौपचारिक मार्गों से अवैध रूप से लेबनान की सीमा पार कर गए थे।

लेबनान के विदेश मंत्री अब्दुल्ला बौ हबीब ने गुरुवार को अपने नए सीरियाई समकक्ष असद हसन अल-शैबानी के साथ एक टेलीफोन बातचीत में कहा कि बेरूत को दमिश्क में नए अधिकारियों के साथ अच्छे पड़ोसी संबंध बनाने की उम्मीद है। उल्लेखनीय है कि सीरिया के सशस्त्र विपक्ष ने गत आठ दिसंबर को दमिश्क पर कब्जा कर लिया था। रूस के अधिकारियों ने कहा कि सीरियाई राष्ट्रपति बशर असद ने सीरियाई संघर्ष में प्रतिभागियों के साथ बातचीत के बाद पद छोड़ दिया और सीरिया छोड़कर रूस चले गए जहाँ उन्हें शरण दी गई। मोहम्मद अल-बशीर जिन्होंने हयात तहरीर अल-शाम और अन्य विपक्षी समूहों द्वारा गठित इदलिब-आधारित प्रशासन चलाया था को अंतरिम प्रधानमंत्री नामित किया गया। बाद में उन्होंने घोषणा की कि एक अंतरिम सरकार का गठन किया गया है और यह मार्च 2025 तक बनी रहेगी।

सीरिया के तटीय इलाकों में सैन्य हेलिकॉप्टरों की तैनाती, 'पूर्व शासन के अवशेषों' पर कार्रवाई

प्रात : किरण/एजेंसी

दमिश्क। सीरिया की अंतरिम प्रशासन के सैन्य बलों ने पूर्व शासन के अवशेषों के खिलाफ हवाई हमले तेज कर दिए हैं। अंतरिम प्रशासन पूर्व शासन के अवशेष असदसरकार के लिए लड़ रहे सशस्त्र लड़ाकों को कह रहा है। मीडिया चैनलों ने प्रशासन के एक बयान का हवाला देते हुए बताया कि हेलीकॉप्टर ग्रामीण लताकिया में इस्तामो एयरफील्ड से उड़ान भर रहे हैं, जो तटीय ग्रामीण इलाकों में अभी भी सक्रिय सशस्त्र तत्वों को निशाना बना रहे हैं, जिसमें उपयोग में आने वाले हेलीकॉप्टरों की संख्या या ऑपरेशन के दायरे के बारे में विस्तार से नहीं बताया गया है। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, यह तैनाती राष्ट्रीय स्तर पर सुरक्षा उपायों की एक श्रृंखला के तहत की गई है, जिसका उद्देश्य नए नेतृत्व की सत्ता को मजबूत करना है। शनिवार को सीरिया के नवनियुक्त खुफिया प्रमुख अनस खत्ताब ने एक आधिकारिक बयान में देश की सुरक्षा व्यवस्था को हमारे लोगों की बलिदानों और लंबी धरोहर के अनुरूप पुनर्गठित करने का वादा किया। खत्ताब ने कहा कि सीरिया की सभी मौजूदा सुरक्षा शाखाओं को खत्म कर दिया जाएगा और उनका पुनर्गठन किया जाएगा। हालांकि, उन्होंने इस पुनर्गठन के लिए कोई समयसीमा या विशिष्ट विवरण प्रदान नहीं किया। खत्ताब की ओर से यह घोषणा ऐसे समय में की गई है जब सीरिया 8 दिसंबर को पिछली सरकार के पतन के बाद एक संवेदनशील राजनीतिक परिवर्तन से गुजर रहा है। हयात तहरीर अल-शाम के नेतृत्व में एक सैन्य गठबंधन ने 27 नवंबर को उत्तरी सीरिया से एक बड़े सैन्य अभियान की शुरूआत की। इसने दक्षिण की ओर बढ़ते हुए राजधानी दमिश्क पर कब्जा किया और 12 दिनों के भीतर पूर्व सीरियाई राष्ट्रपति बशर अल-असद की सरकार को उखाड़ फेंका। सीरियाई सूचना मंत्रालय ने सीरियाई लोगों के बीच विभाजन फैलाने के उद्देश्य से सांप्रदायिक लहजे वाली किसी भी मीडिया सामग्री या समाचार के प्रसार या प्रकाशन पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की। सीरियाई गृहयुद्ध ने सांप्रदायिक रूप लिया क्योंकि असद ने मध्य पूर्व से शिया मिलिशिया को अपने यहां पैर जमाने की खुली छूट दी। मीडिया ने बताया कि पुलिस ने हिंसक प्रदर्शन के बाद बुधवार रात कर्फ्यू लगा दिया। स्थानीय लोगों के अनुसार प्रदर्शन में अलावी और शिया धार्मिक समुदायों के सदस्य शामिल थे। होम्स से बुधवार को सोशल मीडिया पर पोस्ट किए गए फुटेज में लोगों की भीड़ को तितर-बितर होते हुए और उनमें से कुछ को भागते हुए दिखाया गया। असद के लंबे समय तक सहयोगी रहे ईरान ने हाल के दिनों में सीरिया में हुई घटनाओं की आलोचना की। ईरानी सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने सीरियाई युवाओं से अपील की कि वह उन लोगों के खिलाफ दृढ़ संकल्प के साथ खड़े होने का आह्वान किया जिन्होंने इस असुरक्षा को अंजाम दिया है।

विरोध कनाडा या ऑस्ट्रेलिया की तरह एक अंक प्रणाली को अपनाया जा सके जो शैक्षणिक और रोजगार योग्यताओं को महत्व देती है।

ट्रंप बोले- 'एच-1बी' वीजा पर है विश्वास, विरोध को किया खारिज

ट्रंप ने आव्रजन प्रणाली में सुधार का समर्थन किया है ताकि इसे योग्यता के अनुरूप ढाला जा सके। कनाडा या ऑस्ट्रेलिया की तरह एक अंक प्रणाली को अपनाया जा सके जो शैक्षणिक और रोजगार योग्यताओं को महत्व देती है। उन्होंने कहा कि वे चाहते हैं कि अमेरिकी विश्वविद्यालयों से स्नातक करने वाले विदेशी छात्रों को उनके डिप्लोमा के साथ ग्रीन कार्ड मिले। उन्होंने इस साल अपने अभियान के दौरान कहा, मैं जो करना चाहता हूं और जो मैं करूंगा, वह यह है कि आप कॉलेज से स्नातक हों, मुझे लगता है कि आपको अपने डिप्लोमा के हिस्से के रूप में इस देश में रहने में सक्षम होने के लिए स्वचालित रूप से ग्रीन कार्ड मिलना चाहिए।

प्रात : किरण, एजेंसी

न्यूयॉर्क। राष्ट्रपति-चुनाव डोनाल्ड ट्रंप ने घोषणा की कि वे एच-1बी वीजा में विश्वास करते हैं, उन्होंने योग्य पेशेवरों के विरोध को लेकर चल रही खबरों को खारिज कर दिया। यह एक शानदार कार्यक्रम है, उन्होंने शनिवार को न्यूयॉर्क पोस्ट को एक फोन साक्षात्कार में बताया। अपने अनूठे अंदाज में उन्होंने कहा, मुझे हमेशा से वीजा पसंद रहे हैं, मैं हमेशा से वीजा के पक्ष में रहा हूं। इसलिए हमारे पास ये हैं। उन्होंने रूपर्ट मर्डोक-नियंत्रित न्यूज कॉर्प का हिस्सा अखबार से कहा, मेरी संपत्तियों पर कई एच-1बी वीजा हैं। मैं एच-1बी में विश्वास करता रहा हूं। मैंने इसका कई बार इस्तेमाल किया है।

ट्रंप ने आव्रजन प्रणाली में सुधार का समर्थन किया है ताकि इसे योग्यता के अनुरूप ढाला जा सके। कनाडा या ऑस्ट्रेलिया की तरह एक अंक प्रणाली को अपनाया जा सके

जो शैक्षणिक और रोजगार योग्यताओं को महत्व देती है। उन्होंने कहा कि वे चाहते हैं कि अमेरिकी विश्वविद्यालयों से स्नातक करने वाले विदेशी छात्रों को उनके डिप्लोमा के साथ ग्रीन कार्ड मिले।

उन्होंने इस साल अपने अभियान के दौरान कहा, मैं जो करना चाहता हूं और जो मैं करूंगा, वह यह है कि आप कॉलेज से स्नातक हों, मुझे लगता है कि आपको अपने डिप्लोमा के हिस्से के रूप में इस देश में रहने में सक्षम होने के लिए स्वचालित रूप से ग्रीन कार्ड मिलना चाहिए। एच-1बी वीजा और उच्च योग्यता वाले व्यक्तियों के आव्रजन पर मतभेद ट्रंप तब उभरा जब उन्होंने एक भारतीय अप्रवासी श्रीराम कृष्णन को अपना एआई सलाहकार नियुक्त किया। सबसे पहले हमला लॉरा लूमर ने विरोध में आवाज उठाई। जिन्हें ट्रंप के वफादारों में से एक माना जाता है। उन्होंने मस्क के एक्स पर पोस्ट किया, श्रीराम कृष्णन की नियुक्ति को देखकर बहुत परेशान हूं। ह्व लॉरा ने दावा किया कि कृष्णन ग्रीन कार्ड की संख्या पर सभी पाबंदी हटाने की ख्वाहिश रखते हैं। डेविड सैक्स, जिन्हें ट्रंप ने क्रिप्टो और एआई जार का नाम दिया है और जो कृष्णन के बॉस होंगे, ने एक्स पर बताया कि उन्होंने केवल उन ग्रीन कार्डों की सीमा को हटाने का सुझाव दिया था जो अलग-अलग देशों को दिए जा सकते हैं, जबकि समग्र सीमा को बनाए रखा ताकि ग्रीन कार्ड उन लोगों को वितरित किए जा सकें जिनके पास बहुत अधिक बैकलॉग हैं। जब कृष्णन के खिलाफ व्यक्तिगत हमले और झूठे आरोप लगे तो सैक्स फिर से उनके बचाव में आए और एक्स पर लिखा कि झूठ बस बदल गया, जिसमें उन पर कुछ हमले भी शामिल थे। मस्क ने व्यक्तिगत दृष्टिकोण अपनाया और एक्स पर पोस्ट किया, मैं अमेरिका में इतने सारे महत्वपूर्ण लोगों के साथ हूं, जिन्होंने स्पेसएक्स, टेस्ला और सैकड़ों अन्य कंपनियों का निर्माण किया, जिन्होंने अमेरिका को मजबूत बनाया, इसका कारण एच-1बी है। उन्होंने चेतावनी दी कि दुनिया की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को आकर्षित किए बिना अमेरिका हार जाएगा। उन्होंने एक्स पर लिखा, उत्कृष्ट इंजीनियरिंग प्रतिभा की स्थायी कमी है। यह सिलिकॉन वैली में मूलभूत सीमित कारक है। उन्होंने लिखा, यदि आप दुनिया की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को दूसरे पक्ष के लिए खेलने के लिए मजबूर करते हैं तो अमेरिका हार जाएगा और आलोचकों को चुनौती देते हुए पूछा कि क्या वे अमेरिका को जीतते या हारते देखना चाहते हैं। भारतीय अब तक एच-1बी वीजा के सबसे बड़े प्राप्तकर्ता हैं, जिन्हें पिछले साल 72.3 प्रतिशत प्राप्त हुए।

यह एक शानदार कार्यक्रम है, उन्होंने शनिवार को न्यूयॉर्क पोस्ट को एक फोन साक्षात्कार में बताया। अपने अनूठे अंदाज में उन्होंने कहा, मुझे हमेशा से वीजा पसंद रहे हैं, मैं हमेशा से वीजा के पक्ष में रहा हूं। इसलिए हमारे पास ये हैं। उन्होंने रूपर्ट मर्डोक-नियंत्रित न्यूज कॉर्प का हिस्सा अखबार से कहा, मेरी संपत्तियों पर कई एच-1बी वीजा हैं। मैं एच-1बी में विश्वास करता रहा हूं। मैंने इसका कई बार इस्तेमाल किया है। ट्रंप ने आव्रजन प्रणाली में सुधार का समर्थन किया है ताकि इसे योग्यता के अनुरूप ढाला जा सके।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129